मिस शिमला

मिस शिमला

दत्त भारती

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७
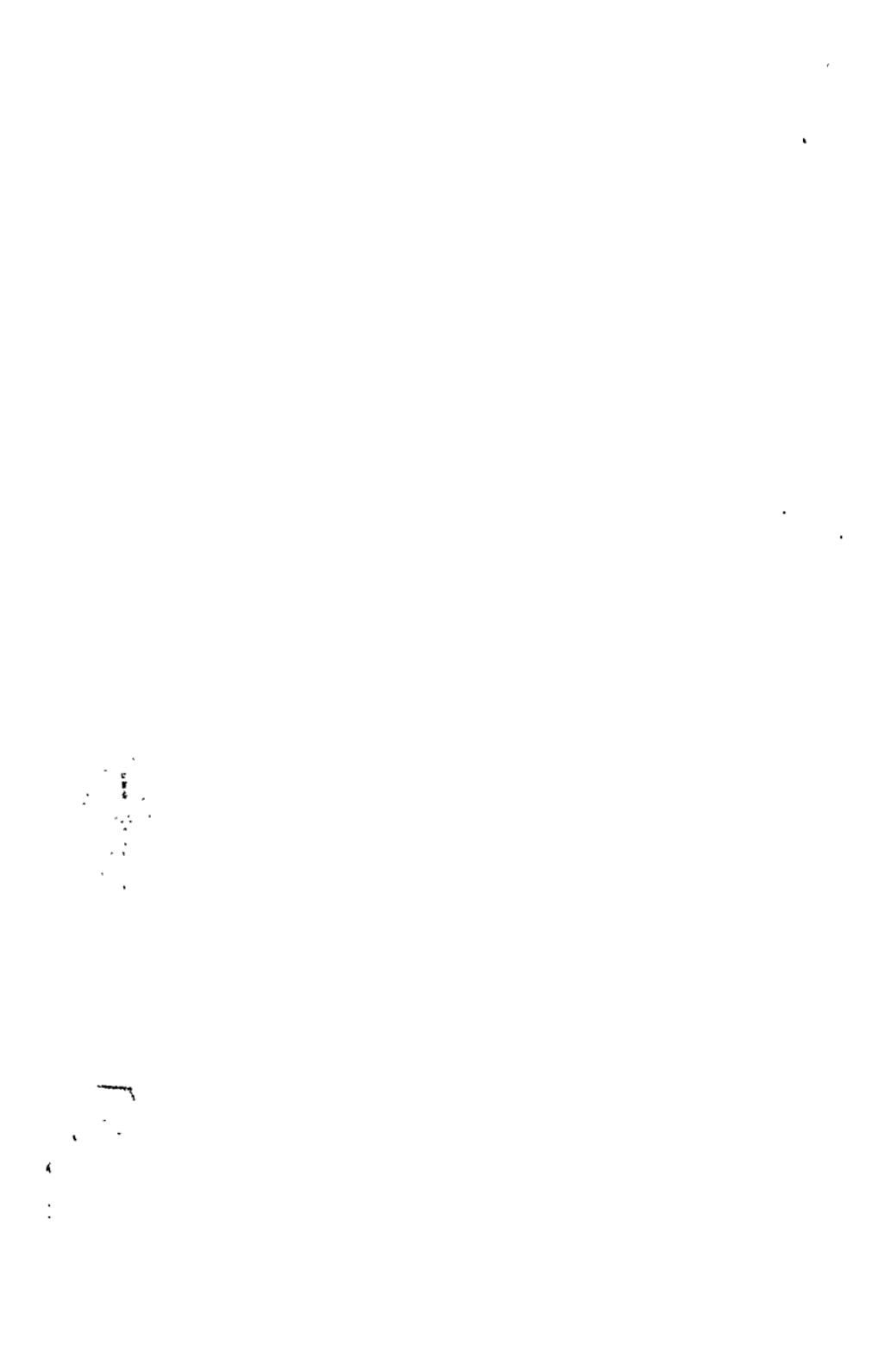
आईडल बुड एयरपोर्ट मे बोईंग जहाज उतरा तो कपल ने अपने
प वाली सीट पर एक बार फिर दृष्टि डाली।

सुंदर अधर और इन पर बहुत ही हल्के प्याजी रंग की लिप-
टिक थी। सिर पर विग थी। और बालो का रंग काला था। जो
के श्वेत रंग को उजागर कर रहा था। अधर पतले थे। लेकिन
ऊंची थी। आंखें सुन्दर थी। और हल्के ब्राऊन रंग की थीं।

कपल उलझ गया था। आँखें, अधर, बालो का रंग, मुंह का
ता, नाक। वह कुछ भी अनुमान न लगा सकता था कि वह महिला
र देश की रहने वाली हो सकती थी। नाक जर्मन थी। अधर
र सुंदर गर्दन आदि से अंत तक इंगलिश थी।

न मालूम उसका मस्तिष्क अकारण क्यो उलझ रहा था। वह
ई भी थी उससे परिचय प्राप्त क्यों नही कर लेता कि वह कौन
देश की रहने वाली है।

उसे एक बहुत पुरानी घटना स्मरण हो आई, एक व्यक्ति ने पास-
र्ट के लिए प्रार्थनापत्र दिया तो पासपोर्ट अफ़सर ने प्रार्थनापत्र
र कर कहा, "मिस्टर, तुमने अपनी नाम" ... [illegible]

। कौन से देश के नागरिक हो ?"

प्रार्थनापत्र देने वाले ने कहा, "सर ! मैं नहीं जानता ।"

"क्या मतलब ?"

"बात यह है कि मेरी मां इंगलिश थी। और जब वह स्पेन में एक बार सैर करने गई वहां उसका प्रेम एक फ्रांसीसी से हो गया। वह दोनों इकट्ठे सैर के लिए जाते और जब वह इटली पहुंचे तो उनका विवाह हो गया। फिर वह यूनान से एक कैनेडियन सागर में अमरीका के लिए चल पड़े तो जब जहाज जमरूद में था तो मेरा जन्म हो गया।

"मिस्टर ठहरो।" पासपोर्ट अफ़सर चिल्लाया।

"तुम्हारा मतलब है कि तुम्हारी मां इंगलिश थी।"

"जी हां।"

"पिता फ्रांसीसी।"

"जी हां।"

"स्पेन में मिले।"

"जी हां।"

"इटली में विवाह हुआ।"

"जी हां।"

"यूनान से जहाज़ पकड़ा।"

"जी हां।"

"जहाज़ कैनेडियन कंपनी का था।"

"जी हां।"

"वह अमरीका जा रहे थे।"

"जी हां।"

तो समुद्र में यात्रा करते हुए तुमने जन्म लिया।

"जी हां।"

"ओह" पासपोर्ट अफ़सर ने गहरा सांस लिया।

"इस सूरत में तुम पासपोर्ट के लिए यू. एन. ओ. में प्रार्थनापत्र दे दो। वह तुम्हारी नागरिकता का फ़ैसला करेंगे।"

इस लतीफ़े के याद आते ही कपल की हंसी निकल गई। साथ बैठी तीस वर्षीय महिला ने उसे घूर कर देखा। वह हैरान थी कि कपल एक पागल मनुष्य की भांति क्यों हंस रहा था।

"आप क्यों हंस रहे हैं?" महिला को पूछना पड़ा।

"मुझे एक लतीफ़ा याद आ गया।"

महिला का बोलने का ढंग इंगलिश था। यद्यपि वह अंग्रेज़ी भाषा में बात कर रही थी। और न ही वह अमरीकन थी। यद्यपि अमरीकन कोई भाषा न थी। बल्कि भाषाओं का सम्मिश्रण था। इंगलिश, फ्रैन्च, जर्मन, स्पैनिश, रशियन, इटालियन भाषाओं का सम्मिश्रण। और इसमें डच और आयरिश भाषायें काफी पुष्ट थीं। और वह प्रान्त अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग करता था।

"ओह", महिला ने गहरा सांस लिया।

"क्या तुम माल्टा के रहने वाले हो।"

"माल्टा" वह तो छोटा सा द्वीप है Meditarian में, कपल ने कहा।

"हां।"

"लेकिन चेहरे के नक्श तो एशियाई हैं।"

"मैं एक बार माल्टा गई थी। इसलिए मैंने ऐसा कहा था।"

"फिर भी मैं इंडियन हूं। रैड इंडियन नहीं। भारत।"

"ओह। हिन्दु।"

"हां।" कपल ने स्वीकार किया। अमरीका के सारे निवासी और कई देशों के लोग भारतीयों को हिन्दु कहते थे।

"ओह। तो मैं अपनी जानकारी की याद प्राप्त नहीं कर सकती।"

"तुम्हारे बारे में मैं बड़ी देर से सोच रहा हूं कि तुम किस देश

की रहने वाली हो।"

"नारवे।"

"नारवे" कपल ने दुहराया। और इसकी दृष्टि उसके पांव पर चली गई। ओह भगवान! इसको अपनी त्रुटि का आभास हुआ। वह अब तक इसके अधर, आंखें, नाक और बालों से ज्ञात करना चाहता था कि वह किस देश की रहने वाली है। लेकिन इसने पांव क्यों न देखे।

ग्रेटा गारबो। हालीवुड की करोड़पति फ़िल्म स्टार वह भी तो स्कैंडेनेवियन की रहने वाली थी और इसके पांव के लिए विशेष रूप से आर्डर पर जूते बनवाए जाते थे। कहते हैं वह बचपन में नंगे पांव घूमा करती थी। और भूख और तंगी के कारण जूते न खरीद सकती थी।

लेकिन इनगरेड बरगमैन—इसके पांव। अब इस महिला ने बताया था कि वह नारवे की रहने वाली है तो उसकी दृष्टि पांव पर गई। सचमुच वह नारवे की रहने वाली थी। और इसके पांव में दस नम्बर के जूते होंगे।

वह एक पुरुष था और उसका कद पांच फीट नौ इंच था। लेकिन इसके विपरीत वह सात नम्बर का शू पहनता था। कोई महिला जब दस नम्बर का जूता पहने तो इसके पांव कितने अदभुत दिखाई पड़ते होंगे।

"तो आप कहां जा रही हैं?"

"स्टाकहालम।"

"और यह फ्लाईट तो वहां नहीं जाती।"

"मैं जानती हूं।"

"फिर?"

"मुझे लन्दन में काम है। वहां तीन दिन रुकना है।"

"ओह" कपल ने गहरा सांस लिया, "फिर ठीक है क्योंकि लन्दन

के बाद यह रोम रुकती है। और नारवे के लिए तो उत्तरी ध्रुव के रास्ते जो फ्लाईट आती है वह ठीक रहेगी।"

"मैं जानती हूं।"

"मैं तुम्हारे लिए विह्स्की का आर्डर दे सकता हूं।" कपल ने जाती हुई एयर होस्टेस को संकेत किया और वह रुक गई। कपल को इन एयर होस्टेसों के छोटे-छोटे कूल्हे बहुत पसन्द थे। उसको अनुमान था कि भारी कूल्हों वाली लड़की को एयर होस्टेस नहीं लेते। यह सारी एयर होस्टेस Flat Hip की होती हैं।

वह जब भी हवाई जहाज से यात्रा करता तो इन एयर होस्टेसों के कूल्हों को बरबस देखता रहता। और यह हरकत उसके जीवन की कमजोरी बन कर रह गई थी। वह हैरान था कि एयर होस्टेस अमरीकन हो या यूरपीयन! हवाशिनन हो या एशियाई। जापानी, चीनी, मलाया की रहने वाली हो। इंडियन या पाकिस्तानी। इनके कूल्हों का साईज एक सा ही था। इक्तीस इंच या बत्तीस।

उसने उत्तर न दिया था कि कपल ने गुजरती हुई एयर होस्टेस को रोक लिया था।

"स्काच" कपल ने महिला से पूछा।

"हां।"

"दो डबल" कपल ने आर्डर दिया। फिर वह महिला से सम्बोधित हुआ "पानी के साथ।"

"हां।"

"पानी के साथ" कपल ने एयर होस्टेस से कहा और पांच डालर का नोट बढ़ा दिया।

एयर होस्टेस चली गई।

डालर—डायम—युनिट।

"अब फिर रुपए—इकन्निया। नहीं-नहीं कपल ने अपने सोच का खंडन कर दिया। अब तो इंडियना में भी रुपए के सौ भाग बना दिए

गये थे। अब तो वहां भी अमरीका की भांति जल्दी से हिसाब लगा लिया जा सकता होगा।

वह जब प्राईमरी का छात्र था तो उसे याद आया कि उसे सबसे अधिक कठिनाई पहाड़े याद करने में होती थी। अब तो उसे इनके नाम भी याद न थे। क्या अजीब-अजीब नाम थे। सवाए का पहाड़ा। ड्योढ़े का पहाड़ा। ढोंचे का, खोंचे का। क्या वाहियात नाम थे। बनियों के लड़के कैसी तेजी और सरलता से इन्हें याद कर लेते थे। और वह पांच, दस, ग्यारह और बीस का पहाड़ा याद कर सकता था।

लेकिन अब इन ढोंचों और खोंचों की आवश्यकता न रही थी। ईकाई, दहाई, सैकड़ा कितना सरल हो गया होगा।

"तुम देश जा रहे हो?" महिला ने प्रश्न किया।

"मेरा नाम कपल है?"

"मैं मिसेज गारबो हूं।"

"ग्रेटा गारबो से क्या सम्बन्ध है?"

"कोई नहीं" कहकर महिला मुस्करा दी।

यह स्कंडेनेवियन महिलाएं सैक्स में युरुपियन चैम्पीयन थीं। यद्यपि सुन्दरता और शरीर में जर्मनी लड़कियां बाजी ले जाती थीं। और पति से विश्वासघात करने में फ्रांसीसी महिला सबसे आगे थीं।

फ्रांस की वह कौन सी महिला थी जिसने कहा था कि फ्रांस में प्रत्येक नारी का एक पति होता है और एक प्रेमी। वह एक ही समय दोनों से निर्वाह करती है।

व्हिस्की आ गई थी।

मिसेज गारबो ने अपना गिलास उठाया। और कपल ने अपना

"शुभ यात्रा के लिए" कमल ने टोस्ट किया।

"शुभ यात्रा के लिए" कहकर मिसेज गारबो ने गिलास अपने पतले होंठों को लगाया। हल्का-सा घूंट लिया और गिलास होंठों से

प्रसन्न कर दिया।

"स्टेट्स में सैर के लिए आई है"'।"

"सैर ही समझ लो।"

"पति कहां है?"

"वह तो देश में है?"

"और यहां।"

"एक सहेली ने आमंत्रित किया था।"

"स्टेट्स पसन्द आई?"

"हां भी। नहीं भी।"

"और अब यदि मैं अधिक पूछताछ करना चाहूं तो सम्भवतया तुम्हें इससे मानसिक कष्ट हो," कपल ने मुस्करा कर कहा।

"तुम ठीक कहते हो।"

"स्टेट्स की कलचर पसन्द आई।

"स्टेट्स की कलचर।" मिसेज गारबो गुर्राई।

"स्टेट्स संसार का एकमात्र देश है जहां कोई कलचर नहीं। जहां की जनसंख्या दर्जनों देशों के लोगों की भाषाओं और संस्कृतियों से बनी है। यह वह देश है। जहां कैथोलिक कैथोलिक नहीं। प्रोटेस्टेंट-प्रोटेस्टेंट नहीं। यह वह देश है जहां बारह वर्ष की आयु की लड़कियां नब्बे प्रतिशत गर्भवती मिलती हैं।"

"सैर सैक्स की यदि कोई देश अर्थी निकाल सकता है तो वह स्टेट्स ही है। वैसे तुमने सैक्स को कैसा पाया?"

"डल।"

"ओह"'कपल गुर्राया। "कभी तुम्हारी मित्रता इंडियन, रैडइंडियन नहीं या पाकिस्तानी से रही है?"

"नहीं"'।"

"फिर तुमने जीवन मे बहुत कुछ खोया है।" कभी इंडिया या पाकिस्तान की सैर करो। कपल के स्वर में शरारत भरी थी।

गये थे। अब तो वहां भी अमरीका की भांति जल्दी से हिसाब लगा लिया जा सकता होगा।

वह जब प्राईमरी का छात्र था तो उसे याद आया कि उसे सबसे अधिक कठिनाई पहाड़े याद करने में होती थी। अब तो उसे इनके नाम भी याद न थे। क्या अजीब-अजीब नाम थे। सवाए का पहाड़ा। डयोढ़े का पहाड़ा। ढोंचे का, खोंचे का। क्या वाहियात नाम थे। बनियों के लड़के कैसी तेजी और सरलता से इन्हें याद कर लेते थे। और वह पांच, दस, ग्यारह और बीस का पहाड़ा याद कर सकता था।

लेकिन अब इन ढोंचों और खोंचों की आवश्यकता न रही थी। ईकाई, दहाई, सैंकड़ा कितना सरल हो गया होगा।

"तुम देश जा रहे हो ?" महिला ने प्रश्न किया।

"मेरा नाम कपल है ?"

"मैं मिसेज गारबो हूं।"

"ग्रेटा गारबो से क्या सम्बन्ध है ?"

"कोई नहीं" कहकर महिला मुस्करा दी।

यह स्कैंडेनेवियन महिलाएं सैक्स में यूरुपियन चैम्पीयन थीं। यद्यपि सुन्दरता और शरीर में जर्मनी लड़कियां बाजी ले जाती थीं। और पति से विश्वासघात करने में फ्रांसीसी महिला सबसे आगे थीं।

फ्रांस की वह कौन सी महिला थी जिसने कहा था कि फ्रांस में प्रत्येक नारी का एक पति होता है और एक प्रेमी। वह एक ही समय दोनों से निर्वाह करती है।

व्हिस्की आ गई थी।

मिसेज गारबो ने अपना गिलास उठाया। और कपल ने

"शुभ यात्रा के लिए" कमल ने टोस्ट किया।

"शुभ यात्रा के लिए" कहकर मिसेज गारबो ने ि

पतले होंठों को लगाया। हल्का-सा घूंट लिया और ि

अलग कर दिया।

"स्टेटस में सैर के लिए आई है···।"

"सैर ही समझ लो।"

"पति कहां है?"

"वह तो देश में है?"

"और यहां।"

"एक सहेली ने आमन्त्रित किया था।"

"स्टेटस पसन्द आई?"

"हां भी। नहीं भी।"

"और अब यदि मैं अधिक पूछताछ करना चाहूं तो सम्भवतया तुम्हें इससे मानसिक कष्ट हो," कपल ने मुस्करा कर कहा।

"तुम ठीक कहते हो।"

"स्टेटस की कलचर पसन्द आई।

"स्टेटस की कलचर।" मिसेज गारबो गुर्राई।

"स्टेटस संसार का एकमात्र देश है जहां कोई कलचर नहीं। जहां की जनसंख्या दर्जनों देशों के लोगों की भाषाओं और संस्कृतियों से बनी है। यह वह! देश है। जहां कैथोलिक कैथोलिक नहीं। प्रोटैस्टेंट-प्रोटैस्टेंट नहीं। यह वह देश है जहां बारह वर्ष की आयु की लड़कियां नब्बे प्रतिशत गर्भवती मिलती हैं।"

"सैर सैक्स की यदि कोई देश अर्थी निकाल सकता है तो वह स्टेटस ही है। वैसे तुमने सैक्स को कैसा पाया?"

"डल।"

"ओह"···कपल गुर्राया। "कभी तुम्हारी मित्रता इंडियन, रैडइंडियन नहीं या पाकिस्तानी से रही है?"

"नहीं···।"

"फिर तुमने जीवन में बहुत कुछ खोया है।" कभी इंडिया या पाकिस्तान की सैर करो। कपल के स्वर में शरारत भरी थी।

"क्या इंगलैंड में इंडियन हैं।

"अरे लाखों की संख्या में" बल्कि इनकी बस्तियां ही अलग हैं।

"फिर मैं किसी की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाऊंगी।"

"और तुम्हें निराशा न होगी।"

"तुम्हारा क्या प्रोग्राम है?"

"मैं सीधा इंडिया जा रहा हूं।"

"दो दिन के लिए लन्दन रुक जाओ।"

"नहीं। मिसेज गारबो ! यदि मैंने लन्दन में सफर तोड़ दिया तो फिर इण्डिया न पहुंच सकूंगा। मैं अपनी कमजोरी जानता हूं मुझे देश छोड़े आठ वर्ष हो गए हैं। मैं केवल एक वर्ष का कोर्स करने स्टेटस गया था। लेकिन आज आठ वर्ष के बाद लौट रहा हूं।"

"क्या पढ़ने आए थे?"

"शिल्प कला।"

"और। अब देश जाकर बड़ी-बड़ी इमारतें बनाओगे। लेकिन इण्डिया में तो हजारों वर्ष पहले भी सर्वोत्तम इमारतें बनती थीं। तुम इंडियन भला अमरीका में क्या सीख सकते हो।"

"स्काई स्करैपर," कपल ने हंसकर कहा।

"हां। स्काई स्करैपर। दस मंजिल पन्द्रह—बीस—पचास—और एक दिन शायद इन्सान दो सौ मंजिला बिल्डिगें बनाएंगे।" मिसेज गारबो ने कहा।

"लेकिन मैं छोटे से छोटा घर बनाना चाहता हूं।"

"घर या मकान मिसेज़ गारबो ने बात काट कर सही की! घर तो पति-पत्नि और बच्चे बनाते हैं।"

"धन्यवाद। मैंने जीवन में तीसरी बार घर को मकान के रूप में प्रयोग किया है। और तीनों बार टोक दिया गया हूं और अब कभी मकान के लिए घर का शब्द प्रयोग न करूंगा," कपल ने कहा।

देश छोड़ कर दूर-दूर के देशों में आते थे।

जब वह भारत से शिक्षा यापन के लिए चला था तो उसके चेहरे की दाढ़ी का कोई रंग न था। लेकिन अब उसके चेहरे पर यह दाढ़ी हल्की कालिमा पूर्ण रंग की झलक पैदा करती थी। इन आठ वर्षों में स्टेटस (अमरीका) की स्वस्थ दुनियां में और अच्छी खुराक ने उसके शरीरको बलिष्ठ बना दिया था। लेकिन वह भद्दा न हो गया था।

उसे स्टेटस की नागरिकता मिल गई थी। और प्रगट में वह अवकाश पर जा रहा था। लेकिन वास्तविकता यह थी कि उसके पास तीस हज़ार से अधिक डालर बैंक में थे। और यदि वह इन्हें ब्लैक में दस हजार रुपए के हिसाब से बेचे तो उसे तीन लाख रुपए से अधिक मिल सकता था।

तीस वर्ष की आयु, अमरीका की शिक्षा—और तीन लाख रुपया नकद—इसके अतिरिक्त और बहुत-सी वस्तुएं अपने साथ लाया था। जिन्हें वह भारत में दुगने और चार गुने दामों पर बेच सकता था।

उदाहरण स्वरूप उसकी एयर कंडीशनड इम्पाला कार। जो उसने दो हज़ार डालर अर्थात् भारतीय मुद्रा हिसाब से पन्द्रह हज़ार में खरीदी थी। भारत में एक लाख में बिक सकती थी—फिर मूवी कैमरा, टैलीविजन—नयागरा का टेपरिकार्डर जो फ़िल्म इंडस्टरी में पच्चीस-तीस हजार में बिक सकता था। और इसी प्रकार की अनेक वस्तुएं जिनका मूल्य एक लाख रुपए के लगभग था।

यदि आज वह भारत में ही होता तो अधिक से अधिक किसी सरकारी दफ्तर में आरकीटैक्ट तीन बल्कि साढ़े तीन सौ रुपए मासिक का ड्राफ्टमैन होता।

अब उसे भारत में जाकर कोठियां और ऊंची-ऊंची बिल्डिगें निर्माण करनी थीं। उसे मकान बनाने थे। इस देश में जहां अजन्ता, एलोरा, मीनाक्षी मन्दिर, ताजमहल, विक्टोरिया मैमोरियल जैसी भव्य इमारतें थीं जो कलाकार की कला का समर्थक थीं।

दो

हीथ में हवाई जहाज रुका। तो दर्जनों यात्री उतर गए और उनके स्थान पर भारतीय चेहरे और साड़ियां धारण किए महिलाएं आ गईं।

"ओह भगवान" कमल ने गहरा सांस लिया। साड़ी वाली इतनी महिलाएं वह आठ वर्ष के उपरान्त देख रहा था। वरना स्टेट्स में तो भारतीय दूतावास के किसी फंक्शन पर इतनी साड़ियां जमा होती थीं।

अब उसे आभास हुआ कि वह वास्तव में भारत जा रहा था मिसेज गारबो टाटा कहकर चली गई थीं।

शेष यात्रा दोनों ने चुप रहकर तय की थी। और अब साड़ियों, सरदारों और जोधपुरी कोटों को देखकर अनुभव हो रहा था कि भारत दूर न था।

"हैलो," एक जवान सरदार ने कहा, "उसके शरीर पर इंगलिश गर्म कपड़े का सूट था और इस पर ओवर कोट—कंधे पर मूवी कैमरा और हाथ में तीन बैग।

तीन बैग से तात्पर्य था कि वह कम-से-कम दस किलो भार का भुगतान न कर रहा था।

'हैलो" कमल ने मुस्करा कर कहा।

"इण्डिया" सरदार ने प्रश्न किया।

"हां।"

सरदार ने बैग जमा दिए थे। "मुझे तुम्हारे साथ की सीट मिली

है।"

"वैल कम" कपल ने उत्तर दिया।

, "अभी हाजिर होता हूं" कहकर वह कैमरा सीट पर रख कर चला गया।

यात्री अपना-अपना हाथ का सामान संभाल रहे थे। और अपनी-अपनी सीट पर बैठने की तैयारी कर रहे थे।

अधिकांश वह लोग थे जो पूर्वी पंजाब के गांवों से मेहनत और जीविकापार्जन के लिए आये थे। और जिनका उद्देश्य केवल धनोपार्जन करना था। इनकी स्त्रियां छींट की सलवार और कमीज़ में लिहाफ़ों के साथ इंगलैंड पहुंची थीं। लेकिन यहां आकर वह साड़ी पहिनना सीख जाती थीं। या विलायती कपड़े के पंजाबी सूट सिलवा लेती थीं। और इस कपड़े में इनका रंगरूप और चाल-ढाल ही बदल जाती थी।

कपल का साथी लौट आया। और अपनी सीट पर बैठते ही बोला, "मेरा नाम हरभजन है।"

"मैं कपल हूं, कपल ने कह कर हाथ बढ़ाया।

"मैं व्हिस्की का आर्डर दे आया हूं। होस्टैस लाती होगी। कहने लगीं जहाज चलने दो फिर सरव करूंगी। मैंने कहा कि जहाज चलने तक तो दम निकल जाएगा।"

"बड़ी फुर्ती से काम लिया है।" कपल ने हंसकर कहा।

"व्हिस्की और औरत के मामले में दिमाग से काम नहीं लेना चाहिए। जिस समय जहां से जैसी मिले उसे स्वीकार कर ले। फिर भारत में तो शराब मिलती है। यह स्काच तो एक स्वप्न बन कर रह जाएगी।"

"तो बोतलें खरीद ली होतीं।"

"चार खरीदी हैं। इसमें से एक कस्टम अफसर को दूंगा तब तीन ले जाने देगा।"

"क्या उससे पहले मैं बात कर रखी हैं ?"

"नहीं। भारत के कस्टम अफसर एक बोतल स्काच व्हिस्की या पार्कर का पैन पाकर बहुत खुश हो जाते हैं।"

"फिर तो सस्ते में" कपल ने हंसकर कहा।

"ला रही है साली", हरभजन ने गर्दन घुमा रखी थी और होस्टेस को देखकर बोला।

कपल इस निःसंकोच ढंग पर तनिक चौंका। वैसे तो कहते हैं वह पंजाबी नहीं जो गाली न दे। लेकिन हरभजन से परिचित हुए अभी कुछ मिनट ही गुजरे थे और वह वातावरण से लापरवाह था।

कपल समझ गया कि अब भारत तक व्हिस्की का दौर, गालियां और बातें बन्द न होंगी। उसने गर्दन घुमाकर देखा। होस्टेस दो गिलासों में व्हिस्की ला रही थी।

"सर।" उसने पास आकर कहा।

"कपल उठाओ," हरभजन ने इस ढंग से कहा जैसे कपल उसका लंगोटिया दोस्त हो।]

कपल ने गिलास उठा लिया। दूसरा हरभजन ने।

"थोड़ी देर में दूसरा पैग दे जाना डार्लिंग," हरभजन ने लापरवाही से कहा।

'मिस्टर सिंह।" होस्टेस गुर्राई,"तुमने मुझे गलत सम्बोधित किया है ?"

"तो डार्लिंग के स्थान पर स्वीटी पाई Sweetie pie कहना चाहिए।" हरभजन ने भारी स्वर में कहा।

कपल समझ गया कि हरभजन अपने देश से बाहर रहा है और इन यूरोपियन और अमरीकनों में काफी घुल-मिलकर रह चुका है और अब इसे शिष्टता की तनिक चिन्ता नहीं थी।

होस्टेस मुस्करा कर चली गई। शायद उसे इसका नाम पसन्द आ गया था।

"मैं सोच रहा था कि साथी अच्छा मिले इन देवियों के साथ सीट न मिल जाए जो सारे रास्ते विलायत की बातें सुनायेंगी। या कोई बूढ़ा खूसट जो सिगार और खांसी का शिकार हो।" हरभजन ने कहा, "जब तुम्हें देखा और अपना समव्यस्क पाया तो मैंने भग-वान का धन्यवाद किया कि सफर बुरा न रहेगा। फिर जब तुम्हारे पास आया और तुम्हारी आंखें देखीं तो समझ गया कि तुम न्यूयार्क से ही शुरु हो चुके हो।"

"हां। तुमसे पहले एक स्वेड महिला बैठी थीं।"

"स्वेड···बाप रे।"

"क्यों?"

"इनसे अधिक सैक्सी स्त्रियां संसार में नहीं।"

"काफी अनुभव है।"

"बहुत" कहकर हरभजन ने हल्का घूंट भरा।

"इतना सा जीवन"—कपल ने सोचा "सचमुच इतना जीवन लस्सी और मक्खन ही पैदा कर सकते हैं।"

"इंडिया भ्रमण के लिए जा रहे हो" कपल ने प्रश्न किया।

"नहीं।"

"फिर?"

'मां का विवाह करने।"

"मां का विवाह करने" कपल ने चौंक कर पूछा।

"मां का।"

"जवाब नहीं।" कपल इस उत्तर से इतना निराश हो गया था कि उसके मस्तिष्क में आया कि वह सीट बदल ले। वरना यह तेरह चौदह घंटे गुजारना कठिन हो जाएगा। उसने बहुत ही गंभीर स्वर में कहा, "क्या यहां विवाह न हो सकता था।"

"नहीं" कहकर हरभजन ने गिलास खाली कर दिया। व्हिस्की की कड़वाहट ने एकबार उसे खांसने पर विवश कर दिया।

कपल अब बोर हो गया था। जो व्यक्ति मां के सबन्ध में इतने अच्छे विचार रख सकता है, भला वह उससे बातचीत कैसे कर सकता था। उसने तो बचपन से मां की पूजा और आदर करना सीखा था। और एक हरभजन था जो मां का विवाह करने जा रहा था। क्या बातचीत का ढंग था। क्या विचारधारा थी। क्या बातों से फूल झड़ते थे। वाह। वाह। मानव हो तो ऐसा ही सभ्य और आज्ञाकारी कि श्रवण कुमार की आत्मा भी लजा जाए।

"इंग्लैंड में क्या काम करते हो।" कपल को आभास हुआ कि हरभजन ने जो पैग उसे पिलाया था उसमें उसकी जिह्वा का स्वाद कैसा हो गया था। न मालूम यह शराब हजम भी होगी या नहीं।

कपल की सूझ अनुसार हरभजन किसी फैक्टरी या मिल में लेबर का काम करता होगा।

"मैं इंग्लैण्ड में नहीं रहता।"

"फिर।"

"कैनेडा में।"

"ओह" कपल ने गहरा सांस लिया।

"कैनेडा में तो भारतीयों की दशा शोचनीय थी। वहां केवल टीचरों, डाक्टरों और नर्सों को नौकरी मिल सकती थी। शेष लोगों को हर शाम नहीं पता होता कि अगले दिन नौकरी रहेगी भी या नहीं। यू भी कैनेडा में भारतीयों को इंग्लैण्ड से भी अधिक घृणा से देखा जाता था, और उससे भी बुरा व्यवहार किया जाता था।"

इतने में होस्टैस नजर आई।

"मिस ! दो वड़ा लाओ," हरभजन ने भारी स्वर में कहा।

होस्टैस ने देखा और मुस्कराकर आगे बढ़ गई।

"तुम बहुत धीरे पी रहे हो।"

"मैं और नहीं लूंगा," कपल ने कहा। वह तो इस पैग को हजम

करने की तरकीब पर ध्यान दे रहा था ।

"क्या ?" हरभजन चिल्लाया "क्या पंजाबी नहीं हो ।"

"पंजाबी हूं ।"

"फिर शराब से क्यों डरते हो ।"

"डरता नहीं हूं । लेकिन क्या करूं शराब को अपने पर छाने नहीं देना चाहता" कपल ने कहा ।

"कपल डियर व्हिस्की तो बिल्कुल हानिकारक नहीं ।"

"अगर सीमा रखकर पी जाए ।"

"वह क्या होता है । जब तक साला भेजा काम करता है । व्हिस्की पीते रहो । जब भेजा काम करना बन्द कर दे तो सो जाओ ।"

"मैंने व्हिस्की की यह व्याख्या प्रथम बार सुनी है ।" कपल ने सरलता से कहा ।

अब कपल को विश्वास हो गया कि हरभजन अशिष्टता की सीमा तक अनपढ़ और उजड्ड न था बल्कि असभ्य भी था । और वह ऐसे लोगों से दूर भागता था । मां का विवाह करने जा रहा हूं, शराब उस समय तक पीयो जब तक भेजा काम करता है ।"

होस्टेस दो पैग ले आई थी ।

"अभी तक आपने गिलास नहीं खाली किया ।"

"मैं और नहीं लूंगा" कपल ने विरोध किया ।

"कैसे नहीं लोगे । खत्म करो इसे ।" हरभजन ने पूरे विश्वास से डांटा । और न मालूम इसके अन्दाज में डांट थी या रौब । कपल ने गिलास खाली कर दिया ।"

हरभजन ने दोनों गिलास पकड़ रखे थे ।

"यह लो" उसने एक गिलास बढ़ा दिया ।

"नहीं•••।"

"नहीं कैसे । अब मैं एक गिलास एक हाथ में और दूसरा गिलास

दूसरे हाथ में कैसे रख कर पी सकता हूं।"

कपल ने गिलास ले लिया "लेकिन मैं और नहीं पिऊंगा।"

"क्या रट लगा रखी है। मैं नहीं पीऊंगा, इण्डिया से बाहर कब से रह रहे हो?"

"आठ वर्ष से।"

"आठ वर्ष" हरभजन चिल्लाया। "और अभी तक हिन्दुस्तानी संकोच का जामा नहीं उतार फेंका।"

कपल बहुत ही बोर हो रहा था।

"तुम कैनेडा में क्या करते हो?"

"कुछ भी नहीं।"

"कुछ भी नहीं। और वहां कुछ भी न करो तो रोटी कहां से मिलती है" कपल ने प्रश्न किया।

"रोटी!" हरभजन ने अट्टहास किया" इस संसार में रोटी ही सब कुछ नहीं।

"ओह।"

"बहुत सी बातें हैं जो रोटी से अधिक महत्व रखती हैं। हरभजन ने पहली बार स्वर में गंभीरता धारण की।

कपल ने तो अब तक यही सोचा था कि हरभजन जीवन में कभी गम्भीर हो नहीं हो सकता। वह केवल मनचला, लापरवाह, संसार और सांसारिक बातों से दूर।

उदाहरण के तौर पर।

"उदाहरण के तौर पर" मां का विवाह। कहकर हरभजन हंस दिया। लेकिन यह हंसी कदाचित् बनावटी थी।

कपल को यू प्रतीत हुआ कि हरभजन के मुख और बातों पर एक आवरण चढा हुआ था। या हरभजन ने उसे चढ़ा रखा था। इसलिए वह सतर्क हो गया।

"यह मां का विवाह क्या होता है?"

"मां का विवाह मां का विवाह होता है।"

"मैं समझा नहीं।"

"सच्च तो यह है कि मैं स्वयं भी नहीं समझता। बस यह वाक्य है जो मेरी जुबान पर चढ़ गया है। और मैं अवसर से विमुख इसे प्रयोग कर देता हूं।"

हरभजन ने तो उत्सुकता बढ़ा दी थी। वह तो एक रहस्यमय व्यक्ति बनता जा रहा था। फिर प्रयोग क्यों करते हो?

"शायद मुझे कोई इसके अर्थ समझा दे।"

"तो करते क्यों हो?"

"हम भारतीय देश से बाहर जो आबाद हैं। शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या जीविकापार्जन कर रहे हैं। हम जानते हैं कि हम क्या हैं। हमारी वास्तविकता क्या है। लेकिन जब हम भारत जाते हैं तो हमारे मिलने वाले, संबन्धी हमारे कपड़ों को हाथ लगाकर देखते हैं और पूछते हैं कि हम क्या लाये हैं ताकि उनके भाग में भी कुछ आ जाए। फिर हम अपनी अमीरी का प्रदर्शन करते हैं।"

"किस प्रकार?"

"क्या तुम नहीं जानते।"

"नहीं। मैं जब से देश से बाहर आया हूं आठ वर्ष में पहली बार वापिस जा रहा हूं।"

"ओह और फिर नहीं जानते होंगे। हम यही बताते हैं कि हम हजारों रुपए मासिक कमाते हैं। एक मजदूर भी हजार रुपया मासिक से कम नहीं कमाता। कोई डेढ़ हजार और कोई चार हजार रुपए मासिक। भारत में जो व्यक्ति एक हजार रुपया कमा-कर एक हजार रुपया खर्च करता है वह दो नौकर रख सकता है। लेकिन हम दो तीन हजार कमाने वाले यह नहीं बताते कि हम टैक्स कितना देते हैं। नौकर रखने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता यहां तक

कि बाथरूम, फ्लश टट्टी हम स्वयं साफ करते हैं। जो भारत में सफाई करने वाले कर्मचारी चार रुपए मासिक में कर देते हैं। हम कितने गिरे हुए काम करते हैं। जो सड़कों पर आईस क्रीम बेचते हैं। रेस्टोरेंटों में जूठे बर्तन धोते हैं। लेकिन हम हजारों रुपए मासिक कमाते हैं।"

"लेकिन हम यही करने तो आते हैं," कमल ने धीरे से कहा।

"हां। कुछ जो गांव से आते हैं वह रुपया कमा कर स्वदेश लौट जाते हैं। यदि गांव में इन्हें भूमि मिल जाए तो खरीद कर खेती शुरू कर देते हैं। जो खेती नहीं कर सकते वह भारत और विदेशों के बीच बैरंग पत्र की भांति घूमते हैं।"

"फिर तुमने स्वदेश क्यों छोड़ा था ?"

"घृणा की ज्वाला" हरभजन ने होंठ काटते हुए कहा।

"किसके विरुद्ध।"

"शासन के विरुद्ध। जहां राजनीतिज्ञों ने सभ्य और ईमानदार मनुष्यों को रहने की आज्ञा नहीं दी।"

"क्या मतलब ?"

"क्या तुमने आरम्भिक शिक्षा भारत में ग्रहण नहीं की ?"

"की है।"

"कौन से स्कूल में।"

"डी० ए० वी०।"

"डी० ए० वी। खालसा, सनातन धर्म। हम लोगों के लिए यही स्कूल रह गए हैं। और वह सुन्दर स्कूल जिनकी इमारतें सुन्दर, खेल के मैदान सुन्दर, स्टाफ उच्चकोटि के वह स्कूल हम मध्यम श्रेणी और गरीब लोगों के लिए नहीं। पहले राजाओं के बेटों के लिए अलग कालेज होते थे। अब इन राजनीतिज्ञों और उनके सम्बन्धियों के बेटों के लिए यह प्राईवेट स्कूल हैं।"

"लेकिन इन स्कूलों ने कौन सा प्रसिद्ध कवि, कलाकार, डाक्टर,

चित्रकार और वैज्ञानिक पैदा किया है।"

"वह अफसर और मंत्री तो पैदा किए हैं जो अथाह श्रेणी के क्राप्ट हैं।" हरभजन ने कहा।

"यदि प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा नहीं मिली तो क्या हुआ। अब तुम विदेश में रह कर अपने बच्चों को इस देश के स्टैन्डर्ड की शिक्षा दे सकते हो।"

"हां। लेकिन मेरी मां चाहती है कि मैं स्वदेश में नौकरी प्राप्त कर लूं। वहां विवाह करूं। और बच्चे पैदा करके नेशनल स्कूलों में पढ़ाऊं।" हरभजन ने कहा।

"तुम्हारी शिक्षा कहां तक है। कपल को संदेह हुआ कि हरभजन कहीं युनिवर्सिटी स्कालर न हो।"

"शिक्षा" कहकर हरभजन ने गिलास खाली कर दिया। यह होस्टैस कहां गायव हो जाती है।" कहकर उसने घूम कर देखा और होस्टैस को इशारे से बुलाया।

"हां। तुम अपनी शिक्षा बता रहे थे।" कपल अपनी उत्सुकता पर काबू न पा सका।

"शिक्षा। भारत में तो झक मारता था। कृषि में बी० एस० सी० में फर्स्ट आया। और गोल्ड मैडल मिला।"

कपल को यूं लगा कि उसके कंठ में कुछ फंस रहा था। वह इस व्यक्ति को उजड्ड और अनपढ़ समझ रहा था।

"यस सर" होस्टैस ने मुस्कराकर कहा और खाली गिलास लेकर चली गई।

"इनके बारे में क्या विचार है?"

"मैं समझा नहीं।"

"यह होस्टैस।"

"क्या मतलब?"

"मैं अब भी हवाई यात्रा करता हूं तो सोचता हूं कि यह गरीब

होस्टेस हवाई जहाज के कमांडर की वासना का पात्र है।"

"ओह" कपल ने गहरा सांस लिया, "मैं ऐसा नहीं समझता।"

"क्या समझते हो?"

"नारी। और मध्यम वर्ग की। उसके पास यदि सौन्दर्य है तो वह ऐसे ही काम कर सकती है। होस्टैस, रिसेप्शन गर्ल या किसी फर्म में सैक्रेटरी और इसके लिए इसकी योग्यता की तनखाह नहीं मिलती बल्कि इसके सौन्दर्य और जवानी को सम्मुख रखकर वेतन दिया जाता है।"

दुनिया की सारी बकवास मध्यम श्रेणी के भाग में आती है" हरभजन ने झल्ला कर कहा।

"मध्यम श्रेणी के लोग अपनी पत्नी को भी बचा कर नहीं रख सकते।"

"एम० एस० सी० के बाद क्या किया?"

"झक मारी।"

"कहां कहां" कपल अब ऐसे शब्द और वाक्यों को विस्मृत नहीं कर सकता था।"

"आस्ट्रेलिया में वूल (ऊन) टैकनौलोजी पर गोल्ड मैडल के साथ डिग्री प्राप्त की। अमरीकन युनिवर्सिटी में प्रथम आया। वहां नौकरी मिली। लेकिन झक मारने कैनेडा चला गया।"

"लेकिन कैनेडा तो ठंडा देश है। वहां भेड़ें या ऊन पर क्या रिसर्च हो सकती है।"

"कहा न झक मार रहा था।"

"क्यों?"

"मुझे आस्ट्रेलिया की नागरिकता मिल चुकी है। मैं अमेरिका का हूं और मुझे वहां ऐसोसिएशन प्रोफेसर की नौकरी मिली हुई थी लेकिन देश को तुम्हारे जैसे उच्चकोटि के शिक्षित युवक की आवश्यकता है।"

"किसने कहा ?" हरभजन तड़प कर बोला।

"क्या गलत है ?"

"गलत" हरभजन गुर्राया। "कपल तुम आठ वर्ष भारत से बाहर रहे हो। तुम नहीं जानते कि देश में ऊंचे दिमाग या उच्च-कोटि के शिक्षित व्यक्ति को कलर्की भी नहीं मिल सकती। जितनी बड़ी-बड़ी नौकरियां हैं। वह राजनीतिज्ञों के सम्बन्धियों के लिए हैं।" हरभजन ने कहा।

"इन डिग्रियों के विपरीत।"

"हां। इन डिग्रियों, गोल्ड मैडलों, पी० एच० डी० और इस तमाम रिसर्च काम के विपरीत मुझे भारत में चार सौ रुपए मासिक की नौकरी नहीं मिल सकती।"

"क्या कह रहे हो ?" कपल को विश्वास न आ रहा था "ऊन के धंधे में तो अभी हम बहुत पीछे हैं।"

हम बहुत-सी बातों में पीछे हैं और रहेंगे।

इसलिए कि तुम्हारे जैसे शिक्षक लोगों में देशभक्ति नहीं रही। कपल को यह बात बुरी लगी थी।

"देशभक्ति," हरभजन हंस दिया 'देशभक्ति केवल कांग्रेसियों के हिस्से आई है या इन कांग्रेसी मंत्रियों के। जिनके बाथरूमों में दस बीस लाख के नोट पड़ेंगे। लाकर और लोहे की आलमारियों में कितने लाख होगा। वह मंत्री भी नहीं जानते केवल भगवान जानता है।"

"क्या यह सत्य है ?"

"शत प्रतिशत। खैर इन कांग्रेसियों ने जहां देश का बहुत कुछ बिगाड़ा है वहां घूंस का स्टैंडर्ड भी बिगाड़ दिया है। कचहरी में अंग्रेज के समय में जो घूंस की रकम अलहमद लेता था आजकल जज लेता है। बताओ गरीब अलहमद क्या ले।"

"इसीलिए तुमने कहा था कि चार बोतलें ह्विस्की की वहीं एक

कस्टम अफसर को देकर शेष तीन ले जा सकोगे।"
"बिल्कुल। तुम अपनी आंखों से देख लेना।"
होस्टेस व्हिस्की का गिलास दे गई थी। हरभजन ने इस बार उसे पौंड का नोट दिया। इससे पहले वह कैनेडियन डालर दे रहा था।
"भारत सरकार के जिगर में जब दर्द की लहर उठती है तो वह एक भाषण जारी कर देती है कि इंजीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक जो विदेशों में हैं और हजारों रुपए कमा रहे हैं स्वदेश लौट आएं और कष्ट सरकार में भूखे मरें।"
"मैं अब तक नहीं समझा कि इतनी ऊंची शिक्षा प्राप्त करने के विपरीत तुम्हें नौकरी क्यों नहीं मिल सकती।"
"कपल तुम भी अजीब इन्सान हो। ऊंची शिक्षा की कद्र यूरोपियन या अमरीकन देशों में है। जापान और आस्ट्रेलिया में है। लेकिन भारत में मुझे इसलिए अच्छी नौकरी नहीं मिल सकती क्योंकि यहां मेरे दो शत्रु हैं।"
"कौन-कौन से दो शत्रु।"
"पहला, सिफारिश जो मेरे पास नहीं।"
"दूसरा।"
वह अनपढ़ और जाहिल अफसर जो बड़ी-बड़ी नौकरियां संभाले हुए हैं। और मुझे इसलिए चार सौ रुपए मासिक की नौकरी नहीं देते ताकि मैं कहीं दो तीन वर्ष में अपनी उच्चकोटि की शिक्षा के आधार पर उनकी नौकरी खतरे में न डाल दूं।"
"ओह भगवान। क्या इतनी बुरी दशा है।"
"अब जाकर देखना। वैसे तुम क्या पढ़कर जा रहे हो।"
"मैं आरकीटैक्ट हूं।"
"और अब ताज महल बनाने जा रहे हो।"
"ताज महल तो एक मकबरा है। मैं घर बनाने जा रहा हूं।"
कपल ने धीरे से कहा।

"किसने कहा ?" हरभजन तड़प कर बोला।

"क्या गलत है ?"

"गलत" हरभजन गुर्राया। "कपल तुम आठ वर्ष भारत से बाहर रहे हो। तुम नहीं जानते कि देश में ऊंचे दिमाग या उच्च-कोटि के शिक्षित व्यक्ति को कलंकी भी नहीं मिल सकती। जितनी बड़ी-बड़ी नौकरियां हैं। वह राजनीतिज्ञों के सम्बन्धियों के लिए हैं।" हरभजन ने कहा।

"इन डिग्रियों के विपरीत।"

"हां। इन डिग्रियों, गोल्ड मैडलों, पी० एच० डी० और इस तमाम रिसर्च काम के विपरीत मुझे भारत में चार सौ रुपए मासिक की नौकरी नहीं मिल सकती।"

"क्या कह रहे हो ?" कपल को विश्वास न आ रहा था "ऊन के धंधे में तो अभी हम बहुत पीछे हैं।"

हम बहुत-सी बातों में पीछे हैं और रहेंगे।

इसलिए कि तुम्हारे जैसे शिक्षक लोगों में देशभक्ति नहीं रही। कपल को यह बात बुरी लगी थी।

"देशभक्ति," हरभजन हंस दिया 'देशभक्ति केवल कांग्रेसियों के हिस्से आई है या इन कांग्रेसी मंत्रियों के। जिनके बाथरूमों में दस बीस लाख के नोट पड़ेंगे। लाकर और लोहे की आलमारियों में कितने लाख होगा। वह मंत्री भी नहीं जानते केवल भगवान जानता है।"

"क्या यह सत्य है ?"

"शत प्रतिशत। खैर इन कांग्रेसियों ने जहां देश का बहुत कुछ बिगाड़ा है वहां घूंस का स्टेंडर्ड भी बिगाड़ दिया है। कचहरी में अंग्रेज के समय में जो घूंस की रकम अलहमद लेता था आजकल जज लेता है। बताओ गरीब अलहमद क्या ले।"

"इसीलिए तुमने कहा था कि चार बोतलें ह्विस्की की वहीं एक

कस्टम अफसर को देकर दोष तीन ले जा सकोगे।"

"बिल्कुल। तुम अपनी आंखों से देख लेना।"

होस्टैस ह्विस्की का गिलास दे गई थी। हरभजन ने इस बार उसे पौंड का नोट दिया। इससे पहले वह कैनेडियन डालर दे रहा था।

"भारत सरकार के जिगर में जब दर्द की लहर उठती है तो वह एक भाषण जारी कर देती है कि इंजीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक जो विदेशों में हैं और हजारों रुपए कमा रहे हैं स्वदेश लौट आएं और भ्रष्ट सरकार में भूखे मरें।"

"मैं अब तक नहीं समझा कि इतनी ऊंची शिक्षा प्राप्त करने के विपरीत तुम्हें नौकरी क्यों नहीं मिल सकती।"

"कपल तुम भी अजीब इन्सान हो। ऊंची शिक्षा की कद्र यूरोपियन या अमरीकन देशों में है। जापान और आस्ट्रेलिया में है। लेकिन भारत में मुझे इसलिए अच्छी नौकरी नहीं मिल सकती क्योंकि वहां मेरे दो शत्रु हैं।"

"कौन-कौन से दो शत्रु।"

"पहला, सिफारिश जो मेरे पास नहीं।"

"दूसरा।"

वह अनपढ़ और जाहिल अफसर जो बड़ी-बड़ी नौकरियां संभाले हुए हैं। और मुझे इसलिए चार सौ रुपए मासिक की नौकरी नहीं देंगे ताकि मैं कहीं दो तीन वर्ष में अपनी उच्चकोटि की शिक्षा के आधार पर उनकी नौकरी खतरे में न डाल दूं।"

"ओह भगवान। क्या इतनी बुरी दशा है।"

"अब जाकर देखना। वैसे तुम क्या पढ़कर जा रहे हो।"

"मैं आरकीटैक्ट हूं।"

"और अब ताज महल बनाने जा रहे हो।"

"ताज महल तो एक मकबरा है। मैं घर बनाने जा रहा हूं।" कपल ने धीरे से कहा।

"भारत में हर पैसे वाला जब मकान बनाता है तो वह आरकीटैक्ट बन जाता है।" कहकर हरभजन हंस दिया।

"तुम्हारा क्रोध व्यक्तित्व से पूर्ण नहीं है।"

"कपल। संसार में हर क्रोध व्यक्तिगत होता है। तुम नहीं जानते कि मेरा बचपन किस गरीबी में कटा है। मैं हर शाम बाजार में सिर की सुईयां, कलीप, और इसी प्रकार की चीजें बेचा करता था और साठ, सत्तर अस्सी रुपए कमाता था। मेरी मां मेरा विवाह करना चाहती है और चाहती है कि मैं स्वदेश में ही बस जाऊं और वह बच्चे पैदा करूं जिनका कोई भविष्य नहीं। जिनके लिए दूध, घी, मक्खन नहीं, ऊंची शिक्षा नहीं और फिर मेरे लिए नौकरी नहीं। अमरीका, आस्ट्रेलिया या इंगलैंड मे मुझे सर्वोतम नौकरी मिल सकती है और मैं डेढ़-दो हजार रुपए सरलता से कमा सकता हूं। लेकिन देश में छः सौ की नौकरी नहीं मिलेगी। वहां के बेईमान, क्रप्ट राजनीतिज्ञ दूसरों को ईमानदारी की शिक्षा देते हैं। वह चाहते हैं कि आज भी स्कूल टीचर भूखे रह कर बच्चों को पढ़ाएं। स्कूल टीचरों को शिक्षा दी जाती है कि आप का धंधा बलिदान मांगता है और राजनीतिज्ञ का धंधा असंगत ढंग से रुपए कमाने मांगता है और ईमानदार और मेहनती वर्ग को भूख और तंगी का भाषण देते हैं। कहते हैं कि भूख और तंगी मानव के विचारों को शुद्ध रखता है। जबकि स्वयं बेईमानी और चोर बाजारी का रुपया जमा करते हैं। और अफसरों की पत्नियों, बेटियों और बहुओं के शरीरों से निकलते हैं। यह वह स्वतंत्रता नहीं जिसके लिए मनचलों ने फांसी के फंदे को गले में डाला था।

"लेकिन मैंने तो सुना है कि देश बहुत प्रगति कर गया है"

"हां। इंडस्ट्री प्रगति कर गई है। अमीर और अमीर बन गए हैं लेकिन मैं इन लोगों की बात कर रहा हूं जो विदेशों से शिक्षा प्राप्त करके और डिग्रियां लेकर स्वदेश जाते हैं और जाकर निराश

हो जाते हैं। इतने निराश के अटामिक इनरजी के एक वैज्ञानिक ने ऊंचे अफसरों के दुष्ट दुर्व्यवहार से तंग आकर आत्म हत्या कर ली।

"और इसका क्या प्रभाव पड़ा।"

"प्रभाव," हरभजन हंसा प्रभाव वही जो पड़ा करता है। पार्लियामेंट मे बहस होगी। एक इकवारी कमीशन नियुक्त होगा। इस कमीशन के मैम्बर हजारों रुपए बनाएंगे और जांच पड़ताल के बीच अपने कुछ सम्बन्धियों के लिए नौकरी प्राप्त करेंगे। और जब इनकी रिपोर्ट पब्लिक के सामने आएगी उस समय तक जनता भूल चुकी होगी कि किसी वैज्ञानिक ने आत्महत्या की थी।

लेकिन हर देश, हर सरकार और विभाग में समझदार लोग समय के साथ चले हैं और उन्होंने लाभ उठाया है कपल ने दलील पेश की।

"हां। इसीलिए मैं स्वदेश में नौकरी नहीं करना चाहता और न ही वहां विवाह करना चाहता हूं।

खैर। यह तो एक व्यक्तिगत मामला या पसन्द का सवाल है।"

और यह पसन्द हर उस जवान की कहानी है जिसने देश से बाहर जाकर अपनी मेहनत और योग्यता से ऊंची शिक्षा प्राप्त की हैं। जिसकी ऊंची शिक्षा के प्रार्थनापत्र को हमारे देश की ईमानदार सरकार ने रद्दी की टोकरी में फेंक दिया था। और इसकी जगह किसी कांग्रेसी मंत्री या एम. पी. के सम्बन्धी को ऊंची शिक्षा के लिए सरकारी खर्च पर भेज दिया था हरभजन ने वास्तविकता बता दी।

"ओह" कपल का दिल बैठ गया। उसने अपने देश की ऐसी तस्वीर मस्तिष्क में न सोची थी। यह तो शुरु से अन्त तक निराशा-जनक थी।

"आठ वर्ष से अमरीका मे रह रहे हो।"

"हां।"

"कुछ डालर कमाए हुए हैं।"

"अधिक नहीं" कपल ने हिचकिचा कर कहा।

"घवराओ नहीं।"

मैं यह नहीं जानना चाहता कि कितने डालर कमाए हैं केवल एक बहुत कीमती परामर्श देना चाहता हूं।"

"कहो।"

"इन डालरों को कैश न कराना। यह सोने और जवाहरात से अधिक कीमती हैं ब्लैक में बड़ी सरलता से बिक सकते हैं। लेकिन जब खरीदने जाओगे तो मुसीबत होगी। देश का प्रत्येक कांग्रेसी मंत्री मिलों का मालिक करोड़पति फारन करेंसी का भूखा है। इन्हें जब देश भक्ति के जोश में यह डालर भेंट कर दो और कल किसी कारणवश तुम वापिस अमेरीका जाना चाहो तो परेशानी न उठानी पड़े।"

"लेकिन यह देश के लिए लाभदायक नहीं।"

"देश ने यदि तुम्हारा लाभ सोचा है तो इसके लिए अवश्य करो। जब तक देश कांग्रेस का है अपने डालर संभाल कर रखो। एक दस या पच्चीस डालर के लिए रिजर्व बैंक को प्रार्थनापत्र दो तो छः मास तक कोई उत्तर ही नहीं आता।" हरभजन ने कहा।

'शायद तुम नहीं जानते कि प्रत्येक कांग्रेसी मंत्री का फारन में एकाऊंट है। और स्वीटजरलैंड में नाम से एकाऊंट नहीं खुलते। नम्बरों से एकाऊंट खुलते हैं। एक बार हमारी सरकार ने इंटेली-जेंस के कुछ उच्चाधिकारियों को स्वीटजरलैंड छानबीन करने भेजा कि फिल्मी लोगों और बड़े पूंजीपतियों का चोर एकाऊंट ढूंढें।"

"तो क्या मिले?"

"मिले," हरभजन खिल खिलाकर हंस पड़ा" जैसे ही स्वीटजर-लैंड की सरकार को पता चला कि भारत के इटैलीजेंन्स के अफसर छान-बीन के सिलसिले में उपस्थित हैं। उन्होंने इन्हें चौबीस घंटे में

देश से निकाल दिया। बल्कि सम्मान पूर्वक निकाल दिया। यहाँ तक कि वह अपने बाल-बच्चों और पत्नि के लिए कुछ सामान भी न ले सका। हमारे देश की सरकार को अभी यह भी पता नहीं कि ऐसी कौन-सी वजह है कि योरुप में मनमुटाव बढ़ता जाता है। प्रत्येक देश विजयी हो सकता है। विनाश किया जा सकता है। लेकिन स्विट्ज़रलैंड को कोई ऐसी बात से बेर भी नहीं सकता," हरभजन ने हँस कर कहा। यहाँ के बैंक और मार्केट में हर देश के नागरिकों का करोड़ों रुपए पड़े हैं, जिसे कोई सरकार जानना चाहे तो जान नहीं सकती।

सफर और हो रहा था। इन बातों में कहाँ तक वास्तविकता थी वह नहीं जानता था। लेकिन हरभजन का मन देशभक्ति से विरक्त था।

काहिरा आया। जहाज रुका। कुछ मुसाफिर उतरे। नए सवार और जहाज फिर रवाना हो गया।

"कुछ डालर कमाए हुए हैं।"

"अधिक नहीं" कपल ने हिचकिचा कर कहा।

"घबराओ। नहीं।"

मैं यह नहीं जानना चाहता कि कितने डालर कमाए हैं केवल एक बहुत कीमती परामर्श देना चाहता हूं।"

"कहो।"

"इन डालरों को कैश न कराना। यह सोने और जवाहरात से अधिक कीमती हैं ब्लैक में बड़ी सरलता से बिक सकते हैं। लेकिन जब खरीदने जाओगे तो मुसीबत होगी। देश का प्रत्येक कांग्रेसी मंत्री मिलों का मालिक करोड़पति फारन करेंसी का भूखा है। इन्हें जब देश भक्ति के जोश में यह डालर भेंट कर दो और कल किसी कारणवश तुम वापिस अमेरीका जाना चाहो तो परेशानी न उठानी पड़े।"

"लेकिन यह देश के लिए लाभदायक नहीं।"

"देश ने यदि तुम्हारा लाभ सोचा है तो इसके लिए अवश्य करो। जब तक देश कांग्रेस का है अपने डालर संभाल कर रखो। एक दस या पच्चीस डालर के लिए रिजर्व बैंक को प्रार्थनापत्र दो तो छः मास तक कोई उत्तर ही नहीं आता।" हरभजन ने कहा।

'शायद तुम नहीं जानते कि प्रत्येक कांग्रेसी मंत्री का फारन में एकाऊंट है। और स्वीटजरलैंड में नाम से एकाऊंट नहीं खुलते। नम्बरों से एकाऊंट खुलते हैं। एक बार हमारी सरकार ने इंटैली-जेंस के कुछ उच्चाधिकारियों को स्वीटज़रलैंड छानबीन करने भेजा कि फिल्मी लोगों और बड़े पूंजीपतियों का चोर एकाऊंट ढूंढें।"

"तो क्या मिले ?"

"मिले," हरभजन खिल खिलाकर हंस पड़ा" जैसे ही स्वीटजर-लैंड की सरकार को पता चला कि भारत के इंटैलीजेंस के अफसर छान-बीन के सिलसिले में उपस्थित हैं। उन्होंने इन्हें चौबीस घंटे में

देश से निकाल दिया। बल्कि सम्मान पूर्वक निकाल दिया। यहां तक कि वह अपने बाल-बच्चों और पत्नि के लिए कुछ खरीद भी न सके। हमारे देश की सरकार को अभी यह भी पता नहीं कि ऐसी कौन-सी वजह है कि योरुप में महायुद्ध लड़ा जाता है। प्रत्येक देश विजयी हो सकता है। विनाश किया जा सकता है। लेकिन स्वीटजरलैंड को कोई टेढ़ी आंख से देख भी नहीं सकता," हरभजन ने हंस कर कहा। वहां के बैंक और लाकरज में हर देश के नागरिकों का करोड़ों रुपए पड़े हैं, जिसे कोई सरकार जानना चाहे तो जान नहीं सकती।

करल बोर हो रहा था। इन बातों में यहां तक वास्तविकता थी वह नहीं जानता था। लेकिन हरभजन का मन देशभक्ति से विरक्त था।

काहिरा आया। जहाज रुका। कुछ मुसाफिर उतरे। नए आए और जहाज फिर रवाना हो गया।

"कुछ डालर कमाए हुए हैं।"

"अधिक नहीं" कपल ने हिचकिचा कर कहा।

"घबराओ नहीं।"

मैं यह नहीं जानना चाहता कि कितने डालर कमाए हैं केवल एक बहुत कीमती परामर्श देना चाहता हूं।"

"कहो।"

"इन डालरों को कैश न कराना। यह सोने और जवाहरात से अधिक कीमती हैं ब्लैक में बड़ी सरलता से बिक सकते हैं। लेकिन जब खरीदने जाओगे तो मुसीबत होगी। देश का प्रत्येक कांग्रेसी मंत्री मिलों का मालिक करोड़पति फारन करेंसी का भूखा है। इन्हें जब देश भक्ति के जोश में यह डालर भेंट कर दो और कल किसी कारणवश तुम वापिस अमेरीका जाना चाहो तो परेशानी न उठानी पड़े।"

"लेकिन यह देश के लिए लाभदायक नहीं।"

"देश ने यदि तुम्हारा लाभ सोचा है तो इसके लिए अवश्य करो। जब तक देश कांग्रेस का है अपने डालर संभाल कर रखो। एक दस या पच्चीस डालर के लिए रिजर्व बैंक को प्रार्थनापत्र दो तो छः मास तक कोई उत्तर ही नहीं आता।" हरभजन ने कहा।

'शायद तुम नहीं जानते कि प्रत्येक कांग्रेसी मंत्री का फारन में एकाऊंट है। और स्वीरजरलेंड में नाम से एकाऊंट नहीं खुलते। नम्बरों से एकाऊंट खुलते हैं। एक बार हमारी सरकार ने इंटैली-जेंस के कुछ उच्चाधिकारियों को स्वीटज़रलेंड छानबीन करने भेजा कि फिल्मी लोगों और वड़े पूंजीपतियों का चोर एकाऊंट ढूंढें।"

"तो क्या मिले ?"

"मिले," हरभजन खिल खिलाकर हंस पड़ा" जैसे ही स्वीटजर-लेंड की सरकार को पता चला कि भारत के इटैलीजेंन्स के अफसर छान-बीन के सिलसिले में उपस्थित हैं। उन्होंने इन्हें चौबीस घंटे में

देश से निकाल दिया। बल्कि सम्मान पूर्वक निकाल दिया। यहां तक कि वह अपने बाल-बच्चों और पत्नि के लिए कुछ खरीद भी न सके। हमारे देश की सरकार को अभी यह भी पता नहीं कि ऐसी कौन-सी वजह है कि योरप में महायुद्ध लड़ा जाता है। प्रत्येक देश विजयी हो सकता है। विनाश किया जा सकता है। लेकिन स्वीटजरलैंड को कोई टेढ़ी आंख से देख भी नहीं सकता," हरभजन ने हंस कर कहा। यहां के बैंक और लाकरज में हर देश के नागरिकों का करोड़ों रुपए पड़े हैं, जिसे कोई सरकार जानना चाहे तो जान नहीं सकती।

कमल बोर हो रहा था।। इन बातों में कहां तक वास्तविकता थी वह नहीं जानता था। लेकिन हरभजन का मन देशभक्ति से विरक्त था।

काहिरा आया। जहाज रुका। कुछ मुसाफिर उतरे। नए आए और जहाज फिर रवाना हो गया।

तीन

"पार्टी का प्रबन्ध लगभग हो गया है," गोपाल ने सोने की पैन्सल से खेलते हुए कहा।

"इस शनिचर की शाम" कपल ने प्रश्न किया।

"हां।"

"लेकिन गोपाल यह पार्टी बहुत मंहगी पड़ेगी।"

"खैर। यह तुम मुझ पर छोड़ दो। तुम एक आरकीटैक्ट हो और मैं एक ठेकेदार। फिर मत भूलो कि यही पार्टी तुम्हारे आने की खुशी में ही दी जा रही है। बल्कि इस पार्टी की आड़ में तुम्हें नगर के सैंकड़ों अमीरों में से पन्द्रह सबसे धनाढ्य लोगों से मिलवाना चाहता हूं। मुझे खुशी केवल एक बात की है कि प्रत्येक ने मेरा आमंत्रण स्वीकार कर लिया है।" गोपाल ने पैन्सल मेज पर रख दी।

"धनाढ्यों से तुम्हारा क्या प्रयोजन है?" कपल ने प्रश्न किया।

"वह लोग जो सुन्दर कोठियां बनवाते रहते हैं। अर्थात जिन्हें कोठियां बनवाने का शौक है।"

"मीनू क्या है?"

"व्हिस्की हमारी अपनी होगी। शेवा रीगल की बीस बोतलों का प्रबन्ध किया है।"

"क्या भाव मिली?"

"दो सौ दस रुपए प्रति बोतल।"

बहुत मंहगी है। मुझे पता होता तो मैं न्यूयार्क से या लन्दन से कुछ बोतलें खरीद लाता।" कितनी खरीद लाते। गोपाल टहल रहा था

था उसने तीन पीस सूट पहिन रखा था। मोहार या हरे रंग का, जिसमें यह बहुत सुन्दर और ऊंची मोमायटी का सदम्य दृष्टिगोचर हो रहा था और वास्कट की जेबों में उसने अपने दोनों हाथों की ऊंगलियां ठूंस रखी थीं।

"दो चार।"

'तो इससे हम एक पार्टी भी नहीं दे सकते। कहकर गोपाल हंस दिया। तुमने केवल व्हिस्की पर ही आपत्ति कर डाली शेष मीनू तो सुना ही नहीं।"

व्हिस्की ही चार हजार दो सौ रुपए की हो गई।"

"हां। और जिस होटल में कमरा बुक किया है। वहां साधारण आदमी नहीं जा सकता। केवल पार्टियों को दिया जाता है। जो सोडा बाजार मे या हम घर पर बीस पैसे का खरीदते हैं वहां एक रुपये पच्चीस पैसे का मिलेगा। फिर दो तीन सौ रुपए सर्विस चार्ज के होंगे।

"और डिनर ?"

"डिनर पचास रुपए प्रति व्यक्ति पर।"

"कितने व्यक्ति आ रहे हैं ?"

"पन्द्रह जोड़े और एक तुम। अर्थात् कुल इकत्तीस।"

"खाने का बिल पचास रुपए प्रति व्यक्ति के हिसाब से पन्द्रह सौ पचास हुआ। सोडा और महिलाएँ केवल व्हिस्की पीती हैं। और सम्भवतः प्रत्येक महिला पीती है।"

"हां। इस पार्टी मे हर महिला पिएगी।"

"व्हिस्की ?"

"मैंने शैम्पेन की दो बोतलों का प्रबन्ध कर रखा है। लेकिन मैं इन सब लोगों को जानता हूं। वह शैम्पेन को भूल कर शेवा रीगल को पीना स्वीकार करेंगे।" गोपाल ने कहा।

"इसका मतलब है इस पार्टी पर दस हजार के लगभग उठ

जाएगा।"

दस नहीं तो आठ जरूर उठ जायेंगे।

"और तुम चाहते हो कि मैं इस पार्टी का बोझ बिल्कुल न उठाऊं या हिस्सा न बटाऊं।" कपल ने आपत्ति की।

"बिल्कुल।"

"लेकिन यह ज्यादती है।"

"कदापि नहीं। यह बिजनिस इनवैस्टमैंट है। यहां चौदह के चौदह रईस नई-नई कोठियां बनाने का शौक रखते हैं। तुम इन लोगों का काम करोगे और इनसे ही कमा सकोगे। अमरीका में आठ वर्ष व्यतीत करने के उपरान्त तुम लाख बल्कि डेढ लाख के छोटे मकान बनाना चाहते हो।" गोपाल ने प्रश्न किया।

"नहीं।"

"यदि बनाओ भी तो तुम्हें क्या मिलेगा। सात या आठ प्रतिशत अर्थात् डेड लाख के मकान पर ग्यारह बारह हजार। फिर इस रकम में से म्युनुसिपल कारपोरेशन के विभिन्न भागों में घूस दोगे। उसके बाद तुम सात आठ हजार भी न बचा सकोगे। फिर चौदह के चौदह सज्जन दस लाख से कम की कोठी नहीं बनवाते।

"यह मैं समझ गया। लेकिन तुम बड़े परिचय के लिए इतना बोझ क्यों उठा रहे हो?"

"यदि मैं कहूं कि तुम मेरे मित्र हो तो बिल्कुल झूठ है।" गोपाल ने हंस कर कहा।

"फिर।"

"अरे। मैं ठहरा ठेकेदार। तुम आरकीटैक्टर। आखिर इन कोठियों के बनाने के लिए जब टैंडर मांगोगे तो मैं सबसे कम रेट भर कर प्राप्त कर लूंगा और विश्वास करो कि इस पार्टी का खर्चा एक ही कोठी से वसूल कर लूगा।" गोपाल ने कहा।

"लेकिन यह बहुत अधिक इनवैस्टमेंट है।"

"तुम अमरीका में आए हो, और मैं इस देश का चोटी का ठेकेदार हूं। तुम इस देश को नहीं जानते। यहां मर्दों से अधिक उन की पत्नियों को खुश करके काम निकाला जाता है। तुम इस पार्टी के खर्च को कह रहे हो और मैं इसे इन्वेस्टमैंट कहता हूं।"

"हूं।"

"हूं नहीं, सुनो।" कहकर गोयल ने कहने से पहले सोने के सिगरेट केस से सिगरेट निकाल कर सुलगाया। यह १९४२, १९४३ की बात है। दूसरे महायुद्ध के समय की। देहली में कुछ सरदार फैमली खानदानी ठेकेदार थे। इन फैमली की संख्या पांच या सात थी। और यह पांच या सात ठेकेदारों ने राष्ट्रपति भवन, नार्थ और साऊथ ब्लाक पालियामेन्ट हाऊस जैसी ईमारतें बनाई थीं। जिसके फलस्वरूप इन्हें लाभ तो हुआ ही इनके अतिरिक्त सरदार बहादुर की उपाधि और आनरेरी मैजिस्ट्रेट की पदवी से भी सुशोभित किया गया। ऐसे ही परिवार के दो लड़के जो सगे भाई थे और सूरत से बहुत ही सुंदर थे दूसरे महायुद्ध के बीच बम्बई गए।

"इस क्यों गए।" कपल ने टोका।

"मैं देखना चाहता था तुम सुन भी रहे हो या नहीं। अब जिस समय ये बम्बई पहुंचे तो वहां इन्हें फौजी हवाई अड्डे को बनाने का तीन लाख का ठेका मिला। यद्यपि वह एकलाश ठेकेदार थे, जिन की पचास हजार जमानत हर समय सरकार के पास जमा होती थी। लेकिन इन तीन लाख का काम करने के लिए उनके पास केवल पच्चीस हजार रुपए नकद थे। अब पच्चीस हजार से काम नहीं चलाया जा सकता था। यद्यपि इनके जीजा एक बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर थे। और इस बैंक का बम्बई ब्रांच के मैनेजर के नाम पत्र भी इनके पास था। लेकिन वह जानते थे बैंक से भी इन्हें दस पन्द्रह हजार रुपए से अधिक उधार नहीं मिल सकता था।

"ठीक बात है।"

"यद्यपि महायुद्ध के बीच लोगों के पास पैसे की कमी न थी। और बैंक में अंधाधुंध पैसे जमा कर रहे थे। और एक बैंक मैनेजर पचास हजार से एक लाख तथा एडवांस कर सकता था। फिर भी यह सब सोच कर और बम्बई जैसे नागरिकों को सम्मुख रखते हुए जहां करोड़पति और अरबपति थे, वहां लखपतियों का हिसाब ही नहीं। इन लोगों में प्रवेश पाने के लिए या इनसे परिचित होने के लिए पच्चीस हजार रुपए कुछ भी न थे। शहर की सबसे बड़ी क्लब सी. सी. आई. की मैम्बरशिप पांच हजार रुपए थी। लेकिन बड़ा भाई जिसे सीनियर कहते थे और छोटा भाई जिसे जूनियर कहते थे बड़े ही कुशाग्र बुद्धि थे। उन्होंने बम्बई के ऊंची सोसायटी मे प्रविष्ट होने का अनोखा ढंग सोचा।" कह कर गोपाल सोचने लगा।

"क्या कुछ याद कर रहे हो।" कपल ने मुस्कराकर कहा।

"नहीं, कहकर गोपाल ने गहरा सांस लिया—"हां तो धनाढ्य लोगों से परिचय प्राप्त करने और उनसे मेल-जोल बढ़ाने के लिए उन्होंने क्या किया। वह एक दिन ताजमहल के ग्रीन रूम में पहुंचे। इन दिनों स्काच का पेग सबसे बढ़िया होटल में तीन साढ़े तीन रुपए का था। जबकि सैकेन्ड क्लास स्काच की बोतल सोलह-सत्रह रुपए में मिल सकती थी। दोनों भाई अपरिचितों की भांति बार रूम में गए। और किसी ने ध्यान न दिया कि वे कौन हैं, क्या हैं और कहां से आए हैं, क्या करते हैं।"

"हूं।"

"उसी दिन शायद वह इन लोगों पर हंसे होंगे जो वहां बैठे भी रहे थे। जिनमें मिलों के मालिक, शिपिंग कंपनी के मालिक या दूसरे शब्दों में किंग थे। बिना ताज के बादशाह। कोई काटन किंग था कोई सिलवर किंग और कोई शेयर किंग। और यह पच्चीस हजार नकद के दो मालिक या भागीदार। फिर भी उन्होंने एक डेढ़ घंटे के

बीच तीन-तीन पैग लिए। जिससे उनके होंठ भी गीले न हुए होंगे। फिर भी छः पैग पच्चीस तीस के थे और पांच सात रुपए की कोई प्लेट 'अब इसी का क्लाईमैक्स आया' कहकर गोपाल उत्सुकता पैदा करने के लिए चुप हो गया।

"हां। वह क्या था ?"

वह क्लाईमैक्स था कि जब वे उठे तो उन्होंने वेटर को सौ रुपए का नोट टिप दिया "तीस रुपए के बिल पर सौ रुपए टिप। यह तो किसी देश में नहीं चली होगी।"

"चली हो या नहीं। रिवाज हो या नहीं। लेकिन इन सरदारों ने यही किया। अगले दिन वह फिर पहुंचे। और पहले दिन की भांति डेढ़-दो घंटे में तीन-तीन पैग लिए। वही तीस पैंतीस रुपए का बिल और टिप—सौ रुपए।

"नुमायश—आदि से अन्त तक नुमायश" कमल ने कहा।

"हर समझदार आदमी यही समझेगा। लेकिन अमीर लोग भी मूर्ख होते हैं। या जब इन्हें आभास होता है कि इनका सौ का नोट सौ में नहीं चलता तो वह ताव खा जाते हैं।" गोपाल ने कहा। "हर अमीर आदमी की यह कमजोरी है। बस एक बार सिद्ध कर दो कि इसका सौ का नोट निन्यानवे में चलता है। बस फिर देखो वह पैसे को आग लगा देगा और बम्बई शहर में इन दिनों लोग हजारों रुपए एक दिन में रेस पर हार देते थे। लाखों रुपए फिल्म में लगाकर फूंक देते थे। लेकिन यह सौ का नोट। विशेषकर सरदारों का, इन करोड़पतियों को बहुत बुरा लगा।

"वह क्यों कर ?

"तीसरे दिन भी उन्होंने सौ का नोट टिप दिया। कुल कितने हुए ?" गोपाल ने प्रश्न किया।

"टिप की रकम।"

"हां।"

"यद्यपि महायुद्ध के बीच लोगों के पास पैसे की कमी न थी। और बैंक में अंधाधुंध पैसे जमा कर रहे थे। और एक बैंक मैनेजर पचास हजार से एक लाख तथा एडवांस कर सकता था। फिर भी यह सब सोच कर और बम्बई जैसे नागरिकों को सम्मुख रखते हुए जहां करोड़पति और अरबपति थे, वहां लखपतियों का हिसाब ही नहीं। इन लोगों में प्रवेश पाने के लिए या इनसे परिचित होने के लिए पच्चीस हजार रुपए कुछ भी न थे। शहर की सबसे बड़ी क्लब सी. सी. आई. की मैम्बरशिप पांच हजार रुपए थी। लेकिन बड़ा भाई जिसे सीनियर कहते थे और छोटा भाई जिसे जूनियर कहते थे बड़े ही कुशाग्र बुद्धि थे। उन्होंने बम्बई के ऊंची सोसायटी मे प्रविष्ट होने का अनोखा ढंग सोचा।" कह कर गोपाल सोचने लगा।

"क्या कुछ याद कर रहे हो।" कपल ने मुस्कराकर कहा।

"नहीं, कहकर गोपाल ने गहरा सांस लिया—"हां तो धनाढ्य लोगों से परिचय प्राप्त करने और उनसे मेल-जोल बढ़ाने के लिए उन्होंने क्या किया। वह एक दिन ताजमहल के ग्रीन रूम में पहुंचे। इन दिनों स्काच का पेग सबसे बढ़िया होटल में तीन साढ़े तीन रुपए का था। जबकि सैकेन्ड क्लास स्काच की बोतल सोलह-सत्रह रुपए में मिल सकती थी। दोनों भाई अपरिचितों की भांति बार रूम में गए। और किसी ने ध्यान न दिया कि वे कौन हैं, क्या हैं और कहां से आए हैं, क्या करते हैं।"

"हूं।"

"उसी दिन शायद वह इन लोगों पर हंसे होंगे जो वहां बैठे भी रहे थे। जिनमें मिलों के मालिक, शिपिंग कंपनी के मालिक या दूसरे शब्दों में किंग थे। बिना ताज के बादशाह। कोई काटन किंग था कोई सिलवर किंग और कोई शेयर किंग। और यह पच्चीस हजार नकद के [illegible] मालिक या भागीदार। फिर भी उन्होंने एक डेढ़ घंटे के

बीच तीन-तीन पैग पिए। जिससे उनके होंठ भी गीले न हुए होंगे। फिर भी छः पैग पच्चीस तीस के थे और पाच सात रुपए की कोई प्लेट 'अब ड्रामे का क्लाईमैक्स आया' कहकर गोपाल उत्सुकता पैदा करने के लिए चुप हो गया।

"हां। वह क्या था ?"

वह क्लाईमैक्स था कि जब वे उठे तो उन्होंने वेटर को सौ रुपए का नोट टिप दिया "तीस रुपए के बिल पर सौ रुपए टिप! यह तो किसी देश में नहीं चली होगी।"

"चली हो या नहीं। रिवाज हो या नहीं। लेकिन इन सरदारों ने यही किया। अगले दिन वह फिर पहुंचे। और पहले दिन की भांति डेढ़-दो घंटे में तीन-तीन पैग पिए। वही तीस पैंतीस रुपए का बिल और टिप—सौ रुपए।

"नुमायश—आदि से अन्त तक नुमायश" कपल ने कहा।

"हर समझदार आदमी यही समझेगा। लेकिन अमीर लोग भी मूर्ख होते हैं। या जब इन्हें आभास होता है कि इनका सौ का नोट सौ में नहीं चलता तो वह ताव खा जाते हैं।" गोपाल ने कहा। "हर अमीर आदमी की यह कमजोरी है। बस एक बार सिद्ध कर दो कि इसका सौ का नोट निन्यानवे में चलता है। बस फिर देखो वह पैसे को आग लगा देगा और बम्बई शहर में इन दिनों लोग हजारों रुपए एक दिन में रेस पर हार देते थे। लाखों रुपए मिनटों में लगाकर फूक देते थे। लेकिन यह सौ का नोट। विशेषकर सरदारों का, इन करोड़पतियों को बहुत बुरा लगा।

"वह क्यों कर ?

"तीसरे दिन भी उन्होंने सौ का नोट टिप दिया। कुल कितने हुए?" गोपाल ने प्रश्न किया।

"टिप की रकम।"

"हां।"

"तीन दिन में तीन सौ।"

और चौथे दिन मालूम है क्या हुआ ?"

"क्या हुआ। कपल ने दिलचस्पी लेकर कहा।" जैसे ही दोनों भाई वार रुम में प्रविष्ट हुए वेटर अपने अपने कस्टमरों को छोड़ कर सरदारों की ओर लपके। जैसे इनकी आंखें दरवाजे पर थीं और वह व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे। अब हर वेटर चिल्ला रहा था। दिस वे सर (इधर श्रीमान जी) दिस वे सर। और वहां जो किंग वैठे थे उनका सौ का नोट निन्नानवे का होकर रहा गया। वेटर या वैटर की जाति को तुम जानते हो। जब दोनों भाई एक मेज के गिर्द वैठ गए और शेष वेटरों ने अपनी अपनी सरविस सम्भाली तो उन ग्राहकों ने केवल एक ही प्रश्न किया यह सरदार कौन हैं ? क्या पंजाब की किसी रियासत के रजवाड़े हैं।

"खूब। यह उत्सुकता तो जाग्रत होना आवश्यक थी।"

"लेकिन किन लोगों में उत्पन्न हुई। इस धनाढ्य वर्ग में जहां परिचय प्राप्त करना वड़ा कठिन था। और इतने लोगों से परिचित होने में न मालूम कितनी देर लगती। अब वेटरों ने पंजाब का भूगोल पढ़ना चाहा। क्योंकि प्रत्येक करोड़पति लखपति ही इनके विषय में जानना चाहता था। इसलिए प्रत्येक वेटर ने अपने तौर पर भूगोल पढ़ा। पंजाब में सिखों की गिनती की रियासतें थीं। सबसे प्रसिद्ध पटियाला थी फिर कपूरथला, नाभा, जीन्द और फरीदकोट अब किसी वेटर को पटियाला नाम याद हो गया तो वह कह देता कि पटियाला रियासत के वंशज हैं। किसी को कपूरथला याद हो गया तो उसने कह दिया कि वह कपूरथला के राजसी परिवार से सम्वन्ध रखते हैं। गर्ज कि यह महीनों तक प्रगट न हो सका कि वह कौन-सी रियासत के वंशज हैं। यदि कोई इन भाइयों से स्पष्ट रूप से पूछता तो वह मुस्करा कर उत्तर देते वात यह है कि सारी रियासतें एक दूसरे से सम्वन्धित हैं। इसलिए आप किसी रियासत का समझ

किया है। इनमें से कोई भी ऐसी पार्टी में आने को तैयार नहीं होता। सबसे पहले वह पूछते हैं कि इन लोगों की लिस्ट दो जो आमंत्रित किए गए हैं। वह जानना चाहते हैं, पार्टी में उनका कोई प्रतिद्वन्द्वी या कारोबारी प्रतिद्वन्द्वी तो नहीं। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं, जिसके साथ बैठकर वह ड्रिंक्स न पी सकते हों। इन लोगों में एक शाहिद मुराद है। मुराद का नाम मोटर मार्केटिंग और स्कूटर इण्डस्ट्री में शिखर की भांति चमकता है। कहो तो यह ? मैं आ रहे हैं। इन्हें भी पार्टियां देने का शौक है। वर्ष में दो पार्टियां अवश्य देते हैं। लेकिन उनकी पार्टी में एक हजार से कम लोग आमं-त्रित नहीं होते। और एक पार्टी पर एक लाख रुपया खर्च हो जाना मामूली बात है।"

"दो लाख वार्षिक। अधिक नहीं। मोटर मार्केटिंग और स्कूटर का बिज़नेस दो तीन करोड़ का प्राफिट होगा।"

"इनकी पार्टियों की एक विशेषता यह भी है।"

"क्या ?"

'यह स्वयं पार्टी में कभी सम्मिलित नहीं होते' "यह तो सीधी बात है। एक हजार आदमी ड्रिंक्स और डिनर पर आमंत्रित हों तो इनमें से आधे होश गवा देते हैं, फजल ने दलील देकर। "बल्कि यह कभी अकेले पुरुष को आमंत्रित नहीं करते बल्कि पति पत्नियों को आमंत्रित करते हैं, ताकि जो पुरुष बहकने के आदी हों, उनकी पत्नियां उन्हें संभाल लें।"

विचार अच्छा है। लेकिन इसके विपरीत पति बहक जाते होंगे" कपल ने हंस कर कहा। "मैंने जिन चौदह को आमंत्रित किया है इनमें से कोई भी लखपति नहीं सब करोड़पति हैं। और अपनी अपनी आदत के किंग हैं। और इन सबको कारें और कोठियां बदलने का शौक है। यह किसी भी कोठी में चार पांच वर्ष से अधिक दिन नहीं रह सकते," गोपाल ने कहा।

"हूं।"

"बस। अब तो यही प्रार्थना करता हूं कि पार्टी सफल हो जाए। तुम सुन्दर हो। जवान हो। अच्छा और बढ़िया लिबास धारण करते हो। फिर बड़े लोगों को जानते हो। यदि तुम्हारा व्यक्तित्व अपना जादू जगा डाले तो मैं नहीं समझता कि उस दिन ही तुम्हें एक भारी ठेका क्यों नहीं मिल सकता।"

"ऐसे ही होगा। मैं कोशिश करूंगा कि तुम्हारी आशा पर पूरा उतरूं" कपल ने विश्वास दिलाया।

"केवल एक बात का ध्यान रखना।"

"कहो।"

"दो चार लाख की बात बिल्कुल न करना।"

तो पच्चीस-तीस लाख कपल ने हंसकर कहा।

"वह भी गलत होगी। वह जानते हैं कि आज के जमाने में पच्चीस तीस लाख एक कोठी पर लगाना बहुत ही बड़ी मूर्खता है। इससे बेहतर तो दस मंजिला या पन्द्रह मंजिला बिल्डिंग बना कर इसके पाइटमेंट बेच दिए जाए।"

"मैं समझ गया। इसका मतलब है दस बारह लाख।"

"बिल्कुल" गोपाल ने खुश होकर कहा, "बिल्कुल ठीक बात कही है।"

"वैसे मुझे तो न बताना पड़ेगा कि मैं किस रियासत के राजसी वंश से हूं," कपल ने हंसकर कहा।

"नहीं। बिल्कुल नहीं। वैसे तुम्हारे नखशिख से तो यही दिखाई पड़ता है कि किसी शासक के वंशज हो। लेकिन आजकल रजवाड़ों का दौर नहीं। मैम्बर पार्लियामेंट या मिनिस्टरों का है।"

"तो फिर कह दूं कि अमुक मंत्री का सम्बन्धी हूं।"

"यह सबसे बड़ी भूल होगी। यह करोड़पति राजनीतिज्ञों को ऊंगली पर नचाते हैं। यह कभी उनके पास नहीं जाते। जब भी

इन्हें काम होता है यह मिनिस्टरों को अपने यहां बुलाएंगे। उनके साथ बैठकर व्हिस्की नहीं पीते, उन्हें पिलाते रहेंगे। बल्कि जब दौर शुरू होगा तो उनके स्थान पर मर्द और लेडी सैक्रेटरी होंगे स्वयं वहां से बहाना बना कर खिसक जाएंगे। जिस प्रकार स्वयं इलैक्शन नहीं लड़ते। लेकिन प्रत्येक राजनैतिक पार्टी को पच्चास हजार एक लाख या इससे भी अधिक चन्दा दे देंगे। और यह ठीक भी है। वह कहते हैं यदि वह इलैक्शन लड़ें तो एक मैम्बर बन सकेगा और अब वह फोन पर भी पार्लियामेंट के मैम्बर पन्द्रह मिनट में जमा कर सकते हैं।"

"गोपाल, इसका अर्थ है कि बिजनेसमैन इन राजनीतिज्ञों को नचाते हैं।"

"बिल्कुल। मैं तो ऐसे यूनियन लीडरों को जानता हूं जो मैम्बर पार्लियामेंट हैं। इनके बच्चे विदेशों में उच्च-शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और जानते हो इस शिक्षा का खर्च कौन दे रहा है।"

"आवश्यक है कि बड़े बिजनेसमैन।"

"ठीक। वह बिजनेसमैन जिनकी मिलों और फैक्टरियों में हड़ताल कराते हैं। मजदूरों की मांग पूरी कराते हैं। और स्वयं अपनी संतान के लिए जब मांगने जाते हैं तो समझ लो कि यह करोड़पति इन्हें कितना हीन समझकर और कितना अपमानित करके रुपया देते होंगे।" गोपाल ने मुस्कराकर कहा।

"खैर। करोड़पति भी तो प्रतिशोध की भावना रखते हैं," कपल ने बात काटी। "फिर धन की कद्र कौन नहीं जानता।"

"कद्र भी और लिमिट भी," गोपाल ने कहा।

"खैर यूं तो मैं इस पार्टी में साए की भांति तुम्हारा साथ दूंगा। लेकिन तुम युवराज से सतर्क रहना। शेष सब इसके सामने बच्चे हैं। युवराज का रुपया कहां लगा है कोई नहीं जानता। कपड़े की मिलें। सिल्क और Rayon की मिलें। मोटरों के टायर। और न मालूम

कहाँ-कहाँ। यदि इसको तुम भा गए तो समझो सबको भा गए। जिसे युवराज पसन्द करे इसका अर्थ है शेष सब अतिथि उसे आँखों पर बिठाएँगे। यदि युवराज ने तुम्हें कोठी बनाने का आर्डर दे दिया। तो समझ लो कि तेरह कोठियाँ और बनेंगी। यह बात अलग है कि यदि युवराज ने बारह लाख की कोठी का आर्डर दिया तो शेष दस लाख का दे देंगे," गोपाल ने समझाया।

मानो यह युवराज से आगे नहीं बढ़ते।

"बिल्कुल। फिर युवराज के विदेश में कई प्राजेक्ट हैं। और यह तेरह सज्जन केवल इसलिए इसके आगे पीछे घूमते हैं कि कुछ पता नहीं अब कहाँ प्राजेक्ट शुरू हो रहा है। कितनी रकम का होगा। कितने शेयर बाजार में बेचे जा रहे हैं। बस यूँ समझ लो कि युव-राज ह्विस्की पार्टी में दो चार पाँच करोड़ की फैक्टरी लगा सकता है।"

"दो चार पाँच करोड़ की फैक्टरी होती है" कपल ने टोका।

"यदि फैक्टरी शब्द पसन्द नहीं तो प्राजेक्ट कह लो" ह्विस्की की बोतल पर युवराज करोड़ों के शेयर बेच सकता है।

"ऐसे लोगों के लिए तो दस बारह हजार की पार्टी कोई महत्त्व नहीं रखती," कपल को विश्वास आ गया था।

'माई डियर। मैं तो यह कह रहा हूँ कि मैं तो स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ या यह तुम्हारा सौभाग्य है कि उसने [illegible] स्वीकार कर लिया।"

"और शेष।"

"शेष तो मरने आए बचे जाते। केवल यह बताने की [illegible] थी कि युवराज आ रहा है। [illegible] पाने [illegible] नहीं बल्कि [illegible] [illegible] करने [illegible] दूसरे हैं और अवसर की ताक में रहते हैं कि [illegible] किए जाएँ। मैं चाहता तो दो एक से [illegible]

था। गोपाल ने बताया, "वह लोग युवराज के निकट आना चाहते हैं।"

"फिर मैं इतना भाग्यशाली क्यों हूं। मैं तो लाख दो लाख का भी मालिक नहीं" कपल ने कहा। इसे हवाई जहाज में हरभजन की बात बहुत पसन्द आई थी कि अपने डालरों की चर्चा किसी से न करना। इसलिए अब वह हर किसी से यही कहता था कि उसके पास केवल बीस-पच्चीस हजार रुपया है।

"इसके दो कारण हैं।"

"कौन-कौन से।"

"तुम एक बिजनेसमैन नहीं हो। इसलिए युवराज की पार्टी में घुटन न अनुभव होगी। और न ही वह इन्कार कर सकेगा। तुम एक आरकीटैक्ट हो जिसकी प्रत्येक करोड़पति को आवश्यकता है।

"लेकिन इस देश में हजारों आरकीटैक्ट पड़े होंगे और इनसे सो, दो सौ या पांच सौ अमरीका में पढ़ कर लौटे होंगे।"

"यह ठीक है। तुमने दूसरी बात नहीं सुनी।"

"कहो।"

"भाग्य। संसार और इस जीवन में आधे काम भाग्य से सम्पूर्ण होते हैं।"

"ओह।" कपल ने गहरा सांस लिया, "खैर मैं याद रखूंगा जो कुछ तुम मेरे लिए कर रहे हो।"

"अब यह समय ही बताएगा कि मैं तुम्हारे लिए कुछ कर रहा हूं या तुम्हारे कारण मुझे कुछ प्राप्त होगा। सच्ची बात तो यह है कि मैं आज तक साहस ही न कर सका था कि युवराज को व्हिस्की और डिनर का आमंत्रण दूं। मैं तो स्वयं आश्चर्यचकित हूं कि यह साहस कैसे पैदा हुआ। और फिर हैरान हूं कि आमंत्रण स्वीकृत कैसे हो गया।"

"गोपाल तुम मेरे मित्र हो। मैं तुम्हें नीचा नहीं होने दूंगा।"

कमल ने भावुक होकर कहा और गोपाल के कंधे पर हाथ धर दिया।

□

कमल को स्वदेश में आए तीन मास से अधिक हो गए थे। जिस दिन उसका जहाज उतरा, उसे लेने हवाई अड्डे पर केवल गोपाल आया था। गोपाल के अतिरिक्त उसने किसी को सूचित न किया था।

गोपाल अपनी जान-पहचान का लाभ उठा कर कस्टम के भीतर आ गया था।

"हैलो ओल्ड ब्वाय" गोपाल ने कमल का कंधा थपथपाते हुए कहा।

कमल ने मुड़कर देखा "ओह तुम" कहकर वह उससे लिपट गया।

जब वह अलग हुए तो गोपाल ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं तुम्हें अच्छी प्रकार देखना चाहता हूं सिर से पैर तक," कहकर वह उसका निरीक्षण करने लगा।

"क्या मैं बदल गया हूं" कमल ने उसे निरीक्षण करते देखकर प्रश्न किया।

"शरीर थोड़ा भारी हो गया है।"

"थोड़ा। मैंने इन वर्षों में दस किलो वजन बढ़ाया है अच्छा भला मोटा हो गया हूं।"

"मोटे तो नहीं हो गए हो। यद्यपि शरीर पर उपयुक्त मांस आने से हृष्ट-पुष्ट दिखाई देते हो।"

"और।"

"और। तुम्हारा चेहरा अब एक पुरुष का चेहरा बन गया है। नखशिख पक गए हैं। बचपन, लड़कपन और जवानी ने साथ छोड़ दिया है। चेहरे के नखशिख ने वह सूरत धारण कर ली है जो

था। गोपाल ने बताया, "वह लोग युवराज के निकट आना चाहते हैं।"

"फिर मैं इतना भाग्यशाली क्यों हूं। मैं तो लाख दो लाख का भी मालिक नहीं" कपल ने कहा। इसे हवाई जहाज में हरभजन की बात बहुत पसन्द आई थी कि अपने डालरों की चर्चा किसी से न करना। इसलिए अब वह हर किसी से यही कहता था कि उसके पास केवल बीस-पच्चीस हजार रुपया है।

"इसके दो कारण हैं।"

"कौन-कौन से।"

"तुम एक बिजनेसमैन नहीं हो। इसलिए युवराज की पार्टी में घुटन न अनुभव होगी। और न ही वह इन्कार कर सकेगा। तुम एक आरकीटैक्ट हो जिसकी प्रत्येक करोड़पति को आवश्यकता है।

"लेकिन इस देश में हजारों आरकीटैक्ट पड़े होंगे और इनसे सौ, दो सौ या पांच सौ अमरीका में पढ़ कर लौटे होंगे।"

"यह ठीक है। तुमने दूसरी बात नहीं सुनी।"

"कहो।"

"भाग्य। संसार और इस जीवन में आधे काम भाग्य से सम्पूर्ण होते हैं।"

"ओह।" कपल ने गहरा सांस लिया, "खैर मैं याद रखूंगा जो कुछ तुम मेरे लिए कर रहे हो।"

"अब यह समय ही बताएगा कि मैं तुम्हारे लिए कुछ कर रहा हूं या तुम्हारे कारण मुझे कुछ प्राप्त होगा। सच्ची बात तो यह है कि मै आज तक साहस ही न कर सका था कि युवराज को व्हिस्की और डिनर का आमंत्रण दूं। मैं तो स्वयं आश्चर्यचकित हूं कि यह साहस कैसे पैदा हुआ। और फिर हैरान हूं कि आमंत्रण स्वीकृत कैसे हो गया।"

"गोपाल तुम मेरे मित्र हो। मैं तुम्हें नीचा नहीं होने दूंगा।"

कपल ने भावुक होकर कहा और गोपाल के कंधे पर हाथ धर दिया।

□

कपल को स्वदेश में आए तीन मास से अधिक हो गए थे। जिस दिन उसका जहाज उतरा, उसे लेने हवाई अड्डे पर केवल गोपाल आया था। गोपाल के अतिरिक्त उसने किसी को सूचित न किया था।

गोपाल अपनी जान-पहचान का लाभ उठा कर कस्टम के भीतर आ गया था।

"हैलो ओल्ड ब्वाय" गोपाल ने कपल का कंधा थपथपाते हुए कहा।

कपल ने मुड़कर देखा "ओह तुम" कहकर वह उससे लिपट गया।

जब वह अलग हुए तो गोपाल ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं तुम्हें अच्छी प्रकार देखना चाहता हूं सिर से पैर तक," कहकर वह उसका निरीक्षण करने लगा।

"क्या मैं बदल गया हूं" कपल ने उसे निरीक्षण करते देखकर प्रश्न किया।

"शरीर थोड़ा भारी हो गया है।"

"थोड़ा। मैंने इन वर्षों में दस किलो वजन बढ़ाया है अच्छा भला मोटा हो गया हूं।"

"मोटे तो नहीं हो गए हो। यद्यपि शरीर पर उपयुक्त मांस आने से हृष्ट-पुष्ट दिखाई देते हो।"

"और।"

"और। तुम्हारा चेहरा अब एक पुरुष का चेहरा बन गया है। नखशिख पक गए हैं। बचपन, लड़कपन और जवानी ने साथ छोड़ दिया है। चेहरे के नखशिख ने वह सूरत धारण कर ली है जो

अब आयु पर्यन्त रहेगी। केवल बुढ़ापे में कुछ झुर्रियां उभरेंगीं या चेहरा थोड़ा दुबला हो जाएगा। वरना यह नक्श अब स्थाई हैं।" गोपाल ने मुस्कराते हुए कहा। उसके कहने के अन्दाज में एक दाद भी छुपी हुई थी।

"तुम भी बदल गए हो मेरा तात्पर्य है चेहरे के नक्श से।"

"हां।"

"साथ कौन है?" कपल ने प्रश्न किया।

"कोई नहीं। मैं तुम्हारा दिखावे के तौर से स्वागत नहीं करना चाहता था। वह स्वागत जो नये दौलतिए करते हैं।"

"वह क्या होता है?"

"फोटोग्राफर। फूलों के हार। कुछ डिस्टैम्पर किए बेहूदा किस्म की स्त्रियां जो एक बच्चे को जन्म देने के बाद जैली की भांति पिल-पिली हो जाती हैं," गोपाल ने हंसकर कहा।

"ओह।"

"फिर भी निराश होने की बात नहीं। मैं तुम्हारा स्वागत एक शानदार पार्टी से बल्कि तीन पार्टियों से करूंगा। पहली पार्टी मैं नगर के धनाढ्य लोगों में से कुछ होंगे। जिन्हें तुम चोटी के अमीर कह सकते हो। दूसरी पार्टी मित्रों की होगी। वह जरा निःसंकोच होगी। और इसी प्रकार तीसरी पार्टी कारोबारी होगी।"

"इतना सम्मान। आखिर मैं क्या करके स्वदेश लौटा हूं केवल नक्शा निगरानी करके।"

"आजकल इसकी बहुत मांग है। क्योंकि अब नक्शा बनाने वाले को पलानर और आरकीटैक्ट कहते हैं। अब लोग आरकीटैक्ट INTERIOR DECORATOR भीतरी सजावट का विशेषज्ञ और इस प्रकार के धंधे जो इस देश के लिए बिल्कुल नए हैं, की बहुत कद्र करते हैं।

"और मैं शायद तुम्हारी आशा पर पूरा न उतर सकूंगा।"

"खैर। यह बात घर चल कर होगी। वैसे तुमने बुरा तो नहीं माना कि तुम्हारा इस भाँति और शोर के बिना स्वागत किया जा रहा है।"

"ओ नहीं।" कहकर कपल ने गोपाल की कंधा दबाया। "मुझे शोर और इस दिखावे से घृणा है। फिर मैं कोई राजनैतिक, हीरो। उपन्यासकार, राजदूत या मिनिस्टर नहीं हूं।"

"अच्छा बताओ। कस्टम के लिए क्या आदेश है।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यही प्यारे कि ऐसी कौन-सी चीजें लाए हो जिन पर कस्टम ड्यूटी देना है। मैं सब प्रबन्ध करके आया हूं कोई समान नहीं खुलेगा। कोई यह नहीं पूछेगा कि क्या लाए हो।"

"गोपाल। मैं कुछ नहीं लाया हूं। यहां तक कि तुम्हारे या भाभी या बच्चों के लिए उपहार भी नहीं लाया हूं। मैं केवल वही चीजें लाया हूं जो वहां प्रयोग में लाता था।

'हैलो, कपल एक आवाज आई। कपल ने घूमकर देखा तो हरभजन खड़ा था। "मिस्टर हरभजन क्या कस्टम से निवृत हो गए हो?"

"हाँ।"

"गुड।"

"अच्छा तो फिर मिलेंगे।"

"बेहतर।" कपल ने कहा। पहले उसने सोचा कि वह हरभजन का परिचय गोपाल से करा दे। और गोपाल के घर का पता भी दे दे। जहां वह रहेगा। फिर उसने इरादा बदल दिया।

"हरभजन चला गया।"

"कौन था?"

"यात्रा का साथी। लन्दन से सवार हुआ था।"

"और इस छोटे से सफर में तुम इतने घुल गए।" गोपाल

ने पूछा ।

"नहीं । सारे रास्ते में वह ही बोलता रहा । व्हिस्की और बातें केवल दो काम करता रहा । और मैं जब तक जागता रहा चुप रह कर सुनता रहा ।"

"तो फिर अपना सामान चैक कराओ ।" गोपाल ने कहा ।

"सामान चैक हो गया । कपल ने जो कहा था वह ठीक न था । वह खाली हाथ न लौटा था । वह गोपाल, भाभी बच्चों के लिए उपहार लाया था ।"

एक दिन कपल ने कहा, "मैं सोच रहा था कि अपने ठिकाने का प्रबन्ध कर लूं ।"

"क्या मतलब ?" गोपाल ने चौंक कर पूछा ।

"मतलब यही कि आखिर मैं यहां कब तक रहूंगा ।"

"कब तक ।" गोपाल गुर्राया । "अभी तुम्हें आए दिन ही कितने हुए है तथा यहां तुम्हें कोई कष्ट है । तुम्हारे आराम में असुविधा है या खाना ठीक नहीं मिलता ।"

"नहीं गोपाल ऐसी कोई बात नहीं ।"

"फिर ?"

"खैर । ऐसी अहमकों जैसी बात न सोचो । मैंने तुम्हें उस दिन समझाया था कि मैं तुम्हारे सम्मान में कुछ पार्टियां देना चाहता हूं । और इनमें से पहली पार्टी बहुत महत्वपूर्ण हो गई है । और इसकी महत्ता को दुगुना करने के लिए मुझे अतिथियों से बताना पड़ेगा कि तुम मेरे यहां ठहरे हो, तुम मेरे बहुत निकट हो । और तुम जानते हो इस देश में इन बातों को बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है ।"

☐

इस दलील के उपरान्त कपल ने इस विषय को फिर न छेड़ा । और अब तो गोपाल ने पहली पार्टी का प्रबन्ध कर डाला था ।

चार

कपल को गोपाल ने अपने साथ दरवाजे पर रखा ताकि वह दोनों मिलकर अतिथियों का स्वागत करें। लेकिन गोपाल ने कपल का परिचय नहीं कराया।

एक-एक करके मेहमान आना शुरू हो गए और अपनी-अपनी जगह पर बैठने लगे।

गोपाल ने ठीक कहा था। अब तक जो लोग आए थे। उनकी पत्नियों ने जो गहने और जवाहरात पहन रखे थे। इनसे यही प्रकट था कि यह सबसे ऊँचे वर्ग से सम्पर्क रखते हैं।

"मैंने एक बात का ध्यान रखा है," गोपाल ने कपल के कान में कहा।

"हूं।"

"इस पार्टी में नये दौलतिए या कांग्रेस प्रोडक्ट कोई नहीं। यह सब पुरखों के अमीर हैं। कारोबार इनका धंधा नहीं इनका ईष्ट है। यह सबसे सफल व्योपारी और कारोबारी गुणों से सम्पन्न हैं।"

"और खास अतिथि कब आएगा?"

"युवराज," गोपाल ने घड़ी देखी। वह समय का बहुत धनी है। किसी कम्पनी की वार्षिक मीटिंग चली होती है तो नियुक्त समय पर उपस्थित होगा। कोई डायरेक्टर लेट आ सकता है।

लेकिन वह चेयरमैन या मैनेजिंग डाईरेक्टर की हैसियत से कभी लेट नहीं होता। लो वह आ गए।"

"वह प्रौढ़ सज्जन," कपल ने धीरे से कहा।

"हां।"

कपल ने देखा साठ वर्ष से अधिक आयु के सज्जन जिनके सिर के बाल वर्फ की भांति सफेद थे। भवें भी सफेद थीं। इवीनिंग ड्रैस में एक बहुत ही सुन्दर महिला के हाथ में हाथ डालते चले आ रहे थे। महिला मुश्किल से सत्ताईस अठाईस वर्ष की होगी और बहुत सुन्दर थी। कानों और गले में हीरे का सैट था। एक कलाई में घड़ी और दूसरी खाली।

इतना कम जेवर केवल खानदानी रईस ही पहनते हैं। वह जानते हैं कि किस पार्टी में कौन से गहने और जेवर पहनते चाहिएं।

जब वह पास आए तो गोपाल ने शरीर को थोड़ा सा झुकाकर उनका स्वागत किया।

"गोपाल डियर," युवराज ने हाथ बढ़ाया।

गोपाल ने उनका हाथ अपने दोनों हाथों में लिया। यह सम्मान का प्रदर्शन था।

कपल इस महिला का निरीक्षण ले रहा था और गोपाल ने उसका ध्यान अपनी ओर किया।

"कपल, युवराज जी से मिलो।"

कपल ने हाथ जोड़ दिए।

"यह कपल है जिसके सम्मान में यह पार्टी दी जा रही है।" गोपाल ने कपल का परिचय कराया।

"खूब। गोपाल मैं तो तुम्हारे मित्र को फिल्मी अभिनेता समझता था। तो यह है वह महान आरकीटैक्ट," युवराज ने हाथ मिलाने की जगह स्नेह भरे ढंग से हाथ इसके कंधे पर रख दिया।

गोपाल इस निःसंकोचता से खुश हो गया वह समझ गया कि

युवराज को कपल पसन्द आ गया था।

"कपल" युवराज जी को भीतर ले चलो।

कपल और युवराज चलने लगे। लेकिन युवराज ने इसके कंधे मे हाथ न उठाया।

"कितने वर्ष अमरीका में रहे।"

"जी आठ।"

"हां। तो अब यहाँ काम शुरु करने का इरादा है।"

"आपके आशीर्वाद से।"

युवराज इस उत्तर से खुश हो गया।

इनसे दो कदम पीछे वह महिला थी जो युवराज के साथ आई थी और गोपाल चल रहे थे।

"तुम्हारा मित्र तो सचमुच फिल्मी अभिनेता दिखाई पड़ता है। मकान बनाने में क्या कमाएगा। उसे कहो फिल्म इंडस्ट्री में कोशिश करे।"

"लेडी युवराज। आप बिल्कुल उचित कह रही हैं। लेकिन मैं सोच रहा था कि कपल की आयु तीस से अधिक है। अब इसे इंड-स्ट्री में चांस कौन देगा। जिन्हें हीरो बनना होता है वह बीस बाईस वर्ष की आयु मे चले जाते हैं।"

"खैर, मैंने तो यूं ही कहा था।"

वह चारों अतिथियों के निकट पहुंच गए थे। सारे अतिथि युवराज के सम्मान में खड़े हो गए थे। युवराज इन सबसे परिचित था बल्कि उसने गोपाल से अतिथियों की लिस्ट प्राप्त कर ली थी। यह जानने के लिए कि पार्टी में कौन-कौन आ रहा है, और कोई ऐसा तो नहीं जिसे वह पसन्द न करता हो।

इससे हाथ मिला। उसको थपकी दे। किसी की पत्नि से एक दो बातें की, गर्ज कि एक बार उसने प्रत्येक अतिथि से बात अवश्य की।

और इसके उपरान्त पार्टी आरम्भ हो गई।

स्टुअर्ड व्हिस्की, जिन, शैरी, वाईन के गिलास लाने लगे। पुरुष व्हिस्की पी रहे थे। महिलाओं में से दो तीन व्हिस्की पी रही थीं। कुछ जिन, कुछ वाईन और कुछ शैरी। दो तीन ऐसी भी थीं जो शायद सेब का रस या टानिक वाटर पी रही थीं।

कोने में संगीत का प्रोग्राम था। आरकैस्ट्रा आ गया। दो व्यक्ति बजा रहे थे और बहुत आधे सुरों में थे। जैसे वह इस कमरे में न थे। बल्कि दूसरे कमरे में बैठे थे।

पार्टी पर रंग छाने लगा था। क्योंकि हर कोई दो पैग पी चुका था। गोपाल लेडी युवराज के पास था। मिसेज गोपाल भी इन के साथ थीं। लेकिन कपल समझ गया कि गोपाल अपना कर्तव्य पालन कर रहा था। लेडी युवराज की आव भगत में कोई कसर न उठा रखना चाहता था।

युवराज किसी महिला से बात कर रहा था या महिला युवराज से बात कर रही थी।

"युवराज जी। आप नई कंपनी कब आरम्भ कर रहे हैं। इस महिला ने प्रश्न किया। जिसकी आंखें गुलाबी हो चुकी थीं।

"किसके बारे में," युवराज ने बड़े तन्मय होकर पूछा जैसे वह वास्तव में इस महिला की बातों में दिलचस्पी ले रहा था।

"कोई कम्पनी शुरू कर डालिए।"

"जो पहले हैं। इन्हें ही संभाल नहीं पा रहा। अब तो सोच रहा हूं कि रिटायर हो जाऊं। और तमाम कारोबार लड़कों के हवाले कर दूं।" युवराज ने कहा।

"नहीं। नहीं। यह कहर न कीजिएगा। आप रिटायर होने की बात सोच ही नहीं सकते। आपका नाम तो बिजनेस की सफलता का प्रतीक है।"

"इस प्रशंसा का धन्यवाद।"

कमल एक अपरिचित की भांति इस महिला को देख रहा था जिस पर दो पैग ने जादू कर डाला था। चालीस वर्ष के लगभग आयु—लेकिन वह गिरती हुई स्थिति नए फैशन के सहारे खड़े रहने की चेष्टा करने में और अधिक गिर रही थी। फैशन स्थिति की गम्भीर विचारों को खा रहा था।

अपना क्यों कहते हैं आप। खैर, आपको एक नई फर्म शुरू कर देनी चाहिए।"

"मिसेज चावला, मैं समझा नहीं कि मुझे नई फर्म क्यों शुरू कर देनी चाहिए।"

"मैं कुछ रुपया इन्वेस्ट करना चाहती हूं।" मिसेज चावला पर व्हिस्की का खुमारी थी।

तो आप क्या डाइरेक्टर बनना चाहती हैं।

"युवराज इस पर बोला," मैं किसी भी फर्म में आपको डाइ-रेक्टरशिप दे सकता हूं।

पीछे से गोपाल ने कमल के कंधे को थपथपाया।

कमल ने घूम कर देखा।

"ओल्ड ब्वाय जारी रखो," गोपाल ने धीमे से कहा

"क्या ?"

"तुमने बादशाह को खूब संभाल रखा है। गोपाल ने आंख मारते हुए कहा, बादशाह से तात्पर्य युवराज था। मेरा विचार ही नहीं बल्कि विश्वास है कि आज की पार्टी सफल रहेगी। और जिस उद्देश्य के लिए मैंने दी है वह उद्देश्य पूर्ण होकर रहेगा।'

"हूं," कमल ने विरोध किया। तुम इस दस पाउंड के केक में बहक रहे हो। कमल का संकेत लेडी युवराज की ओर था।

"इसे मैं सम्हाल रहा हूं। तुम इधर ध्यान रखो।" गोपाल ने युवराज की ओर संकेत किया। "यो यहां से निकलेगा।"

"ओह।"

"गुड लक।" कहकर गोपाल लेडी युवराज की ओर बढ़ गया
कपल युवराज के पास जाकर खड़ा हो गया। मिसेज चावला
हाथ में नया पैग था। और वह युवराज से नई कम्पनी के बारे
बहस कर रही थी।

और यह बहस जारी रहती, यदि एक महिला मिसेज चावल
की बगल में हाथ देकर न ले जाती।

"हैलो यंगमैन," युवराज ने कपल को देखकर मुस्कराहट पैद
की।

"आप बोर हो रहे हैं।"

"नहीं। बिल्कुल नहीं। लेकिन मैं बैठना चाहता हूं।"

"वह सामने कैसी जगह है। थोड़ा एकान्त भी है।"

"कपल ने एक सोफे की ओर संकेत किया।

"बहुत अच्छा चुनाव है। आओ वहां बैठते हैं। मैं तुम्हारे कार
बार के बारे में कुछ जानना चाहता हूं।"

"मैं बताऊंगा।" कपल ने खुश होकर कहा। "युवराज औ
कपल अपना-अपना पैग थामे सोफे की ओर बढ़े और जाकर ब
गए।

"हूं," कहकर युवराज ने हल्का सा घूंट भरा। तुम्हारा मि
बता रहा था कि तुम स्टेट में (अमरीका) आठ वर्ष रहे हो।

"जी हां।"

"अब वहां कैसी बिल्डिगें बन रही हैं।

"सर। आप तो यूं कह रहे हैं जैसे स्टेट्स गए आपको ए
अरसा हो गया है।" कपल ने कहा।

युवराज होंठों में मुस्कराया। वह समझ चुका था कि कप
एक होनहार युवक है। और अच्छी महफिल में उठ बैठ सकता है
इसका व्यवहार, बातचीत का ढंग बहुत ही सभ्य था।

'लेकिन वहां तो मानव अब आकाश की ओर लपक रहा है।

युवराज ने कहा।

"जी हां। भूमि की तंगी है। केवल बड़े नगरों में। एक समय था कि लोग खुले और बड़े-बड़े कमरे पसन्द करते थे क्योंकि भूमि होती थी। अब भूमि की तंगी के कारण मानव आकाश की ओर बढ़ रहा है। अब दो चार मंजिला के स्थान पर तीस पच्चास मंजिला और इससे भी अधिक मंजिलों की बिल्डिगें बन रही हैं।

"खूब कहा।" युवराज ने कहा। एक सफल व्यक्ति होने के नाते वह कभी राय न देगा। प्रत्येक सफल व्यक्ति दूसरे को सुनता है, और सुनाता बहुत कम है। और राय। राय तो मांगने पर भी नही देता, परामर्श की बात छोड़िए।

"अब तो बड़े-बड़े बंगले और महल मकान खत्म हो रहे हैं। लोग चार पांच कमरो के अपार्टमैंट को पसन्द करते हैं," कपल ने कहा।

"हूं।" तुम अपार्टमैंट में रहना पसन्द करोगे, युवराज ने प्रश्न किया।

कपल के लिए यह पहला प्रश्न था इसलिए वह सम्हल गया। इस एक प्रश्न का उत्तर ही इसकी जिन्दगी-भविष्य, परिचय और इस पार्टी को सफल बना सकता है।

"सर। जहां तक मेरी पसन्द का प्रश्न है मैं यह कहूंगा कि एक व्यस्त और बड़े नगर में कारोबार के कारण Apartment में रहा जा सकता है। लेकिन खुले इलाके में इकमंजिला या दुमंजिला बंगले जैसी कोठी की सुन्दरता अपनी जगह है।"

कपल ने कहा।

"सुन्दरता से तात्पर्य ?"

"सर। सुन्दरता से मेरा तात्पर्य है कि निर्माण देश और जल-वायु के अनुकूल होना चाहिए। युरोप में धूप की बहुत कमी है। वहां जिस प्रकार की ईमारतें बनती हैं वह यहां नही बन सकती। और बनती हैं तो आरामदायक नही। मैं तो यह कहूंगा कि मानव

का रहन सहज ही उसके जीवन, उसके धन्धे उसके चाव का प्रमाण होता है।"

"बहुत दिलचस्प" युवराज ने टोका।

"पहले इस देश में जो मकान या कोठियां या बड़ी-बड़ी ईमारतों का निर्माण होता था। इस निर्माण में कुछ बातों का विशेष ध्यान रखा जाता था। कपल ने नपे तुले ढंग में कहना आरम्भ किया।

"मिसाल के तौर पर।"

"फर्श और छत में काफी अन्तर रखते थे। पन्द्रह अठारह, बाईस फीट" कपल ने कहा—"दीवारें मोटी रखते थे। और इसके साथ खिड़कियां छोटी होती थीं।"

"जैसे राजस्थान के महल। देहली में नार्थ ब्लाक, साऊथ ब्लाक, पार्लियामेंट, रेलवे स्टेशन, टाऊन हॉल और अनेक ऐसी ईमारतें जो दक्षिणी भारत में भरी पड़ीं हैं। दक्षिण में पूना के वाड़े बंगलोर हैदराबाद और दक्षिण में ऐसी ही बिल्डिगें—यह तीन चीजें—छत और फर्श का अन्तर। मोटी दीवारें और छोटी खिड़कियां। मकान ईमारत को ठंडा रखती हैं और सर्दियों में सर्दी से बचाती हैं।

"खूब निरीक्षण है! और अब?"

"अब गगनचुम्बी ईमारतों की छतें नीची, दीवारें पतली और खिड़कियां ही खिड़कियां। शीशे और खिड़कियां। जितनी अधिक खिड़कियां हैं लोग समझते हैं अधिक हवा आएगी लेकिन ऐसा नहीं होता। धूप, रोशनी और गर्मी और तपश अधिक प्राप्त होती है। इस प्रकार की ईमारतें यूरोप के लिए उपयुक्त हैं।

"एयर कंडीशन" युवराज ने टोका।

"एयर कंडीशन्ड एक आराम है। जब तक शरीर में शक्ति है। सहनशक्ति है तो हम एयर कंडीशन्ड कमरे से निकल कर साधारण

मौसम में आ सकते हैं अर्थात एकाएक बीस पच्चीस डिग्री तापमान का अन्तर सहन कर सकते हैं और जब सहनशक्ति समाप्त हो जाएगी तो रोगी बनकर रह जायेंगे। क्योंकि एयर कण्डीशन जो हवा हजम करता है वही उगलता है" कपल ने कहा।

"खूब।"

"अब अंतिम बात जो मैं निर्माण के बारे में कर सकता हूं।"

"कहो।"

"मकान इस प्रकार का होना चाहिए जो आरामदायक हो। जो केवल रोशनदान और खिड़कियां न हो। शीशे और धूप की अधिकता न हो। मकान और नगर एक समानता है। जिस प्रकार हम नगर को बनाते समय सड़कों और आवागमन, हवा, रोशनी, धूप गर्द कि प्रत्येक वस्तु का ध्यान रखते हैं। इसी प्रकार मकान बनाते समय भी रखना चाहिए। सड़कें खुली हों ताकि ट्रैफिक जाम न हो। आपस में टक्कर न हो। इसी प्रकार मकान में नौकर-चाकर घर के सदस्य घूमते रहें। लेकिन टकराए नहीं। नई दिल्ली में १६४७ से पहले की प्रत्येक देसी रियासत ने एक कोठी बनवाई है। इस निर्माण में सबसे अधिक इस बात का ध्यान रखा गया है कि कोठी का कोई सदस्य नौकरों का क्वार्टर न देखे और न ही नौकर अपने क्वार्टरों में से कोठी में जो कुछ हो रहा है वह देखें। नौकर सर्विस करें तो एक कमरे की खबर दूसरे को न दे सकें" कपल ने कहा।

"आप, खूब, यंगमैन। सचमुच तुम बहुत होशियार हो।" कहकर युवराज ने उसकी पीठ थपथपाई।

गोपाल तो इसी क्षण की प्रतीक्षा में था। उसने जैसे ही युवराज को कपल की पीठ थपथपाते देखा, फौरन मिसेज युवराज से पूछा।

"मेरा विचार है। हम वहां चलें।"

"ओह," लेडी युवराज ने गहरा सांस लिया।

गोपाल इस गहरे सांस की गहराई को जानता था लेकिन वह इसे विस्मृत करके युवराज के पास पहुंच गया।

युवराज ने उसे देखा तो ऊंचे स्वर में कहा, "गोपाल तुम्हारा मित्र इस आयु में बहुत होशियार और समझदार है। बल्कि जीनी-यस है।"

"इससे अधिक प्रशंसा क्या हो सकती थी। इसका अर्थ था कि कपल ने युवराज को कायल कर डाला था।"

"यह तो आपकी दयादृष्टि है। आज के जमाने में लोगों के पास धन तो बहुत है। लेकिन इनमें से कद्र करने वाले कितने हैं।" गोपाल जानता था कि बड़े आदमियों की चापलूसी बहुत जरूरी है।

"खैर। मेरी दुआ है कि यह उन्नति करें" कहकर एक बार फिर युवराज ने कपल की पीठ थपथपाई।

"फिर कपल को आशीर्वाद दीजिए और अतिथियों से परिचित कराइए," गोपाल ने अवसर का पूरा लाभ उठाया।

"आशीर्वाद और परिचय। अब देखना यह था कि आशीर्वाद में कपल को क्या मिलता है।"

"ओह। मैं ऐसे नवयुवक को सफल देखना चाहता हूं।"

"लेडीज एैन्ड जैन्टमैन, गोपाल ने हाथ से ताली बजाकर सारे अतिथियों का ध्यान आकर्षित किया। जब शोर बन्द हो गया। और हर कोई चुप हो गया तो गोपाल बोला, लेडीज एैण्ड जैन्टलमैन, युवराज साहब एक छोटा सा भाषण दे रहे हैं।"

"भाषण।" युवराज हंसा "खैर। यह भाषण बहुत संक्षिप्त है। मुझे कहा गया है कि मैं इस व्यक्ति को आप लोगों से मिलाऊं जिसके सम्मान में यह पार्टी दी जा रही है और उसे आशीर्वाद दूं।"

"हियर। हियर।" अतिथियों ने तालियां पीटीं।

युवराज खड़ा हो गया। उसके साथ ही कपल भी। कपल उसके

बाएं हाथ था। दाईं ओर गोपाल पहुंच गया। लेकिन युवराज के दाएं हाथ में व्हिस्की का गिलास था। इसलिए उसने निःसंकोच अपना बांया हाथ कपल के कन्धे पर रख दिया। अब और परिचय की क्या आवश्यकता थी। लेकिन परिचय बेहद जरूरी था और उतना ही आवश्यक आशीर्वाद था।

"मैं इस नवयुवक को आपसे परिचित कराना चाहता हूं। जो मेरे बाएं हाथ पर पड़ा है। इसका नाम कपल है और यह आठ वर्ष में अमरीका से पढ़ कर आया है। और अब इस देश में और इस शहर में कारोबार शुरू करना चाहता है। अमरीका से कपल आरकीटैक्ट बनकर आया है।"

अतिथियों ने तालियां पीट कर इस परिचय को स्वीकार कर लिया।

"परिचय के साथ ही कहा गया था कि मैं इस नवयुवक को आशीर्वाद दूं। मैंने बातों से अनुमान लगाया है कि यह नवयुवक एक होनहार आरकीटैक्ट है। फिर बहुत तीव्र बुद्धि है। मैं इसे सफल देखना चाहता हूं।"

"तालियां।"

"और आशीर्वाद के रूप में इसकी शर्तों पर ग्यारह लाख की कोठी बनाने का काम देता हूं।"

"तालियां—तालियां—शोर।"

गोपाल तो कपल से लिपट गया। कपल युवराज का धन्यवाद करना चाहता था। और शायद उसने किया भी। लेकिन शोर में इसकी आवाज दब गई।

एक महिला ने तो भावावेश में इसके गालों को चूम लिया। और एक महिला ने गालों की जगह होठों को उपयुक्त समझा।

गोपाल के ड्राईंग रूम में प्रविष्ट हुए तो रात्रि के सवा तीन बज चुके थे। नशे से बुरी दशा थी।

"ओल्ड व्वाय मुबारक हों। तुमने आज की पार्टी जीत ली।"

"धन्यवाद मुझे डर था कि मैं तुम्हारी आज्ञानुसार कहीं पूरा न उतरुं" कपल ने नम्रता से काम लिया।

"नहीं। मुझे विश्वास था कि पार्टी सफल रहेगी।"

"रोमा भाभी। आपका क्या विचार है" कपल ने मिसेज गोपाल से पूछा।

"सफल" रोमा ने कहा।

"सफल" गोपाल चिल्लाया—परिचय ही नहीं हुआ। बल्कि आशीर्वाद के लिए एक कोठी का काम ग्यारह लाख—शगुन के तौर पर। मैं जानता हूं कि युवराज को कोठी की आवश्यकता नहीं। लेकिन इसने तुम्हें आशीर्वाद देने की खातिर यह किया।"

"लेकिन गोपाल तुमने तो कहा था कि युवराज जो करता है। वही शेष लोग करते हैं।"

"हां।"

लेकिन शेष मेहमानों में से कोई नहीं बोला। किसी ने कुछ नहीं पूछा।

"ओह," गोपाल हंस दिया और इसकी दृष्टि रोमा पर चली गई। इसका मुंह खुला था जैसे वह बात करना चाहती थी। "रोमा तुम कुछ कहना चाहती हो।"

"मैं कपल के प्रश्न का उत्तर देना चाहती हूं," रोमा ने कहा।

"मैं भी यही करने लगा था। खैर। अब तुम उत्तर दो।"

"कपल आज जितने अतिथि आए थे। सब तुमको बुलाएंगे लेकिन युवराज की उपस्थिति में नहीं कहेंगे।

"क्यों।"

"इसलिए कि वे उसका सम्मान करते हैं और दूसरी बात" रोमा कहकर रुक गई।

"दूसरी बात" गोपाल ने टोका।

"दूसरी बात," रोमा ने पति को पूर्ण निगाहों से देखा और युवराज की लोग नकल करते हैं। उसके पीछे-पीछे चलते हैं। लेकिन उसके साथ कम्पीटीशन नहीं करते। या करने का साहस नहीं करते, रोमा ने कहा।

"बिल्कुल ठीक," गोपाल ने पत्नी की प्रशंसा की, और दाद दी, "रोमा की तीव्र बुद्धि का उत्तर नहीं।"

इतने बड़े सरकल में घूमने के पश्चात् इतनी बुद्धिशील होना तो अनिवार्य है। वरना आमन्त्रण आने बंद, रोमा ने हंस कर कहा।

"बिल्कुल। यह लोग बहुत ऊंचे दिमाग रखते हैं। राजनीतिज्ञ। इन्हें पास नहीं फटकने देते। इन्हें केवल चन्दा देते हैं। जिस प्रकार कुत्ते को हड्डी डाली जाती है। यह मिनिस्टरों की पार्टी में पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं रहते। अपने चमचे छोड़ देंगे। जो पार्टी की पूरी खबर लाकर देंगे। लेकिन स्वयं गायब हो जाते हैं।

पांच

गोपाल ने ठीक कहा था।

अगले दिन सुबह आठ बजे कपल अभी विस्तर में था कि गोपाल उसे जगाया और कहा। "और वह आंखें मलता हुआ उठा।"

"कपल रात गुजर गई। ह्विस्की का नशा उतारो।"

"कौन है?"

"कोई मिसेज बेदी बात करना चाहती हैं।"

"मेरे साथ। मैं किसी मिसेज बेदी को नहीं जानता, कपल ने ह्रा।

यह बात मुझसे न कहो। उसे ही कहो। गोपाल ने कहा। उसके र में शरारत भरी थी।

"ओह भगवान," कहकर कपल विस्तर से बाहर निकला।

"मेरा विचार है फोन की एक EXTENSION इस कमरे में लगवा दूं। अब तुम बहुत व्यस्त आदमी होंगे," गोपाल ने कहा।

"भगवान के लिए ऐसा न करना। मैं ऐसा व्यस्त नहीं बनना हता कि अपनी नींद न सो सकूं।"

गोपाल उसके साथ था। ड्राईंग रूम में पहुंच कर कपल ने सीवर उठाया।

"हैलो।"

"मैं मिसेज बेदी बोल रही हूं। आप कौन हैं उधर से आवाज आई।

"मैं कपल हूं।"

"मिस्टर कपल," आवाज बहुत धीमी हो गई।

"क्या आपने मुझे पहचाना नहीं।"

"जी ऐसी बात नहीं। मैं तनिक नींद में हूं।" कपल ने फोन पर कहते हुए गर्दन खुजाई और गोपाल को देखा। यह जानने के लिए कि क्या मजाक है। आप तनिक खोल कर परिचय दें तो मैं आभारी हूंगा।"

"कपल मैं रात पार्टी में थी। और मैंने तुम्हारी सफलता के लिए तुम्हारे होंठो पर चुम्बन दिया था।"

"ओह" और साथ ही कपल का हाथ होंठो पर चला गया।

"याद आया।"

"जी आ गया" कपल ने मुंह बिगाड़ा, "कहिए क्या आज्ञा है।"

"कपल मैं भी कोठी बनवाना चाहती हूं। ग्यारह लाख की तो नहीं। क्योंकि मैं सिमरन जितनी जवान नहीं। फिर भी सात आठ लाख की होगी और मुझे आपकी हर शर्त स्वीकार है। जिस प्रकार युवराज ने बिना शर्त काम दे दिया है।"

"मैं हाजिर हूं।"

"कोई इन्कार न करना," गोपाल ने सतर्क किया।

"तो आज मिल सकते हैं आप?"

"जी आज तो नहीं। आप फोन नम्बर दे दें। मैं आपको फोन करके दिन और समय नियुक्त कर लूंगा।"

"ओके," कहकर मिसेज बेदी ने फोन बन्द कर दिया।

इधर कपल ने भी फोन बंद कर दिया।

"क्यों प्यारे मैंने ठीक कहा था ना कि रात जितने अतिथि आए थे सब कोठी बनवाएंगे। कितने की कोठा बनाएगी।"

"सात आठ लाख की।"

"देखो कोई युवराज से आगे नहीं बढ़ता। इसकी नकल करते हैं। कहेगी सात आठ लाख की। वह बात अलग है कि पन्द्रह लाख लगा दे। लेकिन कपल मैं इस कम्पीटीशन पर सोच रहा था।" गोपाल एकाएक गंभीर हो गया।

"कम्पीटीशन।"

"हां। कपल मैं सोच रहा था कि तुम युवराज की कोठी शुरू करो। और जब तक उसे पूरी नहीं कर देवे। दूसरा काम मत लो। सबसे यही कह दो कि तुम नम्बर से बना दोगे। लेकिन मैं नहीं चाहता कि इधर युवराज की कोठी शुरू करो और उधर मिसेज वेदी या किसी और की कोठी शुरू कर दो। मैं अर्थात युवराज इस कम्पटीशन को पसन्द न करेगा।"

"तुम ठीक कहते हो।"

"कपल बुरा न मानना। मैं तुम्हारे भले की बात कह रहा हूं। युवराज की कोठी ग्यारह लाख की बनेगी। तुम्हारा आठ प्रतिशत कमीशन होगा। अर्थात अठासी हजार। अभी इतना बहुत है। अधिक लालच अच्छा नहीं। यह कोठी खत्म करके फिर चाहे चार कोठियां एक ही समय शुरू कर देना।" गोपाल ने समझाया।

"तुम ठीक कहते हो," कपल ने कहा, "आओ अब चाय पीयें। और वह डाईनिंग रूम की ओर बढ़ गए।"

छः

"गोपाल एक बात नहीं समझ पाई। यह कोठी जो मैं बनाऊंगा क्या इस बहू के लिए है जो आज पार्टी में थी," कमल ने कहा।

"बहू" गोपाल चौंका।

"बहू" रोमा चौंकी।

क्योंकि घोषणा के उपरान्त वह उसको समझा रहा था कि कोठी किस प्रकार की होगी। युवराज के कितने बच्चे हैं।

"दो," गोपाल ने उत्तर दिया।

"दोनों विवाहित हैं।"

"हां।"

"मेरा विचार है वह इस बहू से अधिक प्यार करता है।"

"क्या कह रहे हो पगल बहू—बहू—। तुम दूसरी बार कह रहे हो," गोपाल ने रोमा को देखते हुए कहा, "पार्टी में उसकी बहू न थी।"

"मेरा मतलब मिसेज युवराज से है। क्या तुमने यह कहकर परिचय न कराया था," कमल ने कहा।

"हूं।"

"फिर मेरी क्या गलती है।"

"पगले वह लेडी युवराज है। लेकिन वह बेटे की पत्नि मर्याद

बहू नहीं। बल्कि जो युवराज पार्टी में था इसकी पत्नि है।

"पत्नि," कपल चौंक पडा।

"हां प्यारे" कानूना रूप से तीसरी। लेकिन गैर कानूनी व
सो। मैं नहीं जानता था। अतः यूरोप, अमरीका...जापान
हांगकांग। प्रत्येक देश की स्त्रियां युवराज के विस्तर की शो
रही हैं।

"यह पत्नि है।"

"हां, पत्नि।"

"चहोती"

"चहोती है या नहीं। फिर भी यह युवराज का शौक है।
शौक शौक होता है। और सिमरन को कायल करना बड़ा क
है।"

"क्या नाम बताया ?"

"सिमरन।"

"खूब। बहुत प्यारा नाम है। सिमरन किसका सिमरन।"

"भगवान का और किसका," रोमा ने हंसकर कहा।

"खैर भाभी। यह बुड्ढे के क्या काम आती होगी।"

"कपल। अमीर क्या करते हैं। केवल देखना हमारा व
है। राय देना नहीं। तुम्हें रोमा ने बताया नहीं कि आज की
में प्रत्येक अतिथि पचास लाख से अधिक का मालिक था। ल
वह युवराज से कम्पीटीशन नहीं करता।'

"मैं भविष्य में सतर्क रहूंगा।"

☐

"फिर क्या आदेश है," कपल ने प्रश्न किया।

"प्रतीक्षा," पी० एस० अर्थात् प्राईवेट सैक्रेटरी के चेहरे पर
हुई मुस्कराहट थी।

कपल को भी मुस्कान पैदा करनी पड़ी। और पैदा करके
जगह पर जा बैठा।

कमरा खुला था। फर्श पर सुर्ख रंग का कालीन था। जिस पर कोई फूल न थे। सोफे जैसी कुर्सियां पड़ी थी। और बेंच भी। एक ओर पी. एस. का मेज था। जिस पर तीन फोन थे। एक लेटर पेड या सादा कागज का दस्ता और पैन। जिस पर वह फोन पर बात करने के उपरान्त कुछ लिख लेता था।

कपल की भांति और भी कुछ सज्जन प्रतीक्षा कर रहे थे। कोई युवराज से मिलने आया था। कोई उसके बेटों से। लेकिन शायद वह अकेला व्यक्ति था जो लेडी युवराज से मिलने आया था। और एक घन्टा चालीस मिनट से प्रतीक्षा कर रहा था।

वह इस अरसे मे तीन बार पूछ चुका था उसे इस प्रतीक्षा से वहशत और चिढ़ हो रही थी। वह मन ही मन लेडी सिमरन युवराज को गालियां दे रहा था। लेकिन जब भी पी. एस. ने मुस्करा कर उसे प्रतीक्षा करने को कहा। उसने उत्तर मे मुस्कराहट पैदा कर दी और अपनी जगह बैठ गया।

पार्टी को एक मास के करीब हो गया था। उसे दस हज़ार का पहला चैक मिल चुका था। इस अरसे मे उसको युवराज से केवल एक भेंट हुई थी। जबकि पी. एस. साथ मे था। युवराज ने खालिस कारोबारी स्वर मे पी. एस. से परिचय कराया। और कहा कि ग्यारह लाख की कोठी बनाई जाएगी। और कोठी के बारे में लेडी युवराज से कपल परामर्श लिया करेगा।

एक मुस्कराहट के साथ युवराज ने उसे डिसमिस कर दिया। इस अरसे में कोठी के लिए जमीन का सौदा ही तय न हुआ था। इसका बयाना भी हो चुका था। कपल ने पहला नक्शा तैयार कर लिया था। जो लेडी युवराज को दिखाया जाना था। यदि वह स्वीकृति दे देती तो निर्माण का काम आरम्भ हो जाता।

लेकिन पहले आठ दिन तो पी. एस. ने अप्वाईंटमैंट का समय ही न दिया। केवल यही कहता रहा कि वह समय लेकर देगा।

और आज की यदि अप्वाईटमैंट मिली तो वह नियुक्त समय पर पहुंच गया। लेकिन अब वह एक घन्टा चालीस मिनट से प्रतीक्षा कर रहा था।

आठ वर्ष अमरीका में रहने के बाद वह समय की कद्र जान गया था। वह जानता था कि दुनिया में हर इन्सान का समय बहुत कीमती है। यदि किसी ने चार बजे मिलने का वायदा किया है तो चार बजे का मतलब है चार बजे। तीन पचपन नहीं और न ही चार बजकर पांच मिनट।

लेकिन इस देश में समय का मूल्य रखना अभी शान से नीचे है।

हां। एक बात स्पष्ट थी कि उसे किस प्रकार की महिला से वास्ता पड़ना था। उस दिन पार्टी में भी वह अलग-अलग सी रह कर ह्विस्की पीती रही। पति की किसी भी बात का उसने उत्तर न दिया था। इसका मतलब था कि वह बददिमाग, हठीली, स्वभाव लम्बी किस्म की नारी थी। अथाह सौन्दर्य भगवान ने उसे दिया था, धन उसे पति ने दिया था और निश्चित बात है कि शक्ति का प्रयोग वह जानती होगी। उसकी सूझ अनुसार अमरीका का पढ़ा हुआ आरकीटैक्ट कोई महत्व न रखता था।

कपल ने जब दूसरी बार पी. एस. को याद कराया था तो साथ में यह भी पूछा था, "लेडी युवराज क्या कर रही हैं?"

"व्यस्त हैं?" पी. एस. ने उत्तर दिया।

"लेकिन मेरी अप्वाईटमैंट?"

"वह जानती हैं..."

"फिर?"

"प्रतीक्षा।"

और वह प्रतीक्षा कर रहा था।

इधर लेडी सिमरन युवराज कोठी के पिछवाड़े स्थित टैनिस

कोर्ट में रंगबिरंगी छतरी के नीचे बैंत की कुर्सी पर बैठी थी। उसके शरीर में बुशर्ट किस्म की कमीज थी। आस्तीन आधी बांहों तक। अर्थात् इसके सुडौल बाजू पूरी तरह दिखाई देते थे। शर्ट का गला मर्दाना था। जिसे उसने अन्तिम तीन बटन तक खोल रखा था। सफेद डैकरन शर्ट के खुले कालर के पीछे इसकी ब्रेसरी नजर आ रही थी और इसके साथ ही इसकी भरी-भरी छातियों का उभार। शर्ट के नीचे उसने निकर पहन रखी थी। वह भी सफेद रंग की थी। लेकिन मक्खन जीन की थी। इस निकर ने उसकी सुडौल और कसरती जांघों को आधा से थोड़ा कम छुपा रखा था। उसकी जांघे जहां घुटनों से मिलती थीं, मछलियां पैदा हो रही थीं। जो इस बात को प्रगट करती थी कि वह टैनिस प्रतिदिन खेलती थी। सफेद जांघों पर हल्के हरे रंग की नसें फैली थी। घुटनों के करीब जो मछलियां पैदा हो रही थी। इनसे यह भी प्रगट था कि उसकी जांघों में उंगलियां धुस सकती थी। टैनिस के खेलने और विशेष कर पांव की एड़ियां उठाकर सरविस करने से उसकी पिंडलियां भी सुडौल और सुन्दर हो गई थी।

सिर के बालों को उसने गधे की दुम की भांति बांध रखा था। आंखों पर ROBOX का चश्मा था।

इसके साथ उसकी सहेलियां थीं। उनका वेश भी कुछ इसी प्रकार का था। इनके बीच मेज थी जिस पर कोला की बोतलें पड़ी थीं। और फलों के रस के गिलास। लेकिन छुआ किसी को न गया था।

"सिमरन।" मिसेज सूरी बोली।

"यस डियर।" लेडी युवराज ने कहा।

"मैं कुछ दिनों से एक स्कीम पर सोच रही थी, मिसेज सूरी बोली।"

"स्कीम," मिसेज बख्शी ने दिलचस्पी ली।

"हां, स्कीम।" मिसेज सूरी ने कहा।

"मिसेज सूरी। तुम्हारी दिमाग तो हर समय काम करता रहता है। तुम्हें तो किसी सरकारी दफ्तर में नौकर होना चाहिए था या आनरेरी तौर पर प्लानिंग विभाग से सम्पर्क रखना चाहिए, मिसेज कपूर ने मिसेज सूरी से कहा।"

"नीना।" तुम रिमार्क पास करने से बाज नहीं रह सकतीं। और यह एक अच्छी बात नहीं। "मिसेज सुरुचि सूरी ने कहा।"

"और जब तुम अच्छे मैनर्स पर लैक्चर न शुरू कर देना।" मिसेज बख्शी ने हंस कर कहा।

"सुरुचि वह स्कीम बताओ।" सिमरन ने यूं कहा जैसे वह इन सब पर छाई हुई थी। और वह सब उसका कहना मानेंगी।

"हां। स्कीम। मैं भी स्कीम में दिलचस्पी रखती हूं।" मिसेज बख्शी ने कहा।"

"क्योंकि तुम एक हाईकोर्ट जज की पत्नि हो।" मिसेज कपूर ने कहा।

"रीटा।" मिसेज सुरुचि बोली। हाईकोर्ट के जज के हवाले की आवश्यकता क्यों आन पड़ी।

"लिट्टोज प्लीज।" सिमरन युवराज ने चैयरमैन की भांति मीटिंग को कन्ट्रोल करने के लिए कहा। मैं स्कीम के बारे में जानना चाहती हूं। सुरुचि स्कीम सुनाओ।

"स्कीम विशेष नहीं। बिल्कुल कारोबारी है। लेकिन मेरे मस्तिष्क में उसने इसलिए जन्म लिया कि मैं सोच रही थी कि हम औरतें एक ऐसे कारोबार को शुरू करें जिस कम्पनी का चेयरमैन औरत, मैनेजिंग डाईरेक्टर औरत और डाईरेक्टर्स औरतें हों।"

"शेयर होल्डरज ?" मिसेज नीना कपूर ने कहा।

"इन पर कोई पाबन्दी नहीं। वैसे नीना का इशारा ठीक है। यदि हम अखबार में पब्लिसिटी करें कि शेयर्ज केवल स्त्रियों को

स्टार।" सरुचि सूरी ने रहस्योद्घाटन कर डाला।

"होटल।" अनीता और नीना एकाएक चिल्ला पड़ीं।

"हां।" सुरुचि ने गंभीर स्वर में कहा।

"पांच स्टार क्यों नहीं," सिमरन ने पूछा।

"धन्यवाद, सरुचि सूरी ने कहा। सिमरन। तुम्हारे साथ बात करने का भी मजा आता है। कोई विषय हो। विवाद का कोई विषय हो। तुम बात को उचक लेती हो और तुम्हारी नौलेज असीम है कि सदैव मतलब की बात पूछोगी और वैसी ही राय दोगी।"

अब अनीता और नीना की हेठी हो गई। इसलिए इन्हें भी गंभीर होना पड़ा।

"यह तीन स्टार—चार स्टार—पांच स्टार क्या होता है। अनीता बहनों ने कहा।

"अनीता नीना भी सिमरन की योग्यता की कायल थी।"

"सिमरन। सच्ची बात तो यह है कि यह स्कीम मेरी नहीं जैसा कि मैं कह चुकी हूं। यह किसी की स्कीम है। और मुझे पता चला है कि इनके हाथ इतने लम्बे नहीं क्योंकि उन्हें दो मिनिस्टरों को कायल करना है। और खुश करना है।" सरुचि सूरी ने कहा।

"फिर भी पांच स्टार क्यों नहीं।" सिमरन ने हठ किया।

"मैंने कहा है न कि इन्होंने तीन स्टार होटल का प्रोग्राम बनाया है। इसका कारण शायद यह हो कि शेप ला के अनुसार स्नान का तालाब। कार पार्किंग और इसी प्रकार की आवश्यकता को सम्मुख रखकर इतनी भूमि न होगी या कोई और कारण होगा जो वह पांच स्टार होटल न बनाना चाहते हों।" सुरुचि ने सफाई पेश की।

"अच्छा। तुम इनकी स्कीम सुनाओ। सिमरन ने दिलचस्पी लेते हुए कहा।

वेचें जाए तो हमें विश्वास है कि हमारा प्रोत्साहन बढ़ेगा। और सारे शेयर्ज़ हाथों-हाथ बिक जाएँगे।

"और कम्पनी का सारा स्टाफ महिलायों पर निर्भर हो," मिसेज अनीता ने दिलचस्पी लेते हुए कहा।

"नहीं। क्योंकि जो कारोबार मेरे दिमाग में है इसे केवल महिलाएँ न चला सकेंगी।" सरुचि सूरी ने कहा।

"खैर। कोई भी काम ऐसा नहीं जिसे केवल महिलाएं चला सकती हों। कहीं-न-कहीं पुरुष की आवश्यकता पड़ती है।" अनीता वख्शी ने कहा।

"स्कीम क्या है।" सिमरन ने वख्शी को काम की वात पर लाना चाहा।

"स्कीम सिमरन डियर मेरी नहीं। सरुचि सूरी ने कहा।

"वह मैं जानती हूं।" नीना कपूर ने कहा, "तुम्हारी हर सोच मांगी हुई होती है।"

"प्लीज।" अनीता वख्शी वोली।

"हां। तो वह स्कीम किसी ने तैयार की थी। इलाके में एक खाली प्लाट पड़ा है। वह प्लाट सैन्ट्रल गवर्नमैंट का है। और इसका क्षेत्रफल दो वर्ग एकड़ होगा, सुरुचि सूरी ने कहा।

"तो वहां सिनेमा वन सकता है।" अनीता वख्शी ने कहा। "हां। वन सकता है।" सुरुचि सूरी वोली, लेकिन हममें से कोई भी सिनेमा जैसे कोरावार में जाना पसन्द करेगा। यह ठीक है कि आज के जमाने में सिनेमा अच्छा कारोवार है। और एक अच्छा सिनेमा चालीस-पचास लाख में वन रहा है। लेकिन जहां तक हमारा प्रश्न है। हम सिनेमा के चक्कर में न जाएं तो वेहतर है।

"ठीक।" सिमरन ने निर्णयात्मक स्वर में कहा।

"हां तो वह स्कीम है कि इस पलाट पर यदि वह अलाट हो जाए तो एक होटल खोला जा सकता है। तीन स्टार या—चार

"यह ठीक है कि होटल हमारे लिए नया काम है। लेकिन मेरी मित्रता वोहरा फेमिली से अच्छी है और वह होटल ट्रेड के बादशाह हैं। देश में दो दर्जन से अधिक होटलों को चला रहे हैं।"

"क्या वह हमारा साथ देंगे," अनीता बोली।

"अवश्य। यदि न भी दें तो तुम मेरा स्वभाव जानती हो कि मुझे हर चैलेंज स्वीकार है। उस काम को पूरा करने में मजा आता है जिसे दूसरे सिरे चढ़ाने से इन्कार कर दें।" सिमरन ने मुस्कराकर कहा और चेहरे से काला चश्मा उतारा।

"खैर। तुम्हारे इस गुण से कोई इन्कार नहीं।" नीना ने शाब्दिक तौर पर कहा।

"नीना कहना कुछ और चाहती थी लेकिन उसने वह बात न कही। उनके सर्कल में सिमरन फितने के नाम से प्रसिद्ध थी। जहां आग लगाना हो, झगड़ा कराना हो, मुसीबत पैदा करनी हो सिमरन का नाम काफी था। उसकी बेचैनी मशहूर थी। वह सदा पारे की भांति चंचल रहती थी। किसी को तबाह करना हो सिमरन का नाम यथेष्ट था।

नीना ने तो न कहा लेकिन अनीता ने कह दिया। सिमरन तुम जानती हो दुनियां तुम्हें क्या कहती है ?

"क्या।" सिमरन ने उसे देखा और आंखों पर चश्मा चढ़ा लिया।

"फितना।" अनीता ने कहा।

"बकते हैं लोग," सिमरन ने कहा। यद्यपि वह इस नाम से बहुत खुश थी। जैसे वह फितना कहाने की सही हकदार थी। "हां सुरुचि तुम होटल की बात कर रही थीं।"

"सिमरन। इनकी स्कीम है कि यदि वह भूमि सरकार इन्हें अलाट कर दे। जिसका मूल्य बारह-पन्द्रह लाख के लगभग है। तो एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी खड़ी कर दें। जिसकी कुल पूंजी पन्द्रह

लाख होगी। और वह सारे शेअर अपने सम्बन्धियों के पास रखना चाहते हैं।

अर्थात फैमली कनर्सन बनाना चाहते हैं, सिमरन ने बात काटी।

"हां। इनकी स्कीम है कि पन्द्रह लाख रुपए पूंजी हो। जिसमें से एक शेयर होल्डर अमरीका में है। और वह तीन लाख रुपए की फारन एक्सचेंज देगा। इसके बाद वह सरकार के टूरिज्म विभाग से पच्चीस लाख का ऋण ले लेंगे। अर्थात एक करोड़ का प्रोजैक्ट" सुरुचि ने गहरा सांस लेकर कहा।

"अड़चन क्या है" सिमरन ने एक मंजे हुए व्योपारी की भांति पूछा।

"रसूख की," सुरुचि ने कहा।

"पन्द्रह लाख से एक करोड़ का प्रोजैक्ट" अनीता बोली, "कमाल की स्कीम है।"

"सुरुचि। तुम्हारे पास यह स्कीम कहां से आई," सिमरन ने प्रश्न किया।

"क्या सच जानना चाहती हो" सुरुचि ने प्रश्न किया।

"बिल्कुल।"

"भूमि के लिए वह जिस मिनिस्टर से मिले। उसने स्कीम सुन कर इन्हें कोई वायदा न किया बल्कि इसकी पत्नि ने मुझे फोन किया कि मैं अपने सर्कल में इस स्कीम की बात करूं," सुरुचि ने कहा।

"कमीना" सिमरन बोली, "यह मिनिस्टर न मालूम कितनी पीढ़ियों से भूखे हैं। एक-एक बैडरूम की अलमारी में पच्चीस लाख तीस पच्चास लाख रुपया कैश पड़ा है। लेकिन इनका पेट नहीं भरता। अब जिस किसी ने यह स्कीम बनाई है वह मध्यम वर्ग से होगा। और इसके पास अधिक से अधिक दो चार लाख रुपया होगा। वह समझता था कि मिनिस्टर इसका साथ देगा। इसकी

तरह कई योजनाएँ हैं। मध्यम वर्ग में मिनिस्टरों के यहां पहुंचती हैं। और वहाँ से हम लोगों के पास," सिमरन ने कहा।

"फिर क्या विचार है," सुरुचि ने कहा।

"सुरुचि। स्कीम बुरी नहीं। लेकिन दो तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं।"

"कौन कौन-सी," नीना बोल पड़ी। वह दिलचस्पी ले रही थी।

"पहली यह कि अब मैं समझ गई हूं कि स्कीम बनाने वाले ने तीन स्टार होटल का प्रोग्राम क्यों बनाया है," सिमरन ने कहा।

"क्यों ?" अनीता बोली।

"इसलिए कि इसके पास दिमाग तो बहुत बड़ा था लेकिन बैंक बैलेंस बड़ा न था। वह जमीन मुफ्त चाहता है। क्योंकि जो पूंजी वह पैदा कर सकता है वह पन्द्रह लाख है। यदि भूमि खरीदना पड़े तो यह पूंजी केवल भूमि पर खर्च हो जाती है। दूसरी इसके पास फारन ऐक्सचेंज का प्रबन्ध केवल तीन लाख रुपए की कीमत का है। अब यदि हम इस काम को शुरू कर दें तो हमारे सम्मुख और किस्म की कठिनाईयां पेश आएंगी। सिमरन ने कहा।

"किस प्रकार की।" नीना बोली, "तुम्हारे मुंह से कठिनाई शब्द जंचता नहीं।"

"इसकी वजह है। मैं अभी बताऊंगी।" सिमरन ने कहा, "तो सुरुचि जहां तक फारन ऐक्सचेंज और पैसे का प्रश्न है। इन दोनों की हमें कमी न होगी। इस मिनिस्टर की पत्नि ने इसलिए फोन किया था कि वह हिस्सा रखना चाहती है।"

"सीधी बात है।"

"तो मेरा जवाब तुम जानती हो। हम राजनीतिज्ञों के साथ बिजनेस नहीं करते। आई० सी० एस० अफसर जो नौकरी से रिटायर हो रहे हों। अर्थात इन्हें रिटायर होने के बाद साथ मिला

लेते हैं। लेकिन राजनीतिज्ञों को नहीं। बिजनेस पीढ़ी से पीढ़ी की चीज है। और राजनीतिज्ञ केवल दो या पांच वर्ष तक रहते हैं। आज मंत्री हैं तो कल कुछ भी नहीं। यदि मंत्री पद पर रहे भी तो पांच वर्ष के उपरान्त न मालूम क्या हो, सिमरन ने कहा।

"बिल्कुल ठीक," अनीता बोली।

"तो इस मिनिस्टर की पत्नि से कहो कि इस प्लाट की अलाटमेंट के लिए क्या-क्या कीमत मांगती हैं। हम इस कीमत को चुका देंगे। लेकिन हिस्सा नहीं देंगे," सिमरन ने एक सफल व्यौपारी की भांति कहा। "कीमत चाहे अधिक हो।"

"मैं समझ गई" सुरुचि बोली।

"तो मिनिस्टर का हिस्सा न हो। और होटल तीन स्टार न होगा। क्योंकि तुम जानते हो कि राज क्या कहते है" सिमरन का संकेत पति युवराज की ओर था।

"कहो" सुरुचि ने कहा।

"वह कहते हैं वह जमाना चला गया जब हर बड़ी इंडस्टरी मारवाड़ियों, गुजरातियों और पारसियों के सहयोग से शुरू हो सकती थी। अब उत्तरी भारत में इतना रुपया है कि यहां बड़ी से बड़ी इंडस्टरी शुरू हो सकती है और जितना रुपया चाहो मिल सकता है," सिमरन ने कहा।

"ठीक कहते हैं," नीना बोली, "अब तो परिस्थिति बदल गई है। एक समय था कि पंजाब, देहली और यू० पी० के लोग जब पूंजी लगाना चाहते हों तो इन्हें कलकत्ता जूट इंडस्टरी। बम्बई में कपड़े के धंधे में लगाना पड़ता था। लेकिन अब वैसी परिस्थिति नहीं। ब्राह्मण कभी व्यापार नहीं करते थे। विशेष रूप से बड़ा कारोबार। जो करोड़ों तक फैलता है। लेकिन उत्तरी भारत के दो ब्राह्मण सफल व्यापारी सिद्ध हुए हैं।

"कौन-कौन से," सुरुचि ने प्रश्न किया।

"लुधियाना के लखनपाल, मरफी रेडियो वाले और ह्विस्की वाले मोहियाल," नीना ने उत्तर दिया।

"देखा" सिमरन बोली, "अब ऐसी कोई कैद नहीं कि अमुक जाति के लोग अमुक काम कर सकते हैं। मेरा कहने का मतलब था कि राज पसन्द न करेंगे कि हम तीन स्टार का होटल शुरू करें। आखिर इन्हें पता तो चल ही जाएगा। इसीलिए तीन स्टार होटल के साथ युवराज कुल का नाम स्थाई हो जाएगा और यह उचित नहीं है।"

"फिर मैं मिनिस्टर की पत्नि को कहूं कि वह प्लाट अलाट करने की कीमत बता दे। और हम इसे खरीद लेंगे सुरुचि बोली।

"बिल्कुल," सिमरन ने कहा।

"भाई खूब। सचमुच सुरुचि बहुत अच्छी स्कीम लाई है हम मर्दों को बता देंगे कि हमने एक करोड़ का प्रोजेक्ट शुरू किया है। जिसमे मर्दों के दिमाग और पैसे की आवश्यकता नहीं। सिमरन, मैं दो लाख के शेयर खरीदने को तैयार हूं" नीना ने कहा।

"मेरे भी दो लाख के," अनीता बोली।

"धीरे धीरे," सिमरन ने कहा।

"लेकिन सिमरन," स्कीम को किसी को न बताना। नीना ने कहा।

"बेहतर।"

"होटल को बनवाने के लिए एक आरकीटैक्ट की आवश्यकता पड़ेगी जो यूरोप और अमरीका मे पढ़ा हो" सुरुचि बोली।

"आरकीटैक्ट," सिमरन चौंक पड़ी। और साथ ही उसकी दृष्टि कलाई की घड़ी पर चली गई।

"क्या बात है। सिमरन तुम्हे एकाएक कुछ याद आ गया है" सुरुचि ने प्रश्न किया।

"हां सुरुचि। एक आरकीटैक्ट को मैंने साढे नौ बजे का समय

दिया था। और इस समय पौने बारह बजे हैं। मालूम नहीं वह इस समय प्रतीक्षा कर रहा होगा या जा चुका होगा," सिमरन ने कहा।

"कौन वह तो नहीं जो उसी दिन गोपाल की पार्टी में था," अनीता ने कहा।

"तुम इस पार्टी में शामिल थीं," सिमरन ने पूछा।

"आरकीटैक्ट बहुत ही सुन्दर है," अनीता ने मुस्कराकर कहा और तुम जान बूझकर उसे प्रतीक्षा का कष्ट उठाने के लिए बाधित कर मन ही मन खुश हो रही थी।

"अनीता ! इस प्रकार की बातें नहीं करते" सिमरन ने मुंह फुला कर कहा।

"अब चिता बनो नहीं वरना तुम आरकीटैक्ट के नाम पर इस तरह न चौंकतीं। और न ही यह स्वीकार करतीं कि वह प्रतीक्षा कर रहा होगा। तुमने यह भी बताया है कि कितने बजे उससे मिलना था," अनीता ने कहा।

"कौन है ? किसकी बात है ? सुरुचि बोली।"

"राज साहिब एक कोठी बनवा रहे हैं।" सिमरन ने साधारण स्वर में कहा।

"कोठी। तुम्हें अभी कोठी की आवश्यकता है," नीना ने कहा।

"मुझे नहीं। यह अमरीका से आरकीटैक्ट बन कर आया है। राज साहिब ने आशीर्वाद के तौर पर इसे एक कोठी का काम दे दिया। और निगरानी मेरे सपुर्द कर दी," सिमरन ने कहा।

"ओह। तो हम इससे ही होटल बनवा लेंगे," सुरुचि ने कहा।

"शायद वह एक डेढ़ करोड़ का प्रोजेक्ट संभाल न सके," सिमरन ने कहा।

"वह देख लेंगे," सुरुचि ने कहा।

"तो आज की पार्टी स्थगित," नीना ने खड़े होकर कहा "इसका

मतलब है आज से हम कारोबारी पार्टनर भी हैं। और एक ऐसा कारोबार शुरू कर रहे हैं। जिसके तमाम डाईरेक्टर लिमिटेड होंगे।"

"बिल्कुल" अनीता ने बात काटी और खड़ी हो गई।

वह चारों बातें करती हुई कोठी की ओर बढ़ गईं।

सात

सिमरन के शरीर पर टैनिस खेलने का लिवास था। जिसे वदलना उसने उचित न समझा।

इसकी सहेलियां चली गई थीं।

सिमरन का यह प्राइवेट ड्राईंग रूम था। यहां वह खास लोगों से मिलती थी। साधारण लोगों से वह कामन ड्राईंग रूम में मिलती थी।

उसने वेटर को वुलाया।

वावर्दी वैरा जिसकी सफेद वरदी वेदाग थी और कलफ लगी हुई थी।

वह आकर सम्मानपूर्वक खड़ा हो गया।

"पी० एस० से पूछो मुझे कौन मिलने के लिए वैठा है।"

वैरा ने दृष्टि न उठाई। और इसी प्रकार झुकी निगाहों से वह कमरे से निकल गया।

सिमरन ने घड़ी देखी। इस समय वारह वज कर दस मिनट हुए थे। अव उसका दिन शुरू हुआ था। यद्यपि उसने नौ वजे पहली मुलाकात का समय दिया था।

मेज पर सुवह की डाक पड़ी थी। वह उसे एक नजर देख रही थी। इस डाक में उसके सम्वन्धियों और मित्रों के पत्र तो वहुत

"आप इस बस का उद्घाटन कर दें," भसीन ने कहा।

यह सारी बातें पत्र में लिखी जा चुकी थीं। और इसके बाद सिमरन ने भेंट का समय दिया था।

"प्रेस का क्या प्रबन्ध है," सिमरन ने पूछा।

"जी। वह तो हमने नहीं किया।

"खैर मैं अखबारी संवाददातओं को बुला लूंगी," सिमरन ने कहा।

"बहुत-बहुत धन्यवाद।"

"यह बस कैसे खरीदी गई थी।"

"जी बच्चों से फण्ड लिया जाता था।"

"कितने की खरीदी।"

"बासठ हजार की।"

"ओह" सिरमन मन-ही-मन में मुस्करा दी। बस खरीद ली और रुपए जमा कर लिए। अब इसके उद्घाटन कराने से क्या लाभ था। लेकिन अकारण कोई उद्घाटन नहीं करता।

"क्या मुझे स्कूल को कुछ दान देना होगा।

"ही। ही। उत्तर से पहले हंसी की आवाज आई।"

"लेडी युवराज आप तो जानती हैं स्कूल में तो हर समय रुपए की आवश्यकता रहती है। यद्यपि सरकार ग्रांट देती है लेकिन रुपया ऐसी चीज है···।"

"चेयरमैन या प्रिंसीपल ने कहा था कि क्या पेश करना होगा।"

"जी हां। जी हां" भसीन ने हाथ जोड़ते हुए कहा। "आप स्वयं ही ऐसी बातें समझती हैं।"

"कब है यह उद्घाटन ?"

"जी। कार्ड इत्यादि सब छप गए हैं" कहकर भसीन ने बैग से कार्ड निकाल कर बढ़ाया।

"बस ठीक है" मैं पहुंच जाऊंगी। "आपने जब कार्ड भी छपवा

-हीं करना चाहतीं
प्रश्न है। न आपने
." कपल स्वयं हैरान
। लेकिन इस प्रतीक्षा

रहे हैं ?"
ापने जिस तरह की
ौर न ही इसलिए
। मैं आपसे एक
। और आप
आगे बढ़ा

कहा
र

"क्या तुम्हारे पास घड़ी नहीं है." सिमरन को क्रोध आ गया था। वह उसे आभास दिलाना चाहता था कि मुलाकात किस समय की थी और अब कितने बजे थे।

"नहीं। कपल ने बेबाकी से कहा," मैं अपनी घड़ी अमरीका में छोड़ आया हूं क्योंकि मैं जानता था कि इस देश में लोग घड़ियां, केवल नुमायश के तौर पर या जेवर के तौर पर प्रयोग करते हैं। समय देखने या समय की पाबन्दी की खातिर नहीं प्रयोग करते।"

सिमरन की जैसे जुबान बंद हो गई थी। इस प्रकार तो आज तक उसके पति ने उसे न डांटा था। इस धृष्टता और असभ्यता से कोई उसके साथ व्यवहार न कर सकता था।

"मिस्टर कपल। आप इस सोफे पर बैठ जाएं। सिमरन ने क्रोध को दबाने या उसके प्रदर्शन में परिवर्तन करने के लिए कहा।

"मैंने कहा है कि मैं यहां बड़े आराम से हूं। फिर मैं आपको यह नक्शा दिखाने लाया हूं और यहां आपके पास बैठकर आसानी से दिखा सकूंगा और समझ सकूंगा।"

"तुम से आप। और अब क्या होता है। कपल ने सोचा।"

"लेकिन आप वहां बैठें तो मैं अधिक आराम से देख सकूंगी," सिमरन स्वयं को कमजोर अनुभव कर रही थी। लेकिन वह बला की तेज थी। वह इस शिल्पकार से इस प्रकार न दब सकती थी।

क्या मुझे छूत का रोग है जो आप मुझे वहां बैठने को कह रही हैं," कपल ने नक्शा फैलाते हुए कहा।

"क्या आप लेडीज से बात करना नहीं जानते।"

"अमरीका में यही करता आया हूं। और वहां किसी लेडी ने मुझे तीन घंटे प्रतीक्षा नहीं कराई।"

"यदि आपको आपत्ति है तो आप इस कारोबार को छोड़ दीजिए, सिमरन ने ऊंचे स्वर में कहा।

"कारोबार मुझे युवराज साहिब ने दिया है। और आदेश दिया

था कि आप से सलाह करता रहूं। आप सलाह नहीं करना चाहतीं तो मैं जा सकता हूं। जहां तक कारोबार का प्रश्न है। न आपने दिया है और न आप इसे कैंसिल कर सकती हैं।" कपल स्वयं हैरान था कि वह इस प्रकार की बातें क्यों कर रहा था। लेकिन इस प्रतीक्षा ने उसे इस विद्रोह पर तैयार किया था।

"आप जानते हैं कि आप किस से बात कर रहे हैं?"

"जी हां। केवल आप भूल रही हैं कि आपने जिस तरह की धमकी दी है वह आपको शोभा नहीं देती। और न ही इसलिए भला लगता है कि मैं आपके घर का नौकर नहीं हूं। मैं आपसे एक पार्टी में मिला था जो पार्टी मेरे सम्मान में दी गई थी। और आप वहां अतिथि थी। कहकर कपल ने सिगरेट केस सिमरन के आगे बढ़ा दिया।

सिमरन इस साहस पर हैरान रह गई। कपल ने जो कुछ कहा था वह शत प्रतिशत सत्य था। लेकिन उसने पार्टी में भाग लेकर कोशल पर अहसान न किया था। लेकिन यहां तो बात ही दूसरी थी। कपल ने तो आभास दिलाया था कि उसने पार्टी देकर अहसान किया था। और अब उसे सिगरेट पेश कर रहा था।

"नो थैंक्स," सिमरन को कहना पड़ा अब वह इन्कार न कर सकती थी कि वह सिगरेट नहीं पीती। उस दिन पार्टी में वह शराब और सिगरट दोनों का ही सेवन कर रही थी।

कपल ने सिगरेट केस से सिगरेट निकाल कर होंठों से लगाया उसने सिमरन से आज्ञा लेना उचित न समझा कि वह इसके ड्राइंग रूम में सिगरेट पी सकता है या नहीं। वह इसे मना करना चाहती थी कि वह यहां सिगरेट नहीं पी सकता। लेकिन कहने के लिए जैसे ही उसने मुंह खोला और चेहरा उठाया। कपल सिगरेट सुलगा चुका था और पहले कश का धुंआ इस अन्दाज से छोड़ा कि आधा धुआं सिमरन के चेहरे पर था।

"क्या आप आज तक लेडी से नहीं मिले।"

"अब भी बैठा हूं एक के पास। कपल ने लापरवाही से कहा। तो यह रहा नक्शा। कहकर उसने नीले कागज पर बना नक्शा फैला दिया।

"मैंने इस कोठी में तीन बाथरूम बनाए हैं जो प्रत्येक बैड रूम के साथ अटैचड होंगे। जो बाथ रूम आपका है उसका फर्श, चारों दीवारें और सारी छत आईने की होगी।"

"आईने की।" सिमरन चौंक पड़ी। और उसके मस्तिष्क में ऐसा बाथरूम समा गया जिसकी सारी दीवारें फर्श और छत आईने से बनी हों। और इस बाथ में वह बिल्कुल नग्न स्नान के लिए तैयार हो। इसके बाथ रूम विभिन्न प्रकार के थे। वह बाथरूम जहां गर्म पानी आता था। और बाथरूम भी सैन्ट्रली Heated था।

लेकिन यह बाथरूम।

चारों ओर आईने। फर्श पर आईने। छत पर आईने। जहां दृष्टी दौड़ती स्वयं को देखो एक सिमरन नहीं—दर्जनों सिमरन। लीजिए सामने, दाएं, बाएं, ऊपर—हर जगह सिमरन। प्रत्येक दृष्टि-कोण से सिमरन। शरीर का प्रत्येक भाग देखो।

सिमरन को आभास हुआ जैसे वह नंगी खड़ी थी। और कपल उसे देख रहा था। वह इस दुनिया में लौटी तो आभास हुआ कि कपल वास्तव में उसकी सफेद जांघों को घूर रहा था।

"क्या घूर रहे हो।"

"कुछ नहीं।"

"लेकिन तुम मेरे शरीर को देख रहे थे। स्त्रियों को इस वेश में नहीं देखा। तुम तो अमरीका से आए हो। वहां सागर के किनारे लोग स्नान के वेश में घूमते हैं।"

"लेकिन ऐसी सुडौल और सुन्दर टांगे केवल हालीवुड़ की अभि-नेत्रियों की होती हैं," कपल ने निःसंकोच कहा।

"यह तिरस्कार उनका क्या बना रहा था। उसकी खिल्ली उड़ा रहा था या सम्पत्ता और निपुणता की सीमा से आगे बढ़ रहा था। यही समय था कि वह उसे डाट दे। वरना बाद में उसे संभालना बहुत कठिन हो जाएगा।"

"ओ हां।" कपन ने उसकी जगह कहा," इस बाथ में जो टब बाथ होगा वह एक इंच मोटे शीशे का होगा।

"शीशे का टब बाथ" सिमरन ने एक भोले बच्चे की भांति कहा।

"हां।"

"लेकिन मैं सारा यूरोप और अमरीका घूमी हूं। बड़े से बड़े होटल में ठहरी हूं। मैंने शीशे का टब बाथ नहीं देखा। शीशे की सतह के डाईनिंग टेबिल तो देखे हैं।

"पश्चिमी जर्मनी से। आपके लिए विशेष रूप से बनवाया जाएगा।"

"क्या इस देश में और भी हैं।"

"मेरा विचार है नहीं।"

"फिर आज ही आर्डर दे दीजिए। और जब तक कोठी पूरी नहीं हो जाती आप किसी से बात न करेंगे कि इस प्रकार का बाथ रूम बना रहे हैं," सिमरन ने कहा।

"बेहतर। और अब मैं आपको तीनों बैड रूम के बारे में बतलाना चाहता हूं, कपन ने कहा।

"मैं सुनने के मूड में नहीं हूं। आप कोठी का निर्माण आरम्भ कीजिए, सिमरन ने एक बच्चे की भांति कहा।

"मैं जानता था। कहकर कपन नीले कागज समेटने लगा। जब भी मुझे कोई कठिनाई नजर आए मैं आपसे मिलना पसन्द करूंगा।"

"मैं आपके लिए हर समय निकाल सकती हूं।"

"और इसे कायम भी रखेंगे। यह मेरी पहली और अंतिम परीक्षा थी।

"भविष्य में ऐसा न होगा," सिमरन ने विश्वास दिलाया। सिमरन को स्वयं पर विश्वास नहीं आ रहा था। इस प्रकार की भाषा तो उसने जीवन में कभी न प्रयोग की थी। वह तो अपनी गलत बात को भी स्वीकार न करती थी।

कपल जाने के लिए खड़ा हो गया। "अच्छा अब मैं चलता हूं।"

"कुछ पीजिएगा।"

"नहीं। लंच का समय हो रहा है," वाई, कपल ने कहा और सिमरन का उत्तर सुनने से पहले वह कमरे से निकल गया था।

□

"जो लोग उस दिन पार्टी में थे। और मकान बनवाना चाहते हैं। इनको क्या उत्तर दूं," कपल ने पूछा।

"जो मैंने उस दिन कहा था। इन्कार मत करो क्यों इन्कार करने से अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। फिर इनसे भी कारोबार करना है। इसलिए इन्हें कह दो कि मैं आपके लिए नक्शा तैयार करना शुरू कर दूंगा। लेकिन उसको बनवाना युवराज साहिब की कोठी के बाद शुरू करूंगा," गोपाल ने उत्तर दिया।

"और नक्शा तैयार करने में अधिक से अधिक देर लगा दूं। और जब वह निर्माण का काम कहें तो अधिक से अधिक देर लगाऊं" कपल ने कहा।

"निश्चित बात है।"

"मैं बम्बई जाना चाहता था।"

"बम्बई" गोपाल ने प्रश्न किया।

"हां। वह जहाज जल्दी पहुंचने वाला है। जिसमें मेरी कार और दूसरा सामान आ रहा है।"

"लेकिन हम किसी एजेन्ट को कहें तो वह सामान जहाज से क्लीयर करवाकर यहां भिजवा देगा। जो कस्टम ड्यूटी इत्यादि देनी होगी वह चुका दी जाएगी," गोपाल ने कहा।

"ड्यूटी वाली कोई वस्तु नही। सारी वस्तुएं मैं इस्तेमाल करता रहा हूं। और फिर आठ वर्ष रहा हूं इसलिए जो कुछ मैं लाया हूं उस पर कोई प्रतिबन्ध नही।"

"फिर बम्बई जाने की क्या जरूरत है।"

"मैं कार किसी को देना नही चाहता और न ही उसे रेल द्वारा मंगाना चाहता हूं। मैं स्वयं उसे वाई रोड लाना चाहता हूं।"

"मैं जानता हूं तुम्हारी कार बहुत कीमती है। और वैसी इस देश में अभी एक या दो कारें होगी, गोपाल ने कहा" क्या बेचना चाहोगे।

"नही।"

"क्यो। बड़े अच्छे पैसे मिल जाएगे। फिल्मी अभिनेत्रियो के पास ब्लैक का बहुत रुपया है। और यह कारो के पीछे पागल हैं। जैसे ही इन्हें पता चलेगा कि मर्सीडीज २५० एयरकन्डीशन्ड कार बिक रही है तो वह खरीदने के लिए आपस में कम्पीटीशन करेंगे। और बडी बात नहीं कि दो लाख से अधिक रुपया मिल जाए।"

'दो लाख से अधिक" कपल का मुंह खुला रह गया।

"और तुम क्या समझते हो। यहां इम्पाला का चार वर्ष पुराना माडल एक लाख में बिकता है।"

"बाप रे। इतना पैसा है लोगो के पास अमरीका में तो जर्मनी और जापानी कारो की मांग है।"

"बावा बैंगन और टोयटा की तो यहा बहुत माग है और बहुत गाड़ियां हैं। मर्सीडीज नम्बर भी १८६, २००, २२० इत्यादि मिल जाती हैं लेकिन २५० तो अनुपम माडल है। बड़ी बात नहीं कि यदि तुम लेडी युवराज से बात करो तो वह ही खरीदने पर तैयार हो जाएं।"

"लेडी युवराज।"

"हां। उसे भी कारो का जनून है।"

"कपल संभल गया। उसने आज तक गोपाल को पहली भेंट की कुछ बातें न सुनायी थीं। यानी सिमरन ने कौन से कपड़े पहन रखे थे। उसने क्यों कहा था कि उसने अमरीका में स्त्रियों को स्नान के वस्त्रों में नहीं देखा। वह इसके कितने पास बैठा था। या वह इसके कितने निकट थी और क्या-क्या बातें हुई थीं।"

"जनून से क्या प्रयोजन," कपल ने प्रश्न किया।

"तुम इसकी कोठी बनवा रहे हो। एक तरह से तुम उसके अहसान तले हो। यदि उसे तुम्हारी कार पसन्द आ गई। और उसने बेचने के लिए कहा तो तुम इन्कार न कर सकोगे," गोपाल ने कहा।

"कर न सकूंगा या करना नहीं चाहते," कपल ने मुस्कराते हुए कहा। काश गोपाल को मालूम होता कि उसने किस बुरी तरह से सिमरन को झाड़ा था कि वह उसे प्रतीक्षा क्यों करा रही थी उसने गाड़ी की चर्चा किस तरह की थी और क्यों की थी कि वह अपनी गाड़ी अमरीका में छोड़ आया है।

"एक ही बात है।"

"एक ही बात कैसे है," गोपाल तुम तो यूं कह रहे हो जैसे लेडी युवराज को दुनिया की हर अच्छी और सुन्दर वस्तु प्राप्त करने का अधिकार है। क्योंकि वह पैसे वाली है।

"यह गलत बात नहीं। दौलत वाले लोग सनकी होते हैं," गोपाल ने कहा।

"सनकी तो यहां के राजनीतिज्ञ भी हैं। उस दिन मुझे कोई लतीफा सुना रहा था। एक कांग्रेसी मन्त्री जो स्वस्थ विभाग में कन्ट्रोल रखता था। एक बार मैडीकल कालेज में लैक्चर देने चला गया। और वहां उसने डाक्टरों, प्रोफेसरों, डीन और छात्रों को बताया कि एम. बी. बी. एस. की डिग्री एम. डी. की डिग्री से बड़ी होती है।

"वह क्यों कर,"

"इसीलिए कि एम. बी. बी. एस. में चार शब्दों का प्रयोग होता है और एम. डी. में दो का।"

"ओह भगवान" कहकर गोपाल खिलखिलाकर हंस पड़ा। और हंसते-हंसते दुहरा हो गया। जब उसने हंसी पर काबू पाया तो बोला "खैर। यह बिल्कुल नई बात है। इन कांग्रेसी मन्त्रियों के बड़े-बड़े लतीफे मशहूर हैं। लेकिन इसका जवाब नहीं कि एम. बी. एस. की डिग्री एम. डी. की डिग्री से बड़ी होती है। क्योंकि एम बी. बी. एस. में चार शब्द होते हैं। वाह ! वाह !"

"खैर। मेरा तात्पर्य यह था कि लेडी युवराज कहां तक सनकी है। नहीं जानता। लेकिन इसे मेरी कार पर नजर नहीं रखना चाहिए। क्योंकि यह अंगूर खट्टे सिद्ध होंगे" कपल ने कहा।

"कपल" गोपाल चौंक पड़ा "ऐसी मूर्खता कभी न करना।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यही कि लेडी युवराज से टक्कर लेना उचित नहीं।"

"गोपाल तुम तो यूं कह रहे हो जैसे लेडी युवराज ने मुझे ग्यारह लाख की कोठी बनवाने का आर्डर दिया है, बल्कि खरीद लिया है।"

"कपल ! ग्यारह लाख की कोठी का सवाल नहीं। यह एक कोठी का प्रश्न नहीं" गोपाल ने कहा। "फिर ?" यह तुम्हारे भविष्य का प्रश्न है। और मेरे भी। मैंने कितनी बार कहा है कि युवराज एक मिसाल है। यदि उसने तुमसे एक कोठी बनवाई तो उसके सर्कल के बीच के व्यक्ति तुमसे कोठियां बनवाएंगे। यह ग्यारह लाख नहीं। एक करोड़, दो करोड़ और न मालूम कहां तक चल सकता है। तुम युवराज या लेडी युवराज को नाराज करके सब लोगों को नाराज कर लोगे। तुम तो जवान हो। तुमने भिखमंगों और मिडल क्लास लोगों से काम नहीं करना। तुम्हारी आय, तुम्हारा धन्धा, तुम्हारा भविष्य केवल इन लोगों पर आधारित है। तुम अपना

भविष्य और लाखों की आय केवल एक कार की खातिर नष्ट नहीं कर सकते," गोपाल ने तड़प कर कहा।

"गोपाल तुम तो यूं कह रहे हो जैसे सिमरन महाराजा रंजीत-सिंह के खानदान से है।"

"कपल। पहली बात तो यह है कि तुम्हारा लेडी युवराज को सिमरन नाम से सम्बोधित करना या नाम लेना मुझे कदाचित पसन्द नहीं। यह निःसंकोचता भी अनुचित है। आज मेरी उपस्थिति में और कल किसी और की उपस्थिति में भी तुम लेडी युवराज को बिना झिझक के सिमरन कह सकते हो। और मैं जानता हूं युवराज और लेडी युवराज इसे बिल्कुल पसन्द न करेंगे। कहो कि तुम भविष्य में ऐसी निःसंकोचता से काम न लोगे।"

कपल जानता था गोपाल ने अमरीका में शिक्षा न पाई थी। चमचेबाजी और चापलूसी इसके जीवन का उद्देश्य थे। इसलिए वह इसके साथ इस विषय पर विवाद करना उचित न समझता था। इसलिए उसने हथियार डाल दिए।

"बेहतर।"

"बहुत खूब! मैं जानता था कि अमरीका में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद तुम जानते हो कि अच्छे मैनरज क्या हैं?"

"धन्यवाद।"

"धन्यवाद की बात नहीं। अच्छा अब यह बताओ कि महाराजा रंजीतसिंह की चर्चा कैसे हो गई थी।"

"वह महाराजा रंजीतसिंह था जिसे लैला घोड़ी पसन्द आ गई थी। और इस घोड़ी को पहले इसने खरीदना चाहा पर खरीद न सका। जब असफल रहा तो उसने फौजियों को आदेश दिया कि अफगानिस्तान पर आक्रमण कर दो और सैकड़ों जवान मरवाये, मारने कत्ल व हत्याकांड के उपरान्त वह घोड़ी प्राप्त कर सका था" कपल ने कहा।

"खैर। लेडी युवराज ऐसी हस्ती तो नहीं। और न ही वह रंजीतसिंह के परिवार में है। लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि जो कुछ वह प्राप्त करना चाहे वह प्राप्त कर लेती है।"

"संतान भी," कपल ने चिढ़ाया।

"वह भी।"

"लेकिन चाहती नहीं," कहकर कपल ने दीवार की ओर मुँह किया और इधर ही मुँह रखकर कहा, "मैंने सुना है कि कुछ लोग उसे कितना कहते हैं एक बार उसने पार्लियामेंट की सीट के लिए इलेक्शन भी लड़ा था।"

"और केवल अढ़ाई हजार वोटों से हार गई थी।"

"मुझे सुनकर खेद हुआ" कहकर कपल ने गर्दन घुमाकर गोपाल को देखा।

"खेद की बात नहीं। उसे कदापि खेद नहीं हुआ था,"

"अच्छा यह बताओ लेडी युवराज स्वयं ड्राईव करती है या वर्दी पहने ड्राईवर करता है।"

"स्वयं भी करती है। एक कार उसकी अपनी है। एक कार से तात्पर्य है कि जिसे कोई हाथ नहीं लगा सकता। वैसे कारें भी कई हैं जिन्हें ड्राईवर चलाते हैं। युवराज स्वयं नहीं चलाता। उनका ड्राईवर डबल एम० ए० है। शार्ट हैंड भी जानता है। वह वर्दी धारण किए युवराज जी का ड्राईवर बाडीगार्ड और सेक्रेटरी है। जानते हो उसे क्या वेतन मिलता है।"

"बताओ।"

"ग्यारह सौ रुपए मासिक।"

"हूँ" कपल ने आश्चर्य का प्रदर्शन न किया।

"लेकिन गोपाल मैं एक बात सोच रहा था।"

"कहो।"

"यदि लेडी युवराज स्वयं ड्राईव नहीं करती तो मरसीडीज उसे

क्यों पसन्द आएगी।"

"क्या मतलब ?"

"लोग कहते हैं कि जर्मन मरसीडीज और इंगलिश रोलज रायस मर्दाना कारें हैं। यूरुप और अमरीका में मेरी दृष्टि से कोई स्त्री नहीं गुजरी जो रोलज रायस या मरसीडीज चला रही हो," हलांकि साईज में अमरीकन कारें इनसे बड़ी हैं इन्हें शायद इसलिए मर्दाना कारें कहा जाता है कि इनके इंजन बहुत शक्तिशाली हैं।"

"खैर। मैंने इस बारीकी से इस बात पर ध्यान नहीं दिया। अब तुमने कहा तो मैं मरसीडीज पर विशेप रूप से ध्यान दिया करूंगा। रोलज रायस तो इस शहर की सड़कों पर नजर नहीं आती लेकिन मरसीडीज नम्बर १८० तो आम है। लेकिन मैं एक चीज नहीं समझ सका।"

"क्या"

"लेडी युवराज की सेहत और कद तुमने देखा है।"

"हां"

"क्या इस स्वाथ्य के साथ वह मरसीडीज नहीं चला सकती।"

"गोपाल, अमरीका और यूरुप में तो इससे अधिक स्वस्थ लड़कियां और स्त्रियां वल्कि वहां छः फीट की स्त्रियां आम दिखाई देती हैं।" और यदि स्वास्थ से तुम्हारा अभिप्राय लेडी युवराज का टैनिस खेलना है तो क्षमा करना टैनिस इस देश में अभी शौक है। और अमरीका की स्त्रियां इसकी चैम्पीयन हैं। उनके हाथ और इनकी कलाईयां लेडी युवराज की कलाईयों से अधिक वलिष्ठ हैं। लेकिन वह मरसीडीज नही चलतीं। यहां तक कि वह महिलाएं भी जो गौल्फ की चैम्पीयन हैं।

"मैं कारण नहीं समझ सका।"

"कारण विशेप नहीं। इसके लिए शक्ति की आवश्यकता नहीं। कुछ बातें केवल मर्दों के लिए हैं जैसे कुछ बातें केवल महिलाओं को

ही शोभा देती है। पुरुष करें तो लोग हंसेंगे।"

"उदाहरण स्वरूप।

"लिपस्टिक और ब्रेसरी।"

"ओह्" गोपाल मुस्करा दिया। तुम्हारा मतलब है जिस तरह मूछें मर्दों के चेहरों पर जंचती हैं उसी प्रकार मरसीडीज मर्द चलाते हुए जंचते हैं।

"बिल्कुल।"

'लेकिन कुछ औरतें होती हैं जो बिना मूछ पुरुषों से बेहतर होती हैं।

"और लेडी युवराज इनमें से एक है।

"हां।"

"इस सूरत मैं तुम्हारे परामर्श को याद रखूंगा।"

कपल इस बेतुकी बहस से तंग आ गया था। वह जानता था कि यह बहस कभी खत्म नहीं हो सकती। और यदि हो सकती थी तो केवल यह कह सकता था।

"क्या?"

"यही कि बड़े और सफल आदमियों से टक्कर नहीं ली जा सकती। जो टकराने की चेष्टा करता है वह घाटे में रहता है।"

"निश्चय।"

"बेहतर। ऐसा ही होगा," कपल ने कहा।

'लेकिन वास्तविकता यह न थी। कपल इन इन्सानों में से नहीं था जो चैलेंज से घबरा जाते हैं। यह सही था कि सिमरन बचपन से ही प्रत्येक वह वस्तु प्राप्त करने की अभ्यस्त हो गई थी जो उसे पसन्द आती होगी। बचपन में वह खिलौने प्राप्त करती होगी और अब?—जो उसे पसन्द आ जाए। लेकिन कपल एक शिल्पकार था। वह जानता था कि मकान में दरवाजा कहां रखना है। और खिड़की कहां है। कौन सा कमरा कहां होगा और कौन-सा कहां।

आठ

सिमरन के सम्पर्क में यही तीन महिलाएं थीं जो उसके बहुत निकट थीं। एक ने उसके निकट आने का प्रयास किया लेकिन सिमरन ने एक दीवार खड़ी कर दी।

इन में से दो एक तो उसके यहां आकर टैनिस खेल सकती थीं। लेकिन काफी क्लबों की मैम्बर न थीं। जो किसी कलब की मैम्बर थीं वह टैनिस क्लब की मैम्बर न थीं। सिमरन के सारे दिन एक से थे। इसकी दैनिक चर्या नई होती थी। कुछ बातें कामन तो थीं लेकिन शैडयूल कोई न था। वह एक घंटा टैनिस खेल सकती थी और अढ़ाई घंटे भी खेल सकती थी। वह अपने प्रैस अफसर से रोज मिल सकती थी और रोज नहीं भी मिल सकती थी।

गर्ज कि इसके जीवन में सारे दिन एक से न थे। वह राजनीति में कोई दिलचस्पी न ले सकती थी। लेकिन एक छोटी भी बात को पहाड़ बना कर खड़ा कर सकती थी। इसके लिए वह एजीटेशन शुरू करा सकती थी। घेराव करा सकती थी। पत्थरबाजी करा सकती थी। लोगों का जलूस निकलवा सकती थी और लोगों को गिरफ्तार करा सकती थी।

शुरू-शुरू में कुछ लोगों ने उससे समझने की चेष्टा की। लेकिन जब उसे समझ न सकें तो उन्होंने इस प्रयास को बन्द कर डाला।

पहली बात तो यही लोगों को समझ न आई कि सिमरन ने युवराज से विवाह क्यों किया था यद्यपि वह इसके दोनों बेटों में से किसी के साथ विवाह कर सकती थी।

फिर युवराज अब जवानी या गुरूर पर जीवित न था। बल्कि अब तो हकीमों के नुसखे भी उसकी सहायता न करते होंगे। लेकिन जब करते होंगे तो उस समय भी सिमरन बच्चे की मा क्यों न बनी। इसकी मिलने जुलने वाली स्त्रियों ने भी जब बच्चों की चर्चा की तो सिमरन ने कोई उपयुक्त उत्तर न दिया। इसका उत्तर सदा मौन मौन होता।

"ऐसी क्या जल्दी है?"

"बच्चे तो भगवान के हाथ हैं।"

"मैं कौन-सी बूढ़ी हो गई हू। हो जाएंगे। ऐसे उत्तरों से कोई क्या अनुमान लगा सकता था कि सिमरन सन्तान को जन्म देने योग्य है या नहीं या युवराज सन्तान उत्पन्न कराने योग्य है या नहीं।"

फिर सिमरन गरीब परिवार से न सम्बन्ध रखती थी। एम० ए० पास थी। भगवान ने सूरत अपने हाथ से घड़ी थी। पिता एक बहुत बड़ा और अमीर जागीरदार था। रुपए पैसे की कमी न थी। उसने इस बूढ़े से क्यों विवाह किया था। इसका उत्तर सिमरन ने किसी को न दिया था। ऐसा रहस्य था जो खुल न सकता था। विवाह का रहस्य ही नहीं सिमरन का पूरा जीवन रहस्यमय जो कभी खुल न सकता था।

लेकिन कुछ महिलाओं ने और कुछ पुरुषों ने उसे 'फितना' की उपाधि दे रखी थी। और यह इसके चरित्र का अंश थी। प्रगट में यह ऐसे काम सहानुभूति के तौर पर करती थी या सिद्धान्त के रूप में करती थी। लेकिन इन्हें इस मंजिल तक ले जाती थी कि लोग कराह उठते थे और शान्ति मांगने थे।

फिर जब उसका प्रेम अकसर अखबारों के संवाददाताओं को

व्हिस्की पिला कर ऐसे हंगामे की खबरें अपने रंग में छपवाता तो वह समाचार पढ़कर सिमरन को हार्दिक व मानसिक शांति मिलती थी।

टैनिस की गेम समाप्त हो गई थी। सिमरन अनीता, नीना और सुरुचि छतरी के नीचे बैठी सुस्ता रही थीं।

"सिमरन, तैरना पसन्द करोगी" सुरुचि ने पूछा।

"नहीं। आज टैनिस की गेम ने थका दिया।" सिमरन ने कहा।

"थका दिया है, और तुम्हें" नीना अपनी आदत से विवश रहती थी। और प्रत्येक बात को पकड़ लेती थी।

"क्यों मनुष्य थकता नहीं" अनीता ने पूछा।

"मैं मानव की नहीं सिमरन की बात कर रही हूं," नीना ने कहा।

"सिमरन। क्या सिमरन मानव नहीं" अब सुरुचि की बारी थी।

'मानव है या नहीं, लेकिन दुनियां थक सकती है। सिमरन नहीं,' नीना ने कहा।

"तुम थक गई हो" सुरुचि ने पूछा।

"मैं तो दो बच्चों को जन्म देकर ही थक गई हूं।" नीना ने अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

"दो बच्चे।" अनीता चिल्लाई "यहां बच्चों की चर्चा कैसे आई

"थकने की बात पर।"

"दो बच्चे तो मैंने भी जने हैं, लेकिन मैं नहीं थकी।" अनीता बोली।

"बच्चों को जन्म देकर न थकी हो तो टैनिस खेलकर थक जाती हो," नीना ने कहा।

"वह तो थक जाती हूं" अनीता ने स्वीकार किया इसकी एक

वजह यह भी है कि रात में जिस पार्टी में थी वह अढ़ाई बजे तक चलती रही। तीन बजे हम घर पहुंचे कोई साढ़े तीन बजे सोए होंगे।"

"लेकिन सुरुचि साढ़े तीन बजे सो कर और टैनिस खेलकर भी नहीं थकती" नीना ने कहा।

सिमरन यह सारी बातों का अर्थ समझ रही थी इसकी आंखों पर काला चश्मा था। इसलिए उसके मनोद्गार नहीं जाने जा सकते थे।

"बच्चों की चर्चा आई तो सिमरन मैं भी कुछ कहना चाहती हूं।" सुरुचि ने कहा।

"तुम क्या कहना चाहती हो। तुम रात को देर तक जागने के विपरीत और अब टैनिस खेल कर भी नहीं थकी हो।" अब तुम तैरना चाहती हो। नीना ने अब सुरुचि को पकड़ लिया।

"मैंने तैरने के लिए इसलिए कहा था कि मौसम में गर्मी है। टैनिस खेलने में जो थकावट पैदा हुई है। वह तालाब में नहाने से दूर हो जाएगी, सुरुचि ने कहा और नीना अब तुम अपनी दार्शनिकता बन्द करो।"

"ताकि तुम बच्चों की बात कर सको।"

"बिल्कुल" सुरुचि ने कहा।

"नीना कुछ कहने लगी तो सिमरन ने उसे रोक दिया।"

"नीना" सुरुचि को बात करने दो।

सिमरन की वाणी में ऐसा जादू था कि नीना जो जुबान को काबू में न रख सकती थी, चुप हो गई।

"हां। तो सिमरन बात यह है तुम तो जानती ही हो कि मैं राजधानी पब्लिक स्कूल की मैनेजिंग कमेटी की मैम्बर हू।"

"सब जानते हैं। और नया इलैक्शन लड़ा नहीं गया?" नीना बोली।

"नीना ठीक कहती है" सुरुचि ने बेदिली से कहा उसे नीना का

इस प्रकार बात करना पसन्द न आया था। और यह बात भी छुपी नहीं कि राजधानी पब्लिक स्कूल की छात्रायों की यूनिफार्म सर्वोत्तम है और तमाम बच्चियाँ अमीर घरों से आती हैं। इसलिए उनकी सूरत शकल और नखशिख बहुत अच्छे हैं। स्वास्थ के लिहाज से भी बहुत अच्छी हैं।"

"हर बात में स्मार्ट हैं" अनीता ने टोका।

"बिल्कुल ठीक कहा।"

"तुम यूनिफार्म बदलना चाहती हो। नीना चुप न रह सकती थी।"

"सुनो भाई। सुरुचि ने कहा" अब इन बच्चियों की स्मार्टनैस लोगों को बहुत पसन्द है। लेकिन इसने इसे कभी पसन्द नहीं किया। वह कभी किसी जुलूस में सम्मिलित नहीं होतीं। किसी राजनीतिज्ञ को सलामी नहीं देतीं। वार्षिक उत्सव पर भी हमने कभी किसी राजनीतिज्ञ को नही बुलाया। बल्कि इनके बच्चों को प्रविष्ट करने से भी हिचकिचाते हैं, सुरुचि कह रही थी।

"क्या राजनितिज्ञों को अब तक पता नहीं चला। अनीता ने हंसकर कहा। १९४७ से पहले जिन क्लबों में भारतीय प्रविष्ट न हो सकते थे। अब वहां राजनीतिज्ञ पान की पीक थूकते फिरते हैं और क्राकरी, कटलरी का बेड़ा गर्क कर देते हैं।"

"लेकिन यह अब सब बराबर हैं।" नीना ने कहा।

"खाक बराबर है अनीता चिल्लाई। यह राजनीतिज्ञ हैं जो इन क्लबों में प्रविष्ट हो जाते हैं। क्या हम लोग भी इन राजनीतिज्ञों के क्लबों में प्रवेश करना चाहते हैं?"

"इन्होंने कोई क्लब ही नहीं बनाई," नीना ने हंसकर कहा।

"वह बनाना नहीं जानते। वह बने हुए को खराब करना जानते हैं। वह क्लब में मैनर्ज नहीं सीखते। बल्कि क्लब को अपने आचार व्यवहार सिखाते हैं। वह इंगलिश डाईनिंग टेबिल

बठेंगे। खाना भी काटा-छुरी से खाएंगे। लेकिन काटा छुरी का प्रयोग इस तरह नहीं करेंगे जिस तरह किया जाता बल्कि गलत तौर के से प्रयोग करते हैं और यह प्रगट करते हैं कि इन्होंने कांटा-छुरी को आम वस्तु बना डाला है।"

खैर। अब तो यह बातें इस देश से निकाली नहीं जा सकती। यह राजनीतिज्ञ राज्य करने के लिए रह गए हैं और जो कुछ कर रहे हैं वह प्रत्येक को स्वीकार करना होगा। सुरुचि ने कहा।

"मैं राजनीतिज्ञों पर आपत्ति नहीं कर रही हूँ नीना बोली" मैंने यह नहीं कहा कि राजनीतिज्ञ कांटा छुरी न प्रयोग करें। मैंने कहा है कि यह यदि करना चाहें तो उसके सेवन की पूरी रीति सीख लें। आखिर अब ससार जानता है कि पचानवे प्रतिशत राजनीतिज्ञ अनपढ़ जाहिल और मूर्ख घरानों से हैं। कभी अच्छी शिक्षा इसलिए प्राप्त नहीं की क्योंकि अवसर नहीं मिला। इसलिए कि स्कूल में नालायक छात्रों से प्रथम आते थे। और इसके साथ ही ससार यह भी जान गया है कि इनका दफ्तर का काम आई० सी० एस० या आ० ए० एस० के लोग करते हैं। इनके भाषण भी इनके सैक्रेटरी लिखते हैं। तो फिर काटा छुरी का प्रयोग यदि बैरा से सीख लेंगे तो कौन सी आफत आ जाएगी। आखिर बैरा भी तो तुम्हारे हैं। यदि नहीं सीखना चाहते तो भारतीय ढग से जो इनके पूर्वज जानते थे, इसको अपना लें। यही हाथों से खाए और ऊंगलियाँ चाटें। कम से कम काटा छुरी का अपमान तो न करें।"

"नीना ठीक कहती है।" सुरुचि बोली "वह सब जानती है कि नीना को राजनीतियों से बैर है। वह इन्हें कभी किसी पार्टी में सहन नहीं कर सकती थी। हाँ तो मैं बात कर रही थी कि राजधानी पब्लिक स्कूल की बच्चियाँ बहुत समार्ट हैं। अब इनके साथ किसी ने बहुत बड़ा मजाक किया।

"क्या ?" अनीता बोली।

सुरुचि सिमरन से सम्बोधित थी। और उसे देख रही थी। "किसी फिल्म प्रोडयूसर की फिल्म में स्कूल का सीन था और उसने वह सीन इन बच्चियों पर फिल्मा लिया।

"बस।" नीना ने उसे चुप पाकर कहा।"

"हाँ।" सुरुचि बोली।

"लेकिन यह बात क्या बनी। क्या तुम यह सूचना सुनाना चाहती हो कि यह बच्चियां एक फिल्म में दिखाई जाएंगी।" नीना ने कहा।

"नहीं।"

"फिर।" नीना ने प्रश्न किया।

"सुरुचि। क्या फिल्म प्रोडयूसर ने प्रिंसीपल से आज्ञा ली थी।" सिमरन ने रोबदार स्वर में कहा।

"हाँ।" सुरुचि ने कहा।

"लेकिन मैनेजिंग कमेटी से आज्ञा नहीं ली।" सिमरन ने पूछा।

"बिल्कुल नहीं।"

"सिमरन ने सोचते हुए कहा, दाँतों से होंठ काटे और यह संकेत था कि अब कोई बम गिरेगा।"

"इस दो टके के फिल्म प्रोडयूसर की हिम्मत कैसे हुई कि ऊंचे घराने की बच्चियों को फिल्म एक्सट्रा का रोल दे।"

"बम गिरा।"

"तुम समझ गई हो कि मैं क्या कहना चाहती थी।" सुरुचि ने कहा।

समझ गई हूँ। मैं ऐसे प्रिंसीपल को प्रिंसीपल नही रहने दूंगी। और ऐसी फिल्म को प्रदर्शित न होने दूंगी। सिमरन ने उत्तेजित होकर कहा।

"तो बम फट ही गया।"

यह थी वह बात जिसके आधार पर लोगों ने सिमरन को कितना

की उपाधि दी थी। अब इस छोटी सी बात का बतंगड़ बनेगा।

"लेकिन सिमरन। इसमें ऐसी कौन सी बात है। फिल्म वाले स्कूलों के बच्चों की फिल्म में दिखा देते हैं। सैनिकों की भी सहायता लेते हैं। यह तो कोई विशेष बात नहीं," नीना बोली।

"विशेष बात नहीं। तुमने सुना नहीं कि सुरुचि ने क्या कहा है। राजधानी पब्लिक में ऊंचे घराने की बच्चियां पढ़ती हैं और इसे राजनीति से दूर रखा गया है। तो फिर एक दो टके का प्रोड्यूसर इन शरीफ और खानदानी बच्चियों को फिल्म में प्रस्तुत करेगा। सुरुचि क्या इसकी बच्ची वहां पढ़ती है।" सिमरन ने प्रश्न किया।

"फिल्म के लोगों की बच्चियां और राजधानी पब्लिक स्कूल! मैं वह दिन भी नहीं सोच सकती," सुरुचि ने कहा।

"लेकिन यदि वह प्रवेश पाना चाहें तो तुम प्रतिबन्ध नहीं लगा सकती हो," नीना ने प्रश्न किया।

"प्रतिबन्ध तो नहीं लगा सकते। लेकिन किस को दाखिल करना है और किसको नहीं। यह हम जानते हैं। क्योंकि हमने ऐसे नियम बनाए नहीं लेकिन हम इन्हें निभा रहे हैं," सुरुचि ने कहा।

"नीना, बात वहीं आ जाती है। यदि फिल्म प्रोड्यूसरों को राजधानी पब्लिक स्कूल पसन्द है तो वह एक ऐसा स्कूल पैदा कर लें। इन्हें कोई अधिकार नहीं कि एक अच्छे वातावरण को गंदा करें" सिमरन बोली।

"लेकिन हमारा विधान।"

"वह अपनी जगह है। मुझे किसी ने एक घटना सुनाई थी। जो मुझे बहुत पसन्द नहीं आई। कोई व्यक्ति बस में यात्रा कर रहा था। उसके साथ वाली सीट खाली थी कि एक सफाई कर्मचारी आफिसर इस पर बैठ गया। जो व्यक्ति पहले से बैठा था वह फौरन उठकर खड़ा हो गया। उसको खड़ा होते देखकर एक यात्री बोला।

"साहिव अव कानून बन गया है। सफाई कर्मचारी बस में खाली सीट पर बैठ सकते हैं। यह विधान वन गया है। लेकिन अभी ऐसा कोई विधान नहीं बना जो मुझे विवश करें कि मैं भी वैठूं। यदि मैं नहीं वैठना चाहता तो कोई नियम मुझे विठा नहीं सकता।

"कितनी गहरी वात है। कानून मानव से उसका व्यक्तित्व नहीं छीन सकता।" सिमरन ने कहा।

"लेकिन परिस्थित तो वहुत बदल गई है।" नीना ने कहा।

"कैसे?" सिमरन ने झल्ला कर पूछा।

"शहर के दक्षिणी भाग में जो पोश कालोनियां वनी हैं। जानती हो वहां के निवासी कितनी प्रगति कर गए हैं।

"कितनी?"

"कालेज की लड़कियां, सिगरेट और शराव का सेवन करती हैं। नीना ने कहा," और दुष्चरित्रता की सीमा पार कर गई हैं।

"जानती हो वे कौन लोग हैं।" सिमरन से प्रश्न किया।

"अमीर लोग।" नीना ने कहा।

"हां। अमीर लेकिन काँग्रेस प्रोडक्ट। तनिक इन अमीरों की हिस्टरी तो खोजो। तनिक पता तो करो कि यह लोग इन सुन्दर कोठियों में कहां से आकर वसे हैं। यह वह लोग हैं आज से वीस वर्ष पहले महलों में आकर बसे थे। जिनकी महिलाएं केवल पेटी-कोट पहिनकर और जाघें नंगी करके सरकारी नलों पर कपड़े धोया करती थीं। ताकि सड़क चलते लोग इनकी नग्नता से मनोरंजन प्राप्त कर लें। और घरों में जो एक या दो कमरों पर आधारित होता था यह अर्ध नग्न अवस्था में घूमती थीं। समय के चक्कर ने मोतियाखान, सदर वाजार के इन दुकानदारों को गलत सलत तरीके से रुपया दिया और अब वह दक्षिणी दिल्ली की कालोनियों की सुन्दर कोठियों में रहते हैं। लेकिन यह वह लोग हैं जो वीस वर्ष पहले घरों और सरकारी नलों पर नंगे थे और अब इन कोठियों और कारों में भी नंगे हैं। जिस तरह

हम नंगे नहीं हो सकते इस तरह वह कपड़े नहीं पहन सकते। यदि पहनेंगे तो वह जिनमें वह नंगे नजर आएं।

खूब दृष्टिकोण है। सुरुचि ने कहा।

"लेकिन खेद केवल इस बात का है कि मीना कहती है अधीर आवारा और दुश्चरित्र है। सिमरन ने एक दार्शनिक की भांति कहा, वह कितने गलत लोग हैं जिन्होंने अनगत ढंग से धन कमाया है। अनगत तरीके भी ऐसे जिनके प्रयोग करने से कई निर्दोषों का खून इनकी गर्दनों पर है। इनमें से अधिकांश वह लोग हैं जो नकली माल और नकली लेबल तैयार करते हैं। नकली दवाइयां खाने की नकली वस्तुएं। वस्तुओं पर मेड इन इगलैंड, मेड इन अमरीका लिख कर धन कमाते हैं।"

"लेकिन लोगों का क्या विचार है कि हर दौलतमन्द ने अनगत ढंग से धन कमाया है," नीना ने कहा।

यह गलत है। धन कमाना भी एक कम्पीटीशन है। एक ही काम दो आदमी आरम्भ करते हैं। और इनमें से एक बहुत आगे निकल जाता है। दूसरा रास्ते की धूल में गुम हो जाता है। इसलिए कि दोनों के दिमाग एक से न थे।

अब मैं एक छोटी सी मिसाल देती हूं। अंग्रेजों के समय में भी घूसखोरी होती थी। निर्माण की मिसाल ले लो, ठेकेदारी में घूस चलती थी लेकिन किस प्रकार की।

"किस प्रकार की," अनीता ने टोका।

अंग्रेजों के समय में कभी अफसर यह नहीं कहते थे कि सीमेंट कम डालो। लोहा कम डालो। और जो बचाया जाए उसका ठेकेदार से मिलकर आधा-आधा बांट लो, सिमरन ने कहा।

"फिर।" नीना ने पूछा।

"उन दिनों अफसर कहते थे बिल अधिक बना दो। यदि काम तीन लाख का हुआ है तो बिल तीन लाख बीस हजार का बन॰

दो। तीन लाख ठेकेदार के और दस हजार इंजनीयर के। इस घूस से जो इमारतें बनती थीं वह इतनी मजबूत होती थीं। कि सौ वर्ष काम देती थीं। अब घूंस का स्टैन्डर्ड बदल गया है। अब घूंस खाने वाले घूंस खाना ही नहीं जानते, सिमरन ने कहा।

"खूब।" सुरुचि ने दाद दी।

"अब दौलतमन्दों को ले लो। इस देश में टाटा भी धनाढ्य हैं। लेकिन उसने जो कुछ बनाया है जो काम शुरू किया उसका एक स्टैंडर्ड था। इसके कारखानों, मिलों फैक्टरियों और दफ्तरों में काम करने वालों को अच्छे वेतन मिलते हैं। अलाउन्स और बोनस मिलते हैं। औषधि सम्बन्धी सुविधाएँ प्राप्त हैं अफसरों को फ्री लंच मिलते हैं इसके विपरीत टाटा अधिक से अधिक कमा रहा है," सिमरन ने कहा।

"अब अन्तर समझ आया।" सुरुचि ने कहा।

"अब एक और उदाहरण लो," सिमरन ने कहा।

एक पार्टी है जो होटल के धन्धे में बहुत सफल है। इसलिए नहीं कि वह बेईमान है। इसलिए कि वह स्टाफ ऐसा ट्रेंड रखती है जो कस्टमरों की सर्वोत्तम सेवा करते हैं। और कस्टमर खुश होकर उनके ही होटलों में रहना चाहते हैं। इनकी गिनती होटल बिजनिस में चोटी पर है। वैजीटेबिल की तो दर्जनों मिलें बनाती हैं। एक ब्रांड की अधिक माँग क्यों है क्या शेष ब्रांड बनाने वाले गरीब हैं।

"बहुत खूब" नीना ने कहा।

"बहुत खूब तो यही बात राजधानी पब्लिक स्कूल के बारे में कही जाती है। राजधानी स्कूल का एक स्टैंडर्ड है। एक अस्तित्व है। और किसी को कोई अधिकार नहीं कि उसे सबके सामने प्रस्तुत करें" सिमरन ने का।

"लेकिन सिमरन। छोटी-छोटी बच्चियों पर एक सीन फिलमा लिया गया तो क्या बन सकता है।"

सिमरन ने कहा।

"वह किस तरह" नीना ने कहा।

"कहने को तो लोग कहते हैं। अखबारों में सूचनाए छपती हैं कि फिल्म अभिनेत्रियां एक एक फिल्म के लाखों लेती हैं। इनके पास लाखों, ब्लैक के जमा हैं। वह बड़ा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करती हैं। एक-एक के पास दस दस पन्द्रह कारें हैं। अनगिनत जवाहरात हैं। फारन में रुपया है। और इन सब के विपरीत एक फिल्मी अभि-नेत्री नहीं जो विक्री योग्य न हो। अब बताओ इन लाखों को कमाने और जमा करने के उपरान्त क्या वह इस कलंक से अपना आंचल बचा सकती हैं।"

"नहीं" नीना बोली।

"तो नीना। याद रखो धन ही मानव को अमीर नहीं बनाया, बल्कि इसको प्राप्त करने के साधन भी अमीर बनाते हैं। जो नकली वस्तुएं बनाकर या मेड इन इंगलैंड छाप कर अमीर बनते हैं, उन्होंने अपने दिमाग से काम नहीं लिया। उन्होंने कारोबार को कम्पटीशन नहीं समझा केवल एक जुआ समझा या चोरी डकैती। इसलिए उसकी इस हरकत को मैं क्षमा नहीं कर सकती। और न ही तुम्हें कहूंगी कि उसे क्षमा करो" सिमरन ने सुरुचि से कहा।

"बेहतर। मैं कल ही मीटिंग बुलाऊंगी। और उसे स्कूल से निकालने का रेजोल्यूशन पास करती हूं।" सिमरन ने कहा।

यह था सिमरन का चरित्र। इसमें वह कहां तक सच्ची थी यह तो समय बताएगा लेकिन ऐसी ही बातों के आधार पर इसका सर्कल इसे कितना कहता था।

सुरुचि यदि इसे टालना चाहेगी तो सिमरन इसे आड़े हाथों लेगी और जब तक प्रिंसीपल को नौकरी से वंचित न करा देगी उसे चैन न आएगा। यद्यपि न तो इसकी बच्ची वहां पढ़ती थी और न ही उसे प्रिंसीपल से कुछ हानि पहुंची थी।

नौ

पसन्द की कार आ चुकी थी। वह स्वयं बम्बई जाकर इसे गोदी से निकाल कर और ड्राइव करके लाया था।

लेकिन उसने शायद ठीक कहा था। रोल्स रायस और मरसीडीज की बनावट कुछ ऐसी है कि एक माडल दूसरे से भिन्न दिखाई नहीं देता। और न ही यह कामिनी है। जब कामिनी नहीं तो इसमें कामिनी की चमक-दमक और शोखी कैसे हो सकती है।

पुरुष कितना ही कीमती सूट पहन ले वह केवल सूट होगा। मेरा मतलब उस व्यक्ति से नहीं जो बैंड मास्टर हर प्रकार के चमकते दमकते सूट पहनते हैं। लेकिन स्त्री ने साधारण सी काटन की सूती धोती भी धारण की होगी तो उसका भिन्न आकर्षण बन रहा होगा और यदि उसने भड़कीली वेशभूषा पहन रखी होगी तो हजार गज से आँखों का केन्द्र बन जाएगी।

कुछ यही अन्तर अमरीकन कारों के साथ है। इनके माडल, सूरत व शकल सुन्दर है। और बनावट कुछ ऐसी है कि वह दूर से ही आकर्षण का केन्द्र बन जाती है।

अमरीकन कारें जवान लड़कियों की भांति अपनी ओर आकर्षित करती हैं। लेकिन मरसीडीज और रोल्ज़ रायस इस तरह

भड़क से सर्वथा भिन्न हैं।

यही दशा कपल की मरसीडीज की थी।

कई दिनों तक लोगों की दृष्टि का केन्द्र न बनी। मरसीडीज नम्बर १८० या २२० कुछ विशेष अन्तर नहीं था।

प्रत्येक नगर में अमरीकन कारों के उपरान्त यदि जनून था तो वह वाकसवैगन और टीयोटा का। मरसीडीज तो डल गाड़ी थी।

यूं भी कपल की कार का रंग चार कोल गहरा था। लाल,पीला नीला या भड़कीला न था। कार न रंगीन थी। एक दिन गोपाल उसके साथ था और वह नगर के बाहरी इलाके से लौट रहे थे।

"कपल जब तक मनुष्य इस गाड़ी में न बैठे उसे पता ही नहीं चलता कि इसकी ड्राईविंग कैसी है।

"मैंने उस दिन भी कहा था गोपाल के यह गाड़ी मर्दाना है। औरतों को इस कार से कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती," कपल ने हंस कर कहा।

"लेकिन इस कार का जवाब नहीं, चलती है तो ऐसे अनुभव होता है। जैसे मानव हवा के कन्धे पर उड़ रहा हो" गोपाल ने कहा।

"तुलना बुरी नहीं।"

"यह पैट्रोल से चलती है।" गोपाल आज पहली पार इस मरजी-डीज में दिलस्पी ले रहा था।

"डीजल से भी। वैसे इस कार के बारे में कहा जाता है कि यह डीजल पेट्रोल से चल सकती है। और यदि आवश्यकता पड़े तो मिट्टी के तेल से भी चल सकती है।"

"और मिट्टी का तेल न हो तो सरसों के तेल से भी चल सकती है।" गोपाल ने व्यंग कसा।

"हां। बल्कि कहने वाले तो हंसी में कह देते हैं कि कुछ भी न हो तो पेशाब से चल सकती है।" कपल ने हंस कर कहा।

"लेडी युवराज की दृष्टि से नहीं गुजरी अभी तक गोपाल ने

कहा।

"अभी तो उसकी दृष्टि का शिकार नहीं हुई। और न ही होगी।"

"क्यों ?"

"इसका रंग उसे पसन्द नहीं आएगा।"

"रंग अच्छा भला तो है। चारकोल ग्रे।"

"लेकिन लेडी युवराज जैसी स्त्रियां चारकोल ग्रे की साड़ी नहीं पहन सकती और न ही प्यार रख सकती हैं। कपल ने मुस्करा कर कहा।

"वैसे उसने देखा है।"

"मैं कई बार इस कार में उसकी कोठी पर गया हूँ और वहाँ घंटों पार्क रही है। कपल ने कहा यह सच था। कपल कई बार गया था लेकिन उसने डर के मारे कार सदा कोठी से दूर किसी दूसरी कोठी के आगे पार्क की थी। ताकि यदि मिसिज़ की दृष्टि पड़े भी तो वह यही समझे कि पड़ोसियों की कार है। उस दिन गोपाल से बातों के बाद उसने अपने तौर पर मारकीट में पूछताछ की तो उसे पता चला कि उसकी कार बहुत कीमती है। और देश में ऐसी कुछ ही कारें होंगी। इसलिए वह इसका मालिक बनकर स्वयं को महत्वपूर्ण समझता था उसे एक तसल्ली थी। वह यदि धन से नहीं तो कार के मामले में इन करोड़पतियों से टक्कर ले सकता था।

"आश्चर्य है। गोपाल बोला।" लेडी युवराज की दृष्टि इतनी खराब नहीं। वह तो प्रत्येक नई वस्तु को दो मील से देख सकती है।

"हो सकता है देखा हो लेकिन पसन्द नहीं आई हो।"

"पसन्द का प्रश्न नहीं।"

"फिर ?"

"जनून का सवाल है। उसे पता चला कि उस किस्म की कारें सारे देश में दो चार हैं तो वह उसे फौरन खरीद लेगी। जरूरत के लिए नहीं। केवल नुमाइश के लिए—गोपाल ने कहा।

"ख़ैर। अभी ऐसी कोई वात नहीं—कपल ने कहा। लेकिन व
अब तक ऐसा कोई बहाना तलाश न कर सकता था कि कल्पना कर
जब ऐसी बात पैदा हो जाए तो वह किस प्रकार सिमरन को का
न वेचे।

"तुमने लेडी युवराज से कहा है कि कोठी किस मंजिल पर है।

"नहीं।"

कम से कम इन चोर दरवाजों और चोर रास्तों को जो तुम
पैदा किए हैं इन्हें एक दिन उसे दिखा तो दो।

"नहीं गोपाल अभी वह समय नहीं आया। दीवारें और दरवा
अभी समझ नहीं आ सकते। जरा दरवाजे बन जाएँ और दीवारों औ
छतों पर पलस्तर हो जाए फिर उसे एक दिन बुलाऊंगा।"

ख़ैर एक वैड रूम का दूसरे वैड रूप और ड्राईंग हाल और डाई
निंग हाल से जो रास्ता रखा है वह बिल्कुल अनोखा है। औ
निराला है। सचमुच तुमने उस दिन ठीक तुलना की थी कि मका
भी ऐसे शहर की भांति है। जिसका ट्रैफिक यदि जाम हो जाए तो
शहर का शासन विगड़ जाएगा। और यदि मकान में एक बड़े रूम
के वासी दूसरे वैड रूम से टकरा जाएं या नौकर मालिकों से टकरा
तो ट्रैफिक जाम हो जाएगा।

"गोपाल मैंने तो कोशिश की है कि मेन हाल में यदि बीस जो
डांस कर रहे हों तो इतनी जगह थोड़ी है कि वह एक दूसरे से न
टकराएं। वह कितने कदम लेंगे और कौन सा डांस करेंगे।"

मैंने इन वातों का हिसाब रखा है। और तुम जानते हो कि यह
काम केवल वह आरकीटेक्ट कर सकता था जो स्वयं डांस जानता
हो।

"मैं समझता हूँ। यह कोठी तुम्हारी हुनरमंदी का नमूना होगी।
और इसके बाद तुम दर्जनों कोठियाँ बना डालोगे। लेकिन इसकी
कहानी अपनी जगह होगी"—गोपाल ने इसकी प्रशंसा की।

"गैर कोशिश तो मेरी यही है कि यह कोठी एक कहानी ।। बन रह जाए। मैं तुम्हारे विश्वास को नहीं तोड़ूंगा। कमल ने विश्वास दिलाया।

"मुझे तुमसे यही आशा है।"

"आज कोठी पर चलना है?" कमल ने पूछा।

"विशेष काम तो नहीं।" गोपाल ने कहा। मैंने मुंशी को हिदायत दे रखी है फिर यदि कहीं किसी सलाह की आवश्यकता पड़े तो तुम दे सकते हो। मुझे एक और काम है।"

"गैर मैं भी वहां चार बजे से पहले नहीं पहुंच पाऊंगा और सब मजदूर पांच बजे छुट्टी कर देते हैं।"

"मैं छः बजे तक रहता हूं।"

"सवा छः" कमल ने पुष्टी की।

"चलो सवा छः ही सही।" क्या तुम Site (साईट) पर जा रहे हो।"

"हां। मैं तो एक चक्कर लगाऊंगा।"

"फिर मुझे इंटरनैशनल होटल के अन्दर उतार देना।" कार दौड़ती रही।

कमल जब निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा तो साढ़े पांच बज चुके थे। मजदूर और राज जा चुके थे। केवल गोरखा चौकीदार ड्यूटी पर था।

कमल ने कार पार्क की। और नीचे उतर कर उसने कोठी को देख कर गहरा सांस लिया।

यह भारी कदमों से कोठी की ओर बढ़ने लगा। धूल उसके बूट पर चढ़ी थी और जब वह यहां से जाएगा तो बूट पर केवल मोटी तह होगी। निश्चित एक सफल व्यक्ति की यही निशानी है कि वह पसीना और मिट्टी के कितने निकट है।

गोरखा ने उसे सलाम किया।

"मुन्शी है।" कपल ने सलाम कर जवाब देते हुए कहा।

"जी नहीं। वह गया।"

"हूं।"

"अन्दर मेम साहिब हैं।"

"मेम साहिब !" कपल चौंक पड़ा "कौन मेम साहिब"

"अपनी मेम साहिब।"

"इन्हें कौन···।"

"लेकिन मासूम गोरखा इन्हें भी व्याख्या न कर सका। इसलिए कपल मेम साहिब की तलाश में चल पड़ा।

कोठी के अपूर्ण कमरों में वह मेम साहिब को तलाश करने लगा। इन कमरों में मिट्टी सीमेंट, चूना की महक आ रही थी। लेकिन लैवंडर या पाऊडर की महक न थी।

कपल एक कमरे से दूसरे कमरे में गया। लेकिन इन अधूरे कमरों में कहीं ईंटो के ढेर पड़े थे। कही बल्ली या तख्ता पड़ा था। कहीं खाली बोरीयां, लेकिन मेम साहिब का नाम निशान न था।

आखिरी बैड रूम में वह प्रविष्ट हुआ तो वहां पानी की तराई से कमरे में सील थी।

और इसके आश्चर्य की सीमा न रही। कच्चे फर्श पर दो ईंट रख कर सिमरन बैठी थी।

सिमरन ने दृष्टि उठाकर उसे देखा लेकिन बोली नहीं।

कपल चल कर उसके पास चला गया।

"आप ! आप कब आईं।" कपल ने प्रश्न किया।

"पन्द्रह बीस मिनट गुजरे।" सिमरन के स्वर में ठहराव था।

"लेकिन आपने मुझसे बिल्कुल जिक्र तक नहीं किया। कि आप इसका निर्माण कार्य देखना चाहती हैं वरना मैं यहां आपका स्वागत करता।"

"मुझे वह पसन्द न था।"

"लेकिन आप बैठी कहां हैं।"

"ईंटों पर।"

"बेहतर है मैं आपके बैठने के लिए कुछ मंगाता हूं" कहकर कमल चल पड़ा।

"मिस्टर कमल" सिमरन ने पुकारा।

"कमल रुक गया। उसने घूम कर देखा।"

"जी।"

"भगवान के लिए कोई तमाशा न खड़ा करो।" सिमरन के स्वर में याचना थी।

"तमाशा।"

"हां।"

"लेकिन——।"

"मैंने कहा ना। मैं कोठी देखना चाहती थी। चली आई। यदि मुझे तमाशा पसन्द होता तो मैं सूचित कर देती।"

"लेकिन ईंटों पर बैठना।"

"छोड़ो इन बातों को। अभी तुम्हारे आने से पहले मैं छः वर्ष की बच्ची थी। और इसी बचपन में खोई हुई थी।

"क्या मतलब ?"

"जब मैं छः वर्ष की बच्ची थी तो हमारी कोठी के साथ कोठी बनना शुरू हो गई। हर बच्चे को मिट्टी से प्यार होता है। और मुझे भी था। मैं ईंटों से खेलना चाहती थी। लेकिन आया हर समय सिर पर सवार रहती थी। मिट्टी की सौंधी सौंधी खुशबू नाक में आती तो जी करता कि गीली मिट्टी का घरौंदा बनाऊं।"

"ओह" कमल ने गहरा सांस लिया।

"मैं नहीं जानता था कि सिमरन का एक रूप यह भी है।"

"हां। और आज अचानक मेरे दिल में उमंग पैदा हुई कि गीली मिट्टी को तलाश करूं और यहीं आ गई।"

"मैं नहीं जानता था कि आप नावलों की बातें भी कर सकती हैं" कपल ने कहा ।

"क्यों" अच्छा तुम खड़े क्यों हो । बैठ जाओ ।

कपल इस आमंत्रण को ठुकरा न सका । उसने इधर उधर देखा एक खिड़की में एक ईंट पड़ी थी । और वह उसे उठा लाया और कच्चे फर्श पर रख कर उस पर बैठ गया ।

"गोरखा ने कहा था कि मेम साहब आई हैं । लेकिन मैं सोच भी न सकता था कि आप आई होंगी ।"

"मैं अचम्भा देना चाहती थी ।"

"लेकिन बाहर आपकी कार भी नहीं ।"

"कार ड्राईवर ले गया ।"

"क्या वह लौट कर आयेगा ?"

"नहीं ।"

"लेडी युवराज । मेरा तो अब यहां आने का इरादा भी न था यदि मैं न आता तो आप किस तरह यहां से जातीं ।"

"पैदल चल कर ।"

"पैदल । लेकिन यहां से डेढ़ मील पर टैक्सी स्टैंड है । और पास में कोई फोन नहीं जो टैक्सी बुला सकतीं या कोठी से कार ।"

"कुछ अन्तर नहीं पड़ता" राजे महाराजे और महारानियां भी जब तीर्थों पर जाते हैं तो कुछ तीर्थों पर पहुंचने के लिए उन्हें भी पैदल चलना पड़ता है । और वह चल रही थी ।"

"लेकिन तीर्थों की—।"

"और बात है" कहकर सिमरन हंस पड़ी । कपल ने पहली बार सिमरन की हंसी की आवाज सुनी थी, जो सिमरन की भांति सुन्दर थी ।

"मैं आपको कोठी दिखाऊं ।"

"नहीं । मैं देख चुकी हूं ।"

बनाता रहा है। उदाहरण स्वरूप—।"

"उदाहरण स्वरूप।"

"मैं आपके बैडरूम की दीवारों पर जानती हैं कौन सा रंग करवाऊंगा।"

"कौन सा?"

"जो रंग आपकी आंखों का है।"

"ओह। मैं नहीं जानती थी कि तुम कलाकार भी हो।"

"लेडी युवराज। सत्य तो यह है कि जिस तरह जर्नलिस्टों को लेखक नहीं कहते हैं। उसी तरह आरकीटैक्ट को कलाकार नहीं कहते। यद्यपि जर्नलिस्ट लेखक के बहुत निकट है। और एक शिल्पकार भी कला के बहुत निकट है। वह बात अलग है कि यह ईंट, सीमेंट, लकड़ी और मार्बल में रंग भरता है" कपल ने कहा।

'तुम तो अच्छे भले लेखक बन सकते थे।"

"और बनकर भूखा मरता।"

"ओह" कहकर सिमरन ने गहरा सांस लिया "क्षमा करना यदि तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुंची हो तो।"

"जी नहीं, कपल ने कहा। लेकिन उसका मस्तिष्क चकरा गया। सिमरन और किसी की भावनाओं की चिन्ता करे। ऐसी बात तो उसके मस्तिष्क में आ भी न सकती थी।

"कब तक तैयार हो जाएगी?"

"अभी तो समय लगेगा। शायद चार मास। हां मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि आप आ गई हैं तो कोई खास चीज बनवाना पसन्द करेंगी।"

"नहीं जिस तरह राज साहिब ने पूर्ण रूप से इस कोठी का निर्माण कार्य तुम पर छोड़ रखा है। उसी प्रकार मैं भी आक्षेप न करूंगी।"

"फिर भी मैं केवल बरामदे के फर्श के बारे में जानना चाहता था। कमरों में तो मारबल विषम होगा क्या बरामदे में मारबल के बड़े बड़े टुकड़े पसन्द करेंगी। यदि टुकड़े पसन्द करेंगी तो सफेद या रंगदार।"

सिमरन ने कोई उत्तर न दिया।

"इसे चुप पाकर कपल बोला" फिर कभी बता दीजिएगा कोई जल्दी नहीं।"

सिमरन ने अब भी उत्तर न दिया।

कपल को यूं लगा मानो सिमरन एकान्त चाहती थी। इसलिए वह भी चुप हो गया। उसने उसकी विचारधारा को भंग करना उचित न समझा। यह तो स्पष्ट था कि सिमरन अपनी दुनिया से दौड़कर यहां एकान्त खोजने आई थी। यह वह स्थान था जहां उसकी दुनिया के लोग उसे खोज न सकते थे। बेरा न थे। सैक्रेटरी न थे। फोन न थे, मजदूर और राज जा चुके थे। और इस निर्माणाधीन कोठी में उसे वह शांति प्राप्त हो रही थी जिसकी खोज में वह यहां आई थी।

वह कोठी देखने न आई थी। उसका जीवन कोठियों में कटा था। उसने हर तरह की कोठियां देखी थीं। इस देश में भी और विदेशों में भी। इस लिए यह कोठी बन जाएगी और सुशोभित भी हो जाएगी तब भी उसे कोई दिलचस्पी न होगी।

क्या सिमरन के अन्तस्थल में कोई और नारी भी थी जो कुछ सिमरन नजर आती थी तथा यह सिमरन थी या एक सिमरन वह भी थी जो इस नजर आने वाली सिमरन के भीतर थी और दृष्टिगोचर न थी। या जिसे दिखाई दे जाने वाली सिमरन ने अपने भीतर छुपा रखा था।

सूर्य अस्त हो चुका था। और अंधकार रेंगता हुआ बढ़ रहा था। अब एक ही क्षण में सारा नगर अंधकारमय हो जाएगा।

और यहां तो प्रकाश का भी प्रबन्ध न था। प्रकाश के बिना वह वहां इसके पास बैठा रहे तो बात फैल सकती थी। यद्यपि गोरखा कभी बात न करेगा लेकिन वह इतने मासूम होते हैं कि सच्च बोलना धर्म समझते हैं।

कपल की सिगरेट पीने की इच्छा प्रबल हुई तो वह समझ न पाया कि सिमरन की उपस्थिति में पीए या न पीए। उसने अनुमति लेना उचित न समझा और सिगरेट निकाल कर होंठों को लगा लिया। माचिस की तीलियों की आवाज ने सिमरन को चौंका दिया।

"एक सिगरेट मुझे भी दो।"

अंधकार में कपल ने सिगरेट बढ़ाया। सिगरेट लेने और देने में दोनों के हाथ टकराए। लेकिन इस एकान्त ने कोई सनसनी न पैदा की।

कपल ने माचिस जलाई और उसकी रोशनी में सिमरन को देखा। और माचिस बढ़ा दी। सिमरन ने कड़ा कश खींचा और सिगरेट सुलगा लिया। कपल ने भी अपना सिगरेट सुलगा लिया।

अन्धेरे में सिगरेटों की आंच नजर आ रही थी—धुंआ फैलता रहा—सिमरन अपने विचारों में और कपल अपने विचारों में डूबते रहे।

जलते जलते सिगरेट खत्म हो गया। सिमरन ने उसे फर्श पर मसल कर बुझा दिया।

अब कपल यह अनुमान न लगा सका कि सिमरन ने कितना बड़ा सिगरेट बुझाया है। निश्चित बात है कि उस पर लिपस्टिक चिपक गई होगी। सुबह किसी ने वह सिगरेट देखा तो क्या सोचेगा।

लेकिन दूसरे क्षण उसने अपने विचारों को झटका दिया। यह भारत था और यहां के राज मजदूर मुंशी जासूसी न जानते थे। और न ही वह बुझे हुए सिगरेट पर लिपस्टिक तलाश करते फिरते।

"रात उतर आई है। आप किस तरह घर जाएंगी" कपल इस

नीरवता से तंग आ गया था।

"तुम किस तरह जाओगे ?" सिमरन का प्रश्न था।

"ओह" कपल संभल गया। क्या वह बता दे कि उसके पास कार है। अब तक तो इस कार को सिमरन से दूर रखता रहा था। अब उसे बता देगा या उसे साथ ले जाएगा तो फिर कार को कैसे छुपा सकेगा।

एक तरीका तो यह था कि सिमरन के साथ पैदल चला जाए जहां से टैक्सी मिले ले तो ले। और गाड़ी कल आकर ले ले।

"गोरखे को भेजकर आपके लिए टैक्सी मगा देता हूं।"

"लेकिन तुमने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया।"

"किसका ?"

"तुम किस तरह जाओगे ?"

"मेरे पास कार है।"

"और तुम मुझे टैक्सी में भेज रहे हो क्या मैं इस योग्य नहीं कि तुम्हारी कार में बैठ सकू।

"आप तो इस योग्य हैं लेकिन कार आपके योग्य नहीं" कपल ने बच कर निकल जाना चाहा।

"खैर। टैक्सी से बेहतर होगा।

"ओह हां" कपल को कहना पड़ा।

"जानते हो मैं क्या सोच रही थी।"

"जी नहीं।"

"कहीं से व्हिस्की के दो पैग मिल जाए।"

इतनी कमजोरी। कपल ने सोचा और ऐसी कमजोरी के लिए लेडी युवराज उसे राजदार बना रही थी। वह शाम से जो कुछ कर रही थी। पहले ही रहस्यपूर्ण था। और अब व्हिस्की की चर्चा करके उसने और भी रहस्यपूर्ण बना डाला था।

"यहां कहां मिल सकती है। फिर यदि मैं जाकर ले आऊं तब

भी गिलास, सोडे, वर्फ और मेज कुर्सी का प्रवन्ध न हो सकेगा।"

"मैं ऐसे ही पी लूंगी।"

"लेडी युवराज" कपल चौंक कर वोला आप क्या कह रही हैं? चौकीदार यदि किसी से कह दे तो संसार सौ वातें करेगा। आप एक साधारण नारी नहीं जो ऐसी हरकतें कर सकती हैं।

"लेडी युवराज" सिमरन गुर्राई "हां लेडी वनने के वाद सभ्यता व संस्कृति की दीवारें कितनी ऊंची हो जाती हैं" कहकर सिमरन ने गहरा सांस लिया।"

"तो तुम भी दुनियां से डरते हो?"

"हर अच्छा मानव दुनियां से डरता है।"

"क्यों नहीं। हर अच्छे मानव को डरना चाहिए एक स्त्री जहां चाहे जिस दशा में चाहे व्हिस्की को पीने की इच्छा पूर्ण कर सकती है लेकिन एक लेडी नहीं—

"मैं चुप रहना पसन्द करूंगा" कपल ने कहा।

"इसलिए कि तुम मेरे पति से डरते हो इसलिए कि मेरे पति की कोठी वना रहे हो और वह तुम्हारी जीविका है।"

"मैं अव भी कुछ न कहूंगा।"

"स्वामीभक्त" सिमरन ने उसे चिढ़ाया।

"लेडी युवराज। आईए मैं आपको कोठी पर उतार दूंगा" कपल ने कहा और खड़ा हो गया।

"लेडी युवराज यदि इन्कार कर दे।"

"तो मैं क्या कर सकता हूं?"

"क्या तुम लेडी युवराज को इस खंडहर में इस गैर आवाद हिस्से में जहां दूर दूर तक टैक्सी नहीं मिलेगी छोड़ कर जा सकते हो?" सिमरन ने इसकी कमजोरी पकड़ ली।

कपल चुप रहा।

"कहते हैं चुप्पी आधी स्वीकृति होती है। यानी तुम चुप रह कर

कह रहे हो कि मुझे इस दशा में छोड़ कर जा सकते हो" सिमरन ने कहा और हल्की सी हंसी पैदा की।

"जी नहीं।"

"फिर तुम लेडी युवराज को यह बताना चाहते हो कि क्या सच्च है और क्या झूठ है" सिमरन ने प्रश्न किया।

"जी नहीं।"

"अब आए हो रास्ते पर। फिर क्यों कहा था कि दुनियां क्या कहेगी। जानते नहीं कि बडे आदमियों के बारे में दुनियां जो कहती है। वह गलत होता है। और जो सच्च होता है वह दुनिया जानती ही नहीं", सिमरन ने कहा।

"स्टेटस में शिक्षा पाने वाला शिल्पकार अभी तक ससार की दकियानूसी बातों से डरता है। अच्छा शिल्पकार ! हाथ दो ताकि मैं उठ सकू" सिमरन ने कहा।

"हाथ दो ताकि मैं उठ सकूं" यह वाक्य ध्यान जनक था। फिर सिमरन ने कपल न कहा था बल्कि शिल्पकार कहा था। उठ सकूं। लेकिन कहां से उठ सकूं। कौन सा पतन था जहां से वह उठना चाहती थी।

कपल ने हाथ बढा दिया। अंधेरे में सिमरन ने उसके हाथ मे हाथ दिया। कपल ने पकड़ मजबूत कर दी। और सिमरन एक झटके के साथ उठ गई। सिमरन ने जिस प्रकार का झटका दिया था यदि हाथ की पकड दृढ न होती तो सिमरन उठते हुए गिर जाती। फिर न जाने क्या मालूम क्या तमाशा खड़ा कर देती। और यदि उसने पांव पर जोर न दिया होता तो सिमरन के इस झटके की ताकत से वह उठ न सकती बल्कि कपल उस पर जा गिरता।

वह खड़ी हुई तो इसके बिल्कुल पास थी। इतनी पास कि उसकी उभरी हुई छातियां उसके वक्ष से स्पर्श कर रही थी। इसका सांस उसके नथुनों में घुस रहा था।

"आप जिस तरह झटका देकर उठी है यदि मेरे पांव मजबूत न होते तो मैं गिर पड़ता।" "क्या मेरे ऊपर गिरते", कहकर सिमरन की हंसी की आवज बिखरे। कमरे में बिखर गई।

"आईए।"

"तुम क्लास तो नहीं हो गए हो" सिमरन ने पूछा।

"नहीं ! आप क्यों पूछ रही हैं।"

"तुम्हारा सांस उखड़ चुका है।"

"लेडी युवराज" कपल ने चीख दबाते हुए कहा।

"मत भूलिए कि मैं हाड़-मांस का इन्सान हूं।"

"काश होते तो मैं यह आभास क्यों दिलाती। आओ चलें शिल्पकार साहब" कहकर सिमरन बढ़ दी।

कपल को समझ ही न आया कि सिमरन क्या कह गई है। उसके मस्तिष्क ने काम करना बन्द कर दिया था। इसकी समझ में ही न आ रहा था कि सिमरन क्या कर रही थी। क्या कह रही थी। यह जो कुछ हो रहा था यह वास्तविकता से बहुत दूर था।

लेकिन जब वह बाहर की ओर बढ़ रहे थे तो उसे इन शब्दों के अर्थ समझ आने लगे।

"उसने कहा था" लेडी युवराज मत भूलिए कि मैं हाड़ मांस का इंसान हूं ?

और सिमरन ने क्या कहा था "काश होते तो मैं आभास क्यों दिलाती। फिर क्या कहा था शिल्पकार साहब।"

"ओह" कपल बड़बड़ाया। और उसने गहरा सांस लिया। इस गहरे सांस की आवाज सिमरन ने सुन ली।

वह कोठी से निकल आए थे। बाहर अंधेरा बढ चुका था। चौकीदार एक पीले रंग की रोशनी फैलाने वाली लालटेन के पास बैठा था।

"आपने कुछ कहा था।"

"याद नहीं" सिमरन ने क्रोध में कहा।

"क्या आप नाराज़ हो गई हैं ?"

"नहीं ! आपकी कार कहाँ खड़ी है मिस्टर कपल" सिमरन नि:संकोच ने सकोच पर उतर आई। शिलकार की जगह कपल भी न रहा। बल्कि तुम की जगह आप और कपल की जगह मिस्टर कपल—अब भलाई इसी में थी वह चुप रहे वरना परिस्थिति बिगड़ सकती थी।

वह चुपचाप चलता रहा। और जाकर कार के पास खड़ा हो गया। उसने जेब से चाबी निकालकर कार खोली फिर इधर की खिड़की खोल दी।

"बैठिए।"

सिमरन भीतर जाकर बैठ गई।

"कपल स्टीरिंग व्हील पर जा बैठा" कार स्टार्ट करूं ?"

"लेकिन ठहरिए।"

कपल ने सैल्फ़ पर उंगली रखी थी, वह हटा ली। और सिमरन को अन्धेरे में प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। उसका चेहरा तना हुआ था। और होंठ तो उसने दांतों में भींच रखे थे।

"एक सिगरेट मिल सकेगा ?"

"जरूर ! जरूर ! आप तो सकोच से काम ले रही हैं। लेडी युवराज। आप आदेश दे सकती हैं। कपल ने जेब से पैकेट निकाल कर बढ़ाया।

"हां दुनिया को आदेश ही पसन्द है" सिमरन ने कहा और पैकेट ले लिया।

सिगरेट निकालकर उसने जैसे ही होंठों को लगाया माचिस का शोला कपल ने बढ़ा दिया।

सिमरन ने सिगरेट का कश खींचा और धुआं छोड़ दिया। कश खींचते समय जो हल्की सी रोशनी हुई थी इसमें कपल ने देखा

कि सिमरन का चेहरा तना हुआ था।

कपल ने सिगरेट न सुलगाया। वह इस प्रतीक्षा में था कि सिमरन आज्ञा देगी तो वह कार स्टार्ट करेगा।

आखिर सिमरन बोली "किसकी प्रतीक्षा है।"

"आपके आदेश की।"

"तो गाड़ी चलाओ" सिमरन ने कठोर स्वर में कहा।

कपल ने कार स्टार्ट की और गियर में डाल दी। कार तेजी से आगे बढ़ी। और कुछ सैकिन्ड में हवा से बातें करने लगी।

कपल की समझ में न आ रहा था कि इस सफ़र को जल्दी से खत्म कर दे। या अधिक से अधिक देर लगाए। बात सीधी थी कि सिमरन ने स्वयं को अर्पण किया था जिसे कपल समझ न सका था। सिमरन ने यह समझा था कि उसने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया था इसलिए उसने इस ठुकराने को अपमान समझ लिया था।

कार दौड़ रही थी।

कपल ने कार की चाल धीमी कर दी। और इसके साथ ही इसके मन की धड़कन तेज़ हो गई। उसने कई बार सिमरन को देखा। उसकी दृष्टि सामने सड़क पर थी। चेहरा तना हुआ और वह सिगरेट के कश ले रही थी।

कपल इस नीरवता से तंग आ गया था.

"क्या आप मेरी ग़लती माफ़ कर सकती हैं। बात यह है कि मैंने कभी किसी लेडी से इस तरह व्यवहार नहीं किया।

"किस तरह" सिमरन ने दृष्टि सड़क पर केन्द्रित करते हुए कहा। इसकी आवाज़ लोहे की भांति सख्त और ठन्डी थी।"

"जिस तरह मैं आया हूं" कपल ने हकलाते हुए कहा।

तो आप जानते हैं कि एक लेडी से किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए।"

"जानता हूं।"

'लेकिन आज वह जानना काम नहीं आया।"

कपल को फिर चुप होना पड़ा। उसकी झल्लाहट बढ़ रही थी। यह सब क्या तमाशा था। उसका मानसिक सतुलन बिगड़ रहा था और तंग आकर उसने कार रोक दी। कार सड़क से नीचे पटरी पर ले गया इंजन बन्द हो गया। और दूसरे क्षण उसने सिमरन का चेहरा अपने हाथों में ले लिया। और अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिए।

लेकिन दोनों की भावनाएं इस चुम्बन के लिए तैयार न थीं और इन्हें कोई आनन्द न मिला।

जब उसने होंठ अलग किए तो उसने सिमरन को देखा। उसकी आंखें भावनाओं से शून्य थीं। इनमें केवल एक प्रश्न था। केवल आश्चर्य ही था।

दोनों कुछ देर एक दूसरे को देखते रहे। इस देखने में कपल के उदगार शान्त हो गए।

इस नीरवता से तग आकर उसने कार स्टार्ट की।

"तो इस तरह एक लेडी से व्यवहार करते हैं?" सिमरन की आवाज़ आई।

कपल ने उसे देखा वह सड़क पर नजरें गाड़े हुए थी।

कपल ने उत्तर न दिया। उसने गियर डाल दिया।

कार दौड़ने लगी।

कुछ देर बाद सिमरन की आवाज़ आई "तुमने कोठी में मुझे सहारा देकर उठाया तो मुझे तुम्हारे हाथ की पकड़ का अन्दाजा हुआ था। हालांकि टैनिस खेलने से मेरा हाथ बहुत भारी हो गया है। और कलाईयां भी। मैं अच्छे भले मर्द को हाथ जड़ दूं तो वह लड़खड़ा जाए लेकिन तुम्हारे हाथ की पकड़ बहुत मजबूत थी। और हैरान हूं कि तुम्हारे हाथ सख्त और खुरदरे क्यों हैं तुम ऐसा कौन सा शारीरिक व्यायाम करते हो?

"व्यायाम इतना कि नक्शे बनाता हूं। पेंसिलें और परकार से काम लेता हूँ।"

"फिर हाथ इतने खुरदरे और मजबूत क्यों हैं?"

कपल ने उत्तर न दिया।

"तुमने उत्तर नहीं दिया।

"आपको पसन्द हैं?"

"हां।"

"बस फिर ठीक है" कपल ने कहा "आपको कोठी पसन्द आई?"

"अभी तो कुछ समझ में नहीं आई।"

"जी हां! जब तैयार हो जाएगी तब समझ में आएगी।"

"क्या तुम काम से सन्तुष्ट हो।"

"दोनों से।"

"काम से और मालिक से।"

"मालिक से क्यों? सिमरन ने प्रश्न किया।

"बात यह है लेडी युवराज।"

"तुम मुझे सिमरन कह सकते हो?"

"अभी नहीं और कभी नहीं।"

"क्यों?"

"इसलिए कि हो सकता है गैरों की उपस्थिति में मुंह से आप का नाम निकल जाए तो लोग जानने को उत्सुक हो जाएंगे कि मैं इस निःसंकोचता से काम क्यों लेता हूं।"

"ओह धन्यवाद।"

"किस बात का।"

"कम से कम तुम होश रखते हो" सिमरन ने कहा।

"खैर! तुम कह रहे थे कि मालिक से भी सन्तुष्ट हो।"

"जी हां। बहुत कम लोग हैं जिनका पूरा परिवार अमीर होता है। वरना अठानबे प्रतिशत लोग पहली पीढ़ी से अमीर होते हैं इसलिए उनके अन्य सम्बन्धी अमीर नहीं होते। इन लोगों का काम करना बहुत कठिन हो जाता है" कपल ने कहा।

"कैसे ?"

"अब। एक व्यक्ति कोठी बनवा रहा है जैसे ही उसके सम्बन्धियों को पता चलेगा कि वह कोठी बनवा रहा है तो वह बिन बुलाए कोठी देखने आएंगे। और जब कोठी देखने आएंगे तो जरूरी बात है कि राय या परामर्श दिए बिना न रहेंगे।"

"यह तो अमीरों में भी है।"

'मैं जानता हूं लेकिन दोनों में अन्तर है। अब इस व्यक्ति को जो करौलबाग से मिलेगा वह सलाह देगा कि इसमें अलग बाथ की क्या आवश्यकता है। करौलबाग के तो किसी भी मकान में नहीं है और जो इसे पहाड़गंज से मिलने आएगा तो बाथरूम देखकर कहेगा। बाथरूम इतना बड़ा है। यहां तो दो चार पाइयां बिछ सकती हैं। पहाड़गंज में सारे स्नानगृह जीने के नीचे बने होते हैं। और कभी-कभी तो बने ही नहीं होते।"

"खूब।"

"बस मैं इसलिए निश्चिन्त हूं कि आज तक कोई परामर्श नहीं मिला। और मैं जानता हूं आप के सर्कल से जो परामर्श मिलेगा वह मेरे लिए बिल्कुल नया होगा। क्योंकि वह युरोप, अमेरिका, जापान इत्यादि से इम्पोर्ट हुआ होगा। और मैं इसे अपनाना पसन्द करूंगा" कपल ने कहा।

"यह ठीक है।"

"आप जानती हैं कि प्रत्येक कारीगर, मजदूर और शिल्पकार प्रशंसा चाहता है। और दाद उसे उपयुक्त व्यक्ति ही दे सकता है। और वह इन लोगों का काम करके एक शांति और खुशी अनुभव

करते हैं।"

"हां।"

"अब मैं आपको एक शिल्पकार की कहानी सुनाता हूं।"

"सुनाओ।"

"एक रेलवे अफसर थे। और उनकी नौकरी रिटायर होने में कुछ मास शेष थे। उन्होंने सोचा कि रिटायर होने के बाद सरकारी कोठी तो खाली करनी होगी। इसलिए अपनी कोठी बनवा लो। जहां तक पैसे का सम्बन्ध था। इतना कह देना काफी है कि वह रेलवे में अफसर थे। और रेलवे में तो टिकट कलक्टर की अनैतिक आय का हिसाब नहीं, कहकर कपल ने सिमरन को देखा। वह सड़क को देख रही थी। और बहुत गहरी सोच में थी। आप सुन रही हैं।"

"हां। हां। सिमरन ने चौंककर कपल को देखा।

अब शिल्पकार ने बड़ी मेहनत से नक्शा तैयार किया। उसने घर के सारे व्यक्तियों को मस्तिष्क में उजागर करके नक्शा बनाया। अब यह भाग्य की बात थी या इस घूंस के रुपए की बरकत कि भगवान ने इन अफसर साहिब को केवल लड़कियों का पिता बनाया था और लड़कियां भी भगवान की दया से पांच—जिनके लिए उपयुक्त वर की खोज जारी थी। और उस तलाश में बड़ी लड़की तीस से ऊपर की होगई थी।"

"ओह" सिमरन चौंककर बोली।

कपल समझ गया कि सिमरन चौंकी क्यों है। सिमरन की आयु भी तीस के लगभग थी "अब शिल्पकार ने नक्शा बनाया और रेलवे अफसर के आगे रखा और इन्हें समझाने लगा।"

"क्या ?"

"कि इसने पांच लड़कियों के लिए पांच बैड रूम बनाए थे। और छठा बैडरूम माता-पिता के लिए। हर एक बैडरूम के साथ

बाथरूम था। और बैडरूम का एक दरवाजा बालकोनी में खुलता था। बालकोनी उसने इतनी बड़ी बनाई थी कि वहां एक मेज और तीन-चार कुर्सियां रखी जा सकें।"

"हूं" सिमरन ने हुंकारा भरा जैसे बच्चे कहानी सुनते समय करते हैं।

रेलवे अफसर ने नक्शा देखकर कहा, "यह तो मैं समझ गया कि बालकोनी किस काम आती है लेकिन छः बालकोनियों की क्या जरूरत थी। आखिर वह बहिनें हैं और मिल-जुलकर रह सकती हैं। फिर छः बाथरूम क्यों बना डाले। इतने बाथरूमों की क्या जरूरत थी।"

"जी प्राईवेसी के लिए" शिल्पकार ने उत्तर दिया।

"प्राईवेसी" वह रेलवे अफसर चिल्लाया, "यानी मेरी लड़कियां अपने हरामजादे प्रेमियों के साथ भाग जाएं और मुझे पता भी न चले। तुम इसे प्राइवेसी कहते हो" कहकर कपल हंस दिया।

और सिमरन का तो बुरा हाल हो गया। हंस-हंसकर वह दोहरी हो गई।

"कपल भगवान के लिए कार रोको" सिमरन ने हंसते-हंसते कहा।

कपल ने कार रोक दी।

सिमरन हंसे जा रही थी।

आखिर बड़ी मुश्किल से उसने हंसी पर काबू पाया।

"क्या ऐसे लोग आज के जमाने में हैं" सिमरन ने प्रश्न किया।

"जी हां।"

"क्या यह वास्तविकता है।"

"बिल्कुल।"

"कमाल है" सिमरन को फिर हंसी आ गई। लेकिन अब वह स्वयं ही रुक गई।

"आप कहां जाना चाहेंगी" कपल ने कार स्टार्ट करते हुए कहा।

"इस समय क्लब। मुझे व्हिस्की की तलब लग रही है।"

"ओह! मैं इसे भूल ही गया था।"

कार दौड़ रही थी। और वह दोनों चुप थे। कपल ने सिमरन को देखा। वह फिर सड़क को देख रही थी। और होंठ दांतों से काट रही थी जैसे वह कोई मनसूबा बना रही थी या किसी को नष्ट करने की स्कीम तैयार कर रही थी। न मालूम क्यों जब भी कपल उसे इस दशा में देखता उसे केवल एक बात का आभास होता था कि सिमरन किसी को बरबाद करने की स्कीम बना रही थी।

अचानक सिमरन बोल पड़ी "कपल"

"जी।"

"यह कार कौन-सी है?"

"ओह भगवान। कपल ने मन-ही-मन कहा। आखिर वह समस्या खड़ी हो ही गई जिससे वह अब तक डर रहा था और उसने सिमरन का ध्यान परिवर्तित कर दिया था।"

"मरसीडीज।"

'मरसीडीज।" सिमरन ने कहा। और अन्धेरे में कपल को देखा उसने अभी तक इस कार के बारे में सोचा ही न था। यह तो यूं चलती है जैसे कोई इसका पीछा कर रहा हो। मैं कारों के बारे में बहुत कुछ जानती हूं। लेकिन आश्चर्य है कि मुझे सवाल करना पड़ा कि यह कौन-सी कार है। मरसीडीज है। लेकिन मैं एक बार मरसीडीज में बैठी हूं। उस दिन मैंने प्रश्न किया था कि कौन-सी कार है।"

"शायद दूसरे माडल की होगी" कपल इस प्रश्न को हजम न कर सका।

"यह कौन-सा माडल है।"

"२५० ।"

"और यहां कौन-से माडल हैं ?"

"१८०, २०० इत्यादि।"

"ओह" सिमरन ने गहरा सांस लिया "यह कार तुम अमरीका से अपने साथ लाए हो।"

"जी हां।"

"इसका मतलब है इस माडल की इस देश से गिनती की कारें होंगी।" सिमरन ने प्रश्न किया।

"शायद दो या तीन" कपल के मुंह से निकल गया और यह उसकी मौत थी। यह बात तो उसे कभी न कहनी चाहिए थी।

"केवल दो या तीन।"

"अब वह इन्कार न कर सकता था। जी, उसने दबी आवाज में कहा।"

"ओह" सिमरन ने गहरा सांस लिया। उसके शिल्पकार के पास वह कार थी जिसके साथ की देश में केवल दो या तीन कारें थीं। और यह संभव था। सिमरन सोच रही थी।

"कपल इसकी कीमत क्या है ?"

"जी जब कारें ही नहीं तो कीमत का क्या अन्दाजा लग सकता है।"

"फिर भी" सिमरन ने कुछ इस अन्दाज से कहा कि जैसे ही उसके मुंह से कीमत निकलेगी वह चैक काट देगी।"

कपल तो अब हर बात सम्हल कर करता था "जी मैं कह नहीं सकता कैसे एक बात कहूं।"

"कहो"

अमरीका मे इसे मर्दाना कार कहा जाता है। इसे और रोल्ज रायस को। वहां औरतें दो कारें चलाना अपनी शान के योग्य नहीं समझतीं, कपल ने उसे बहलाना चाहा।

लेकिन वह सिमरन थी । "अमरीका की बात छोड़ो। मुझे बहुत-सी मर्दाना बातें और काम पसन्द हैं। इसलिए यदि अमरीका की औरतें और रोलज रायस और मरसीडीज नहीं चलातीं तो इसका मतलब यह नहीं कि मैं भी न चलाऊं।"

अब तमाम रास्ते बन्द हो गए थे। कपल इस मनहूस घड़ी को कोस रहा था। जब उसने कहा था कि उसके पास कार है। और वह इसे कार में छोड़ आएगा फिर यह बताने की आवश्यकता ही क्या थी कि इसका कौन-सा माडल है और इस माडल की देश में दो तीन कारें हैं।

"क्या आप चलाना पसन्द करेंगी" कह कर कपल ने कार की चाल हल्की कर दी। शायद आप पसन्द करें।

"चलाना या कार को"

"कार को"

"क्यों ?"

"तो फिर चला कर देख लीजिए" कहकर कपल ने ब्रेक लगा दी।

"नहीं। दूसरे की कार नहीं चलाती।"

"ओह भगवान। अब वह इस मुश्किल से किस तरह निकल सकता था। यदि सिमरन कार चला लेती तो शायद इसका रवैया बदल जाता। आखिर मरसीडीज सचमुच मर्दाना कार थी।

"फिर ?"

"तुम कार चलाओ। मैंने कीमत पूछी थी।"

"मैंने ठीक कहा था कि मैं नहीं बता सकता। फिर जो चीज बिक्री योग्य हो उसकी कीमत लगाई जाती है।"

"तो क्या तुम यह कार बेचना पसन्द न करोगे" सिमरन ने उसे अजीब अन्दाज में कहा कि कपल के शरीर में सनसनी दौड़ गई।

"आप कार चाहती हैं ?"

"हां"

"इसलिए कि आपको पसन्द आ गई है और जो वस्तु आपको पसन्द आ गई हो उसे आप हर कीमत पर खरीदने की आदी हैं।"

"ऐसा ही समझ लो।"

"लेडी युवराज। कुछ देर पहले हम दोस्त थे। लेकिन अब आप के बोलने के अन्दाज से ऐसा प्रगट हो रहा है जैसे हमारे बीच बरसे से लड़ाई चल रही है" कपल ने कहा।

"क्या बच्चों की-सी बातें कर रहे हो। मैं जानती हूं कि तुमको यह कार मुफ्त में नहीं मिली।"

"लेकिन लेडी युवराज आपकी साख इतनी बड़ी है कि आप ऐसी एक दर्जन नई कारें मंगा सकती हैं। और यह तो आठ दस मास पुरानी हो चुकी है" कपल ने कहा।

"मैं जानती हूं मैं कितनी कारें मंगा सकती हूं। लेकिन कार आने में न मालूम कितनी देर लग जाए।"

"इस सूरत में आप इसे इस्तेमाल कर सकती हैं। यह चौबीस घंटे आपके कब्जे में होगी।"

"मुझे यह सूरत पसन्द नहीं। मैं किसी की वस्तु कीमत दिए बिना इस्तेमाल नहीं करती" सिमरन ने कहा।

"यदि यह सूरत भी पसन्द नहीं तो केवल एक सूरत रह जाती है" कपल ने थके स्वर में कहा।

"वह कौन-सी ?"

"मैं यह कार आपको उपहार स्वरूप दे सकता हूं।"

"भावुक न बनो। सिमरन की आवाज उभरी। मैं जानती हूं तुम इतने अमीर नहीं कि इतनी कीमती कार किसी को उपहारमें दे सको।"

"उपहार और पैसे का कोई सम्बन्ध नहीं। उपहार का सम्बन्ध दिल और भावनाओं से है।"

"मैं नहीं मानती।"

"क्यों नहीं मानती आप। आपको कार पसन्द है।"

"हां ।"

"और मुझे आप पसन्द हैं और जो मुझे पसन्द है क्या मैं उसे कोई उपहार नहीं दे सकता ।"

"दे सकते हो लेकिन यह उपहार विवशतावश होगा । क्योंकि तुम इसे मेरे लिए नहीं लाए । मैंने जब खरीदने की फरमाईश की तो तुमने इतनी कीमती कार को उपहार का रूप दे डाला ।"

"लेडी युवराज । अब आपकी हर शर्त तो उपयुक्त नहीं हो सकती ।"

"लेकिन यह बिल्कुल उपयुक्त है । मैं जानती हूं कि तुम इतनी कीमती कार किसी को उपहार स्वरूप नहीं दे सकते ।"

"मैंने कहा ना कि धन और उपहार में कोई सम्बन्ध नहीं ।"

"खैर । सिमरन ने गहरा सांस लिया । पहली बार इसके धन ने मुंह की खाई थी । इसके स्वप्न में भी न था कि एक शिल्पकार जिसकी वह अन्नदाता थी । इसकी दौलत को इस तरह ठुकरा देगा । इसलिए उसने कहा ।

"इस बहस को बन्द करो ।"

"लेकिन लेडी युवराज मैं गंभीर हूं" सिमरन के इन्कार ने कपल के अन्दर जान डाल दी थी ।

"मुझे यह पसन्द नहीं ।"

"क्या । आपको किसी ने आज तक उपहार नहीं दिया ।"

"दिया है ।"

"फिर मेरे उपहार को इस तरह क्यों ठुकरा रही हैं आप ?"

"कपल उपहार बराबर के लोगों से लिए जाते हैं । और बराबर के लोगों को दिए जाते हैं । अब इस चर्चा को बन्द कर दो ।"

कपल निश्चिन्त हो चुका था कि उसने अपनी ओर से जो प्रस्ताव किया था वह गलत न था । इसलिए वह स्वयं चाहता था कि यह बात समाप्त हो जाए ।

दस

"मीना को जब शॉपिंग का जनून उठता है वह हागकाग चली जाती है।" सुरुचि ने कहा।

"और अनीता बम्बई भागती है।" सिमरन ने कहा।

"हम चारों का ऐसा ग्रुप बन गया है कि यदि एक भी अनुपस्थित हो तो इसकी कमी बुरी तरह खलती है।" सुरुचि ने कहा।

"सुरुचि तुम यूं कह रही है जैसे हम बुढ़िया हो गई हैं। अब एक दूसरे के सहारे के बिना जीवित नहीं रह सकती हैं। ऐसी बातें कमजोर इन्सान करते हैं।"

"लेकिन यह सत्य है।"

"सत्य है" सिमरन गुर्राई। मैं ऐसे विचार अपने मन में नहीं लाना चाहती।"

"मैं जानती हूं। लेकिन सिमरन जमाना बड़ा अजीब है। और हमें एक दूसरे की बड़ी सख्त जरूरत है।"

"क्या बात है आज टेनिस ने तुम्हें थकाया नहीं" सिमरन ने ध्यान बदलना चाहा।

"टेनिस तो थका ही देती है। लेकिन जीवन में और बातें भी हैं जो थका देती हैं। और इन्सान ऐसा अनुभव करता है। जैसे वह अकेला हो और उसे किसी इन्सान के सहारे की आवश्यकता

है। दो मीठे बोलों की जरूरत है" सुरुचि ने थके स्वर में कहा।

"यह तो इन्सान का तगादा है।"

"लेकिन कई बार इसकी बड़ी सख्त आवश्यकता अनुभव होती है" सुरुचि ने कुछ इस अन्दाज से कहा जैसे रो देना चाहती थी।"

सिमरन ने यह कमजोरी भांप ली थी "सुरुचि।"

सुरुचि ने नजरें उठाई।

"सुरुचि तुम कहना क्या चाहती हो। मैं अब तक इस बातचीत को किसी और दृष्टि से देख रही थी। लेकिन ऐसा अनुभव होता है जैसे तुम्हें कोई वस्तु भीतर-ही-भीतर खाए जा रही हो" सिमरन ने कहा।

"यह सत्य है।"

"तो फिर कहती क्यों नहीं हो कि तुम्हें क्या खा रहा है। तुम यह भूमिका क्या बांध रही हो। इधर-उधर की बातें क्यों कर रही हो। यह अनीता और नीना की बात क्यों? आखिर मैं सखी नहीं। और मित्रता यदि सुख की है तो वह मित्रता नहीं। दुःख में भी इसकी आवश्यकता पड़ती है। बल्कि दुःख में अधिक पड़ती है।" सिमरन ने कहा।

"सिमरन। मैं तुम पर कोई आरोप नहीं ठोस रही हूं। न ही तुम्हारे व्यक्तित्व पर। या तुम्हारी मित्रता पर कोई दाग डाल रही हूं लेकिन सच्चाई ऐसी है कि अब यदि कह दूं तो शायद मेरे दिल पर छाया बोझ हल्का हो जाए।

"सुरुचि माई डियर। यह आज तुम किस किस्म की बातें कर रही हो। तुम खुल कर बात क्यों नहीं करती हो।"

"मैं करना चाहती हूं लेकिन यह समझ नहीं आता कि कहां से शुरू करूं।" सुरुचि ने कहा।

"तो मैं तुम्हारी सहायता करती हूं" सिमरन ने कहा। "किसके बारे में है और क्या परेशानी है। अच्छा, पहले जिसके बारे में बात

है इसका नाम बताओ।

"मैंने उस दिन बात की थी कि हमारे स्कूल में किसी फिल्म प्रोड्यूसर ने आकर फिल्म की शूटिंग की थी।" सुरुचि ने कहा।

"हाँ। और मैनेजिंग कमेटी की आज्ञा लेना आवश्यक नहीं समझा।" सिमरन ने बात बढ़ाई।

"बिल्कुल, बिल्कुल। तुमने कहा था कि हमारी बच्चियां ऐसी नहीं हैं जो फिल्म ऐक्ट्रैस में बनें। और इन मासूम बच्चियों के मस्तिष्क पर नक्श हो जाए कि उन्होंने एक फिल्म में काम किया है तो वह पढ़ाई में पूरा ध्यान न देंगी। इनके मासूम मस्तिष्क पर गलत प्रभाव पड़ सकता है। यह मामूली सी घटना इनके जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव छोड़ सकती है। और हो सकता है कि वह प्रभाव इनके भविष्य को अंधकारमय बना दे" सुरुचि ने कहा।

"बिल्कुल।" मैंने यही दलील दी थी। फिर वह एक प्रकार का प्राईवेट स्कूल है। जिनके बनाने में तुम्हारे परिवार का पूरा *हाथ है। लगभग नब्बे प्रतिशत रुपया तुम्हारे परिवार ने लगाया है।"* सिमरन ने कहा।

मेरे डैडी देश विभाजन के बाद अपने परिवार को लेकर किस बुरी दशा में यहां पहुंचे थे। वह अपनी जगह एक कहानी है। लाखों रुपए की सम्पत्ति, जमीन गहने और घर का सामान उधर रह गया था। और यह सब धर्म के नाम पर हुआ था। लेकिन यहां आकर अपनी मेहनत और परिश्रम से उन्होंने सब कुछ फिर से बना डाला क्योंकि इनके पास दो चीजें शेष थीं। कहकर सुरुचि ने प्रश्न-सूचक दृष्टि से सिमरन को देखा।

"क्या।"

"दिमाग और हाथ।"

"मैं जानती हूं।"

"और यही दो चीजें काम आईं। थोड़ी सी पूंजी से जो

स्वतंत्र देश में काम शुरू हुआ वह कुछ वर्षों में इनके दिमाग और साख के कारण से लाखों का वन गया। और प्रत्येक पैसे वाले ने ऐसे कामों में रुपया अवश्य लगाया है। जिससे जनता की भलाई हो।

"स्कूल, अस्पताल और धर्मशाला इत्यादि" सिमरन ने टोका।

"बिल्कुल। लेकिन जनता ने हमें संदेह और घृणा की दृष्टि से देखा है। जैसे हमने स्कूल वनवाकर भी अपना जन्म सुधारा है। उससे जनता को लाभ नहीं हुआ। उसी तरह हस्पताल—"सुरुचि ने गिला किया।

"वह तो आज से नहीं सदियों से हुआ है। जनता ने अमीरों को सदा संदेह और घृणा की दृष्टि से देखा है" इस संदेह और घृणा की एक कहानी मैंने भी पढ़ी है "सिमरन ने कहा।

"सुनाओ।"

"गंगाराम एक साधारण घराने का लड़का था। जिसको कुशाग्र बुद्धि के साथ भगवान ने गरीबी भी दी थी। शायद तंगी न दी हो। लेकिन गरीबी अवश्य थी। वह केवल दिमाग के बलबूते पर उन्नति करते-करते अमीर बन गया। और सरकार ने उसे 'सर' की उपाधि दी। जैसे ही वह अमीर वना और सरकार ने उसे सर की उपाधि प्रदान की तो जनता ने खुश होने की बजाए उसे संदेह और घृणा की दृष्टि से देखना शुरू किया। लेकिन सर गंगाराम अपनी धुन में मस्त था। वह मानव था। जनता की भांति कमीना और नीच न था। उसने जब धन कमाया तो उसे केवल अपनी जान तक सीमित रखा क्योंकि वह रजवाड़ा व नवाब न था। जिसे धन पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिला है। इसलिए वह धन को उजाड़ते हैं। गंगाराम तो एक साधारण मानव था और साधारण घराने का लड़का था। और वह जनता के दुःख जानता था। इसलिए उसने आय का बड़ा भाग नेक कामों में लगाया। हस्पताल बनवाए जहां गरीबों की चिकित्सा होती थी।

स्कूल, कालेज बनवाए जहां जनता के बच्चे पढ़ते थे।

"बहुत नेक काम किए हैं उसने।"

और जब वह मरा तो उसकी स्मृति में सड़कों और पार्कों के नाम रखे गए। और बुत भी लगाए गए।

"हां।"

"जब आजादी के नाम पर धार्मिक आंदोलन शुरू हुए तो जनूनी लोगों ने उसके बुत को तोड़ना चाहा।"

"इससे क्या उसका नाम मिट जाता।"

"यह बात हम तुम सोच सकते हैं। लेकिन जनता तो जनता है और जो वह करते हैं कि वह सदा सच्चा होता है। ठीक होता है। और जो कुछ वह करते हैं इसमें घृणा द्वेष और संदेह को बिल्कुल दखल नहीं होता। सिमरन ने कहा।"

' दखल नहीं होता, सुरुचि चिल्लाई या इनकी हर बात घृणा, द्वेष और ईर्ष्या से भरी होती है।"

"खैर तुम ऐसा समझ लो।" सिमरन ने मुस्करा कर कहा। ' फिर भी धर्म के नाम पर जनूनी जनता ने इसका बुत तोड़ना चाहा। लेकिन वहां पुलिस आ गई। और उसने इन जनूनी लोगों पर गोली चला दी।"

"ठीक किया।"

"गोली चलने से कुछ लोग घायल हो गए।"

"मरे क्यों नहीं।"

"जो घायल हुए उन्हें चिकित्सा के लिए गंगाराम हस्पताल में ही ले जाया गया।" सिमरन ने मुस्करा कर कहा।

"वाह, वाह।" सुरुचि ने दाद दी। क्या खूब। "आखिर काम उसी व्यक्ति की दौलत आई। जिसका बुत तोड़ने जा रहे थे।'

"तो सुरुचि जनता की तो यह दशा है वह तो प्रत्येक धनी-मानी व्यक्ति को संदेह और घृणा, द्वेष व ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं

कुछ हो जाए सिमरन ने कहा "खैर यह तो एक घटना थी। लेकिन हम बात कर रहे थे कि बच्चियों को फिल्म में दिखा दिया गया है।"

"हां। सिमरन सचमुच हम बातचीत के विषय से बहुत दूर निकल गई थीं" सुरुचि ने कहा।

"नहीं। यह भी बातचीत का ही अंश है। तुम जब बात बता चुकी होगी तो मैं बताऊंगी कि क्या बात थी।"

"बेहतर। उस दिन तुमने कहा था कि इस तरह के गैरजिम्मेदार प्रिंसीपल के विरुद्ध कारवाही बहुत जरूरी है। कि उसने साधारण से प्रोड्यूसर के प्रस्ताव से खुश होकर शूटिंग की आज्ञा दे दी। उसने मैनेजिंग कमेटी या बच्चियों के माता-पिता से आज्ञा लेना आवश्यक न समझा" सुरुचि ने कहा।

"मैंने ठीक कहा था।"

"तो सिमरन तुम जानती हो कि मैनेजिंग कमेटी वही करती है जो मैं या मेरे भाई कह देते हैं। क्योंकि मैनेजिंग कमेटी के मैम्बर हम लोग हैं जो हमारे अपने हैं। और जिन्हें हमने मैम्बर बनाया है सुरुचि ने कहा।

"ठीक।"

"हमने जब प्रिंसीपल को अपने सामने बुलाया और उससे पूछा कि उसने मैनेजिंग कमेटी या माता-पिता की मीटिंग बुलाकर उनसे पूछे बिना उस फिल्म प्रोड्यूसर को शूटिंग की आज्ञा क्यों दी।"

"तो उसने क्या उत्तर दिया" सिमरन ने उत्सुकता से पूछा।

"आखिर यह आग उसकी ही लगाई थी। वरना बात तो खत्म हो गई थी। माता पिता और मैनेजिंग कमेटी के मैम्बर तो खुश थे कि कि बच्चियां फिल्म में दिखाई गई हैं। और स्कूल का नाम पैदा होगा।"

"उसने कहा। फिल्म एक आर्ट है। इस देश में आर्ट की वही कद्र होनी चाहिए जो स्वतन्त्र देशों में होती है।"

"आर्ट" सिमरन ने क्रोध में होंठ काटे "तो फिल्म एक आर्ट है। जवाब नहीं इन प्रिंसीपल का। उसने कहा नहीं कि प्रिंसीपल पैसा हम लोगों के पास भी है और फिल्म की प्रसिद्ध अभिनेत्रियों के पास भी है। लेकिन लाखों रुपए नकद, गहने और जवाहरात रखने के विपरीत इनको क्या मानता है। यही न कि हर डायरेक्टर या प्रोड्यूसर के बिस्तर की शोभा बनती है। अतिरिक्त हर उस व्यक्ति के बिस्तर की शोभा हो सकती है जो उसकी कीमत चुका सकता हो। क्या मुझे अब यह भी बताना पड़ेगा कि मेरे पति या मेरे बेटों के बिस्तर की शोभा कौन-कौन सी फिल्म स्टार रही है।"

"बिल्कुल" सुरुचि ने जोश में कहा।

"क्या बिल्कुल" सुरुचि जोश में थी। उसे सुरुचि बात का बढ़ाना अच्छा न लगा था। लाखों रुपए से क्या वह इन नाइंन दोई को मिटा सकती हैं या धो सकती है। जो घोषित करता है कि इन के शरीर बिक्री योग्य हैं" सिमरन ने ऊँची आवाज में कहा।

"खैर सिमरन मैंने ऐसा तो नहीं कहा। क्योंकि वहां नहीं भी बैठे थे लेकिन मैंने जब सिद्ध करने की चेष्टा की कि फिल्म कला नहीं तो जानती हो उसने क्या बहाना बनाया।"

"मैं उस जाहिल प्रिंसीपल का बहाना सुनना चाहती हूं।"

"उसने कहा कि इस देश में स्वतन्त्रता के बाद लाखों लोग लखपति बन गए और हजारों लोग करोड़पति हैं। लेकिन इतने में कितने हैं जिसे सरकार ने पद्म श्री या पद्म भूषण से सुशोभित किया हो लेकिन फिल्म इन्डस्ट्री के कितने हीरो, हीरोइन, प्रोड्यूसर, डायरेक्टर और म्यूजिक डायरेक्टर और गीतकारों को पद्मश्री और पद्मभूषण से सुशोभित किया गया है।"

"इसलिए शरीर बेचने वाली जो स्वतन्त्रता से पहले बेहयाई

"परिणाम स्वरूप ?"

"मेरे पति के पांव पकड़ लिए।"

"लेकिन सिमरन तुम केवल एक बात भूल रही हो।"

"कहो।"

"वह अकेला पत्रकार था। और उसने ब्लैकमेल की कोशिश की होगी वरना यदि पत्रकारों की यूनियन के पास मुकदमा होता तो कोई भी मजिस्ट्रेट उसपर झूठा मुकदमा न चला सकता। बात व्यक्तिगत नहीं यूनियन की है। अब जमाना यूनियन का है। गलती, अनैतिकता, आलस्य और अपनी त्रुटियों को घुमाने के लिए यूनियन की शरण सर्वोत्तम है।" सुरुचि ने कहा।

"लेकिन मैं नहीं मानती। मैं यूनियन खरीद सकती हूं। आखिर यूनियन भी तो दो या चार लीडरों के सिर पर चलती है। और दो चार लीडरों की कीमत चुकाने के बाद यूनियन के शेष मैम्बर असफल हो जाते हैं" सिमरन ने कहा।

"लेकिन सिमरन तुम भूल रही हो कि यूनियनें कहां तक कर गुजरती है। इसके लिए सदाचार, धर्म, ईष्ट मान मर्यादा, वहू वेटियां कोई महत्व नहीं रखता है। वह संगत और असंगत में कोई अन्तर नहीं रखते। इनके लिए झूठ नाम का शब्द दुनिया में है ही नहीं। तुमने जिन्दाबाद या मुर्दाबाद के नारे देखे हैं। लेकिन यही लोग जब मालिक या मैनेजर की कोठी के बाहर धरना देकर गन्दी गालियां और मुर्दाबाद के नारे लगाते हैं तो मालिक या मैनेजर की पत्नि और जवान वेटियां और बहुओं का जीना हराम कर देते हैं। वह एक क्षण के लिए नहीं सोचते कि इनका -झगड़ा मालिक या मैनेजर से है। वह केवल अपनी मांगें मनवाना चाहते हैंऔर इसकी खातिर शरीफ बहू वेटिओं को भी नहीं छोड़ सकते" सुरुचि ने रोशनी डाली।

"बस" सिमरन ने होंठ काटा जैसे वह भावुक होकर आवेश को दबा रही थी। सुरुचि ! यदि तुम इस तरह की बातें सोचने लगीं

तो हमारी दौलत हमारी मिलें, कारखाने कोठियां, कारें इन सब पर यूनियन का कब्जा हो जाएगा। इसी तरह कांग्रेस ने कितने रंग बदले लेकिन इसकी बागडोर अमीरों के हाथ में रहेगी। कल के रजवाड़े, नवाब आज कांग्रेस के झंडे तले मंत्री हैं।"

"लेकिन मैं तो ऐसे आदमियों को नहीं जानती हूं सुरुचि ने जब देखा कि सिमरन कभी न मानेगी। दलील उसके सामने कोई महत्व नहीं रखती। वह केवल वह करती जिसे उसका मस्तिष्क सही स्वीकार करे।"

"वह मैं बता दूंगी" सिमरन ने उत्तर दिया।

"और मैं इसी उत्तर की आशा रखती थी।"

"तुम मुझे इसके घर का पता दो। मैं अपने आदमियों के द्वारा उसका जीना हराम कर दूंगी।" सिमरन ने कहा।

"यदि पैसे में ताकत नहीं तो लानत है ऐसी दौलत पर।"

"मैं आज शाम को प्रिंसपिल के घर का पता इत्यादि दे दूंगी लेकिन सिमरन ध्यान रखना कहीं लेने के देने न पड़ जाएं। आज कल किसी मनुष्य का चरित्र ईर्ष्याजनक नहीं रहा। हर इन्सान बिकने को तैयार है। कहीं तुम्हारे गुंडे भी केवल दिखाने के सिद्ध न हों।"

"तुम चिन्ता न करो। वह शहर के नागरिक जो चर्स, शराब का धंधा करते हैं और स्वयं को गुंडा कहते हैं। और इनकी विभिन्न किस्में है। दो पैग वाला गुंडा, पाव बोतल वाला गुंडा। आधी बोतल वाला गुंडा—लेकिन मेरे आदमी गांव से आते हैं—जाट हैं। कत्ल इनका उद्देश्य है। और स्वामी भक्ति इनका जीवन।" सिमरन ने पूर्ण विश्वास से कहा।

"कत्ल।"

"हां वह भी यदि आवश्यकता पड़ी तो।"

"ना बाबा। यह काम नहीं चाहिए। मैं मुफ्त की मुसीबत में फंसना नहीं चाहती। मामूली सी तो बात है कि प्रिंसपिल ने फिल्म

की शूटिंग की आज्ञा दे दी ।"

मामूली थी । अब नहीं ।" सिमरन ने कहा "लेकिन तुमने ध्यान नहीं दिया मैंने क्या कहा था । मैंने कहा था आवश्यकता पड़ने पर तो कत्ल भी । लेकिन एक प्रिंसपिल या स्कूल टीचर को कत्ल करने की नौबत ही न होगी । वह फौरन ही रास्ते पर आ जाते हैं । मैं आज ही गांव से एक दर्जन आदमी मगांती हूं ।"

"लेकिन सिमरन कोई मुसीबत न खड़ी हो जाए ।"

"हो जाएगी तो तुम पर आंच न आएगी । वह इतने स्वामी-भक्त हैं कि कभी नहीं बताते किसकी खातिर कर रहे हैं ।" सिमरन ने कहा ।

"सिमरन मेरा तो दिल डरता है ।"

"मैं जानती हूं" सिमरन ने कहा और इसके होंठों पर विष की मुस्कराहट थीं ।

"अच्छा हटाओ कोई और बात करें ।"

"करो ।"

"जानती हो एस० टी० सी० फिर इम्पोरिटड कारों का लाट बेच रही है ।"

'इम्पोरिटड कारें । सिमरन ने चौंक कर कहा ।

"तुम चौंक क्यों पड़ी हो जैसे कोई बात याद आ गई हो ।"

"हां याद आ गई है एक इम्पोरिटड कार मुझे भी पसन्द थी ।"

"कितनी की होगी ?"

"कोई कीमत नही ।"

"क्या मतलब ।"

"यही कि इसके साथ की इस देश में शायद ही दूसरी हो और अभी कुछ वर्ष आने की आशा भी नहीं ।" सिमरन ने कहा ।

"क्या नाम है कार का ?"

"नाम मुझे भी याद नहीं ।" सिमरन ने संभच कर कहा । वह नहीं चाहती थी कि कोई जाने कि उसकी आंख किस कार पर है ।"

"और कीमत क्या है ?"

"कीमत तो तीन लाख हो सकती है। दो लाख भी। क्यों कि जब मिल ही नहीं सकती तो कीमत क्या है ?"

"फिर खरीदी क्यों नहीं ?"

"इसलिए कि वह बेचना नहीं चाहता है वरना सिमरन समय पर सम्भल गई। उसके मुंह से निकलने वाला था कि उपहार स्वरुप देना चाहता था।"

"कब है एस. टी. सी. की सेल।"

"एक सप्ताह बाद।"

"हम चलेंगीं।" मैं इस बार एक छोटी कार खरीदना चाहती हूं।" सिमरन ने विषय को बदलना चाहा।

और वह शीघ्र ही नए विषय में खो गई।

ग्यारह

"बस उसने उसी प्रकार कह दिया कि हटाओ इस किस्से को" गोपाल ने भयभीत स्वर में कहा और सामने पड़ी हुई फाईल को उलट पलट कर देखता रहा।

"यह तो कोई उत्तर नहीं।" सिमरन ने कहा।

"लेडी युवराज मैं जानता हूं कि यह जवाब नहीं। लेकिन आपने स्वयं ही तो कहा था कि मैं अधिक गहराई में न जाऊं" गोपाल ने वजह बताई।

"वह तो ठीक है लेकिन अधिक गहराई से यह मतलब तो न था कि बात को सिरे ही न चढ़ाया जाए" सिमरन ने कहा।

"वह तो ठीक है" गोपाल को उलझन होने लगी। ऐसी स्त्रिओं को और विशेष कर सिमरन जैसी स्त्री को कायल करना न आता था। लेकिन परिस्थिति ऐसी थी कि वह ऐसी बात उसे कह न सकता था। लेकिन आपने एक पाबन्दी और भी तो लगाई थी।"

"क्या ?"

"उसे पता न चले कि कार कौन खरीद रहा है।"

"मेरा मतलब है खरीदना चाहती या चाहता है।" गोपाल ने कहा।

"हां तो अभी गुप्त ही रहना चाहिए। वैसे उसने जानना चाहा था" सिमरन का दिल धड़का।

"जो हां उसने कुरेद कुरेद कर जानने की चेष्टा की कि कौन व्यक्ति है। क्या काम करता है। उसे ऐसी कार में दिलचस्पी क्यों है। फिर उसने बाद में कहा था कि यह कार बिल्कुल मर्दाना है। इसमें कोई औरत दिलचस्पी रखे तो बिल्कुल गलत होगा।"

"यहां तक तो ठीक है।"

"उसने तो दर्जनों प्रश्न कर डाले थे।"

"कीमत की बात चली थी ?"

'जी नहीं। मैंने जब भी बात की तो उसका एक ही जवाब था कि मैं इसे बेचना नहीं चाहता इसलिए कीमत क्या बताऊं?"

"हद है वह आपका मित्र है और आप इतनी सी बात न मालूम कर सके" सिमरन ने गिला किया और उत्तेजित किया।

लेकिन गोपाल इस तरह उत्तेजित न हो सकता था। इसके लिए आपने ही कैद लगा रखी है यदि मैं स्पष्ट रूप से कह दूं कि मैडम युवराज यह कारें खरीदना चाहती हैं तो बात खत्म हो सकती है।

"नहीं। मैं तस्वीर में नहीं आना चाहती। और न ही चाहती हूं कि उसे भनक पड़ जाए कि मैं यह कार खरीदना चाहती हूं।"

"लेडी युवराज।"

"कहो।"

"एक स्कीम मेरे दिमाग में है।"

"कहो।"

"क्या आप साईट पर गई हैं?"

"मैं समझी नहीं।"

"कपल आपकी कोठी बना रहा है।"

"हां।"

"क्या आप कोठी देखने गई हैं?"

"नहीं।" सिमरन ने झूठ बोल दिया। वह जानती थी कि कपल ने इस भेंट की चर्चा किसी से न की होगी। यहां तक की गोपाल से भी। नहीं तो गोपाल यह प्रश्न न करता।"

"तो फिर ठीक है ?"

"क्या ठीक है "

"आप किसी दिन कोठी हो आईये। वहां कपल होगा और मैं आपकी उपस्थिति में बात छेड़ दूंगा।"

"और उसने यदि इन्कार कर दिया।"

"अब और कैद न लगाईए। जब इन्कार कर देगा तो आगे सोचेंगे।"

"तुम तो इस तरह कह रहे हो जैसे इन्कार करने की जुर्रत नहीं रखता।"

"जुर्रत की बात छोड़िए। जरूरत के मामले में वह अहमक सिद्ध हुआ है।"

"किस तरह ?"

"वह अपनी लाभ हानि भूल जाता है।"

"और जुर्रत निभाता है" सिमरन ने टोका।

"जी हां।"

"फिर तो मुझे वहां नहीं आना चाहिए।"

"आपकी बात अलग है। आपके सामने वह मुंह न खोल सकेगा" गोपाल ने कहा।

"लेकिन उसने कोई कारण तो बताया होगा कि वह कार क्यों नहीं बेचना चाहता" सिमरन ने पूछा।

"नहीं। वैसे एक बात कही थी उसने ?

"वह क्यों छुपा रहे हैं।"

"छुपा नहीं रहा हूं। उसने कहा था कि वह इस कार को किसी को उपहार स्वरूप देना चाहता है।"

"उपहार" सिमरन के होठों पर मुस्कान बिखर गई। "लेकिन इतनी कीमती कार उपहार स्वरूप नहीं दी जा सकती।"

"अब यह तो उसका मूड है। ऐसी हरकतें वह करता ही रहता है।"

"अर्थात वह दे सकता है।"

"जी हां।"

"वह कौन भाग्यशाली होगा" सिमरन ने मन में उमड़ी हुई खुशी को दबाते हुए कहा।

"यह मैं नहीं जानता।"

"अच्छा मिस्टर गोपाल। आज तुम साईट पर जा रहे हो।"

"जी नहीं। यदि आप कहें तो चल सकता हूं। लेकिन दो तीन दिन मैं जाना नहीं चाहता।"

"नहीं। नहीं। मेरे कारण जाने की आवश्यकता नहीं। दो तीन दिन तुम व्यस्त हो तो ठीक है। जिस दिन जाना हो उससे एक दिन पहले मुझे कह दीजिएगा।"

"बेहतर।"

"लेकिन उस दिन तक उससे बात अवश्य कीजिए। यदि वह मान जाए तो बेहतर है। बात यह है कि मैं अपनी पोजीशन का अनैतिक लाभ नहीं उठाना चाहती।"

"लेकिन यह अनैतिक लाभ नहीं। उसे इतनी बड़ी कार की आवश्यकता नहीं। और आप मुफ्त में ले नहीं रही हैं।"

"वह तो ठीक है। फिर भी वह यह सोच सकता है कि मैं अपनी पोजीशन का लाभ उठा रही हूं। वह मेरे लिए कोठी बनवा रहा है। इसलिए मैं इसकी आड़ में कार खरीदना चाहती हूं।"

"बेहतर। यदि आप ऐसा चाहती हैं तो ऐसा ही होगा।"

"अच्छा गोपाल तो मैं तुम्हारे फोन की प्रतीक्षा करूंगी।"

"कार न ही सही। यूं भी आपको अधिकार है कि कोठी बनती देखें। आखिर आपने वहां रहना है। कोई आवश्यक परिवर्तन चाहें तो हो सकता है। आपकी पसन्द को जगह दी जा सकती है" गोपाल ने कहा।

"हां। मैं यह सब समझती हूं। अच्छा बाई।"

"बाई।"

फोन बन्द हो गया।

सिमरन ने पुष्टी कर ली थी कि गोपाल आज साईट पर नहीं जा रहा है इसलिए आज वह साईट पर जाएगी। शाम का वही समय उपयुक्त रहेगा। इस समय वहां एकान्त होता है। केवल गोरखा होता है। यदि कोई हुआ भी तो वह यही कहेगा कि मैं कोठी देखने गई हूं।

फिर भी वह अकेला हो क्या बात है। लेकिन आज वह अपनी कार छोड़ सकती थी लेकिन अपनी कार कोठी से थोड़ी दूर खड़ी कर देगी।

▫

शाम को सिमरन ने वह कार संभाली जो बहुत कम इस्तेमाल होती थी। उसने टेनिस खेलने का सफेद लिवास पहिना। पांव में सफेद कपड़े के शूज सफेद मोजे, निकर जिसमें से उसकी सुडोल जांघे आधी से अधिक नंगी दृष्टिगोचर हो रही थीं। और कैमरक की मर्दाना कमीज। जिसका गरेबान उसने खिलाड़ियों की तरह खुला छोड़ दिया। इस खुले गरेबान से उसकी छातियों का उभार दिखाई दे रहे थे। हाथ में रैकट। जैसे वह किसी सहेली के यहां या क्लब में टैनिस खेलकर आ रही थी। वह यह दिखाना चाहती थी कि कोठी देखने न गई थी।

और जिस समय वह कोठी पर पहुंची। तो उसने अपनी कार रोकी नहीं बल्कि सीधी आगे निकल गई। और कोठी पर उचटती दृष्टि डाली यह पुष्टि करने के लिए कि मजदूर और राज काम कर रहे हैं या नहीं। और इस बात की पुष्टी हो गई। जो दूसरे वह इस बात की पुष्टी चाहती थी कि कपल की कार खड़ी है या नहीं। यदि खड़ी होगी तो कपल अन्दर था। यदि नहीं तो लौटते समय कोठी पर केवल एक निगाह डालती और एक क्षण के लिए रुक कर चौकी-दार से पूछती कि कपल है या नहीं।

कपल की कार खड़ी थी।

सिमरन की आंखों पर धूप का चश्मा था। वह धीरे से मुस्करा

रही थी और वह कार को आगे निकाल ले गई।

"इस कार का सौदा करना पड़ेगा" सिमरन ने सोचा। और स्वयं अपनी सोच पर मुस्करा दी।

कार का सौदा होता है या नहीं। फिर भी कपल से बातचीत करने के लिए एक विषय सदैव खुला था।

कार दौड़ रही थी।

आखिर वह कपल को इस तरह क्यों मिलना चाहती थी। उस दिन कपल ने उसके प्रस्ताव को समझा न था। वह उसे ठुकराना न, कहना चाहती थी क्योंकि यदि वह यह समझ लेती कि कपल ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया है तो फिर उसकी कपल से दोस्ती की जगह शत्रुता उन गई होती। इसलिए वह यही समझना चाहती थी कि कपल आत्महीनता के कारण उसके प्रस्ताव को स्वीकार न कर सकता था।

पैसे वाले प्रत्येक बात को केवल अपने दृष्टिकोण से परखते हैं। और अपने दृष्टिकोण से सोचते हैं। वह अपनी सोच के इर्द-गिर्द दिवारें खड़ी कर लेते हैं। और निज को इन दिवारों में बन्द करके सोचते हैं कि वह स्वतंत्र हैं।

कार दौड़ती रही।

अचानक सिमरन को ध्यान आया कि वह कोठी से आगे निकल गई थी। इसलिए उसने कार की चाल धीमी की और फिर उसे ब्रेक लगा दी।

यह सड़क सुनसान सड़क थी। न मालूम इस सड़क पर किस समय रौनक होगी। उसने बैक्व्यु आइने में देखा लेकिन आधा मील तक कोई कार नजर न आ रही थी। यानी इसका कोई पीछा न कर रहा था।

उसने कार को घुमा दिया। और जब वह सड़क पर गई तो उसे पूरी चाल से छोड़ दिया।

"कहीं कपल चला न जाए।" उसने सोचा, फिर उसने यहीं

देखी। लेकिन कोठी के आगे से निकले उसे बारह मिनट हुए थे। वह दस मिनट में वहां फिर पहुंच सकती थी। लेकिन बाईस मिनट में कपल जा सकता था। उसने उस दिन तो पूछा ही न था कि वह कितने बजे तक वहां बैठा रहता है।

उसे इतनी दूर न आना चाहिए था। फिर भी अब क्या हो सकता था। वह केवल यही कर सकती थी कि चाल बढ़ा दे।

वरास वैगन के ऐक्सीलेटर पर दबाव की देर थी कि कार हवा से बातें करने लगी और स्पीड मीटर की सुई १२० किलो मीटर दिखाने लगी। यह जर्मन कार क्या कार थी। लेकिन इसका इंजन इतना ताकतवर था कि बड़ी-बड़ी कारों को मात दे दे।

सिमरन मुस्करा रही थी और स्पीड की घड़ी को देख रही थी और मन ही मन गुनगुना रही थी।

अभी कोठी शायद पौन मील दूर थी। लेकिन इसकी उत्सुक दृष्टि मरसीडीज को खोज रही थीं। यदि मरसीडीज खड़ी थी तो कपल भी वहां था। लेकिन अभी मरसीडीज कहां से नजर आती। जबकि कोठी नजर न आ रही थी। जिसकी दूसरी मंजिल की भी छत डाली जा चुकी थी।

और मरसीडीज खड़ी थी।

"ओ भगवान" सिमरन ने शांति का गहरा सांस लेकर ऐक्सीलेटर से पांव हटा लिया। और स्पीड की सुई नीचे आने लगी १०० किलो मीटर ८०—६० फिर चालीस।

मरसीडीज के बिल्कुल पास जा कर उसने ब्रेक पर पांव रख दिया। वरास वैगन ने आवाज न पैदा की। चुपचाप रुक गई।

सिमरन ने मुस्कराकर कोठी पर दृष्टि डाली। वहां जीवन के लक्षण न नजर आ रहे थे। और यही वह चाहती थी। उसे जीवन के लक्षण नहीं चाहिए थे। उसे जीवन चाहिए था और वह जीवन केवल कपल दे सकता था।

सिमरन कार से उतरी। उसने दरवाजा बन्द किया। ताला

लगाना उचित न समझा। यहां से कार कौन चोरी कर सकता था टेनिस का रैकट उसके हाथ में था। और वह उसे घुमाती हुई कोठी की ओर बढ़ने लगी। जैसे वह वास्तव में टेनिस खेल कर आ रही थी।

कहीं ईंटों का चट्टा था। कहीं रोड़ी पड़ी थी, कहीं लोहे का सरियों—वह इन सबके बीच से गुजरती हुई और गर्द मिट्टी से बचती हुई कोठी में पहुंच गई।

बरामदा बहुत बड़ा बनाया गया था जहां अच्छी कौनफ्रैन्स हो सकती थी। या कुर्सियों पर पच्चीस तीस आदमी बैठ सकते थे। इतने बड़े बरामदे अब कौन रखता था। फिर भी यह कपल की पसन्द थी और वही शिल्पकार था।

सिमरन अब सम्हल गई। यूं तो उसने कैनवेस के शूज पहन रखे थे। चलने में जो आवाज पैदा नहीं करते लेकिन वह संभल-संभल कर रख रही थी।

वह मेन हाल से निकल कर पहले बेडरूम में गई। तो वहां कोई न था। कोई न था से तात्पर्य था कि कपल न था। दूसरे बेड रूम में भी न था। तीसरे बेड रूम में कपल था।

सिमरन जैसे ही प्रविष्ट हुई। कपल को देख कर उसने पांव पीछे खींच लिया। यह वह बेड रूम न था जहां वह पहली बार कपल से मिली थी। यह दूसरा बेड रूम था। और कपल ईंटें जोड़ कर बैठा था और किसी सोच में लीन था।

सिमरन उसको देखने लगी।

दो मिनट-पांच-सात-दस-बारह अब वह अधिक प्रतीक्षा न कर सकती थी। इस दशा में खड़े-खड़े तो वह परेशान हो रही थी। उसने कमरे की ओर कदम रखे और इस तरह रखे जैसे वह तेजी से चली आ रही थी।

"तुम" उसने रुक कर कहा।

कपल ने आंखें उठाकर देखा। अपनी सोच को भंग कर डाला,

"आप मेरा मतलब है लेडी युवराज नमस्ते ।"

"बैठे रहो" कहकर सिमरन उसके पास चली गई ।

"नहीं । आप कब आईं ।"

"मैं अभी आई हूं ।"

"अभी" कपिल ने उसको ऊपर से नीचे तक निरीक्षण किया । फिर नीचे से ऊपर तक । और जब उसकी दृष्टि उसके सीने पर पहुंची तो रुक गई ।

सिमरन जानती थी कि वह उसके वक्ष के उभार को देख रहा है लेकिन वह उसी दशा में खड़ी रही । उसके कन्धों पर दुपट्टा तो था नहीं जिससे वह ढंक सके । बल्कि उसने तो खिलाड़ियों की भांति परिधान को धारण कर रखा था ।

"आप टेनिस खेलने जा रही हैं—कहते-कहते कपिल अपनी दृष्टि उसके चेहरे पर ले गया ।

"नहीं खेल कर आ रही हूं ।"

"खेलकर आ रही हैं" कपिल ने चौंक कर पूछा ।

"तुम चौंक क्यों गए । क्या मैं टेनिस नहीं खेली तुमने तो यूं कहा है जैसे मैं पहली बार टेनिस का रैकट उठाए फिर रही हूं । आज फरीदाबाद फैक्टरी गोल्फ क्लब में मैच था ।" सिमरन ने कहा ।

"और मैं समझा था आप खेलने जा रही हैं" कहकर कपिल ने फिर उसके पांव को देखा । वहां सफेद शूज चमक रहे थे ।

अब सिमरन ने अपनी कमजोरी पकड़ ली थी । कपिल ने उसके चमकते हुए जूतों को देखकर कहा था कि आप टेनिस खेलने जा रही हैं यद्यपि वह इसी बात पर हठ कर रही थी कि वह टेनिस खेलकर आ रही है । यदि वह खेलकर आ रही होती तो आवश्यक था कि उसके शूज पर मिट्टी और घास लगी होती ।

"तुम इस अकेले मकान में इन वीरान कमरों में अकेले बैठे क्या सोच रहे थे" सिमरन ने प्रश्न कर डाला ।

"कुछ नहीं ।"

"कुछ नहीं। तुम छुपा रहे हो?"

"लेडी युवराज! आप जानती हैं कि एक शिल्पकार इस अकेले और खाली मकान में क्या सोच सकता है।"

"लेकिन मैं तुम्हारी जुबान से सुनना चाहती हूं।"

"एक शिल्पकार के दिमाग में तो हर समय यही होता है कि वह मकान को सुन्दर से सुन्दर कैसे बनाए। उसे अधिक से अधिक सुखदायक कैसे बनाए" कपल ने कहा।

"मैं मानती हूं। तो इस समय तुम बैडरूम में बैठे थे। और इतने गहरे सोच मे थे कि तुम्हें मेरे आगमन का पता ही न चला।"

"नहीं!" जैसे ही आप दाखिल हुईं मैंने चौंककर देखा।

"अब तुम्हें यह भी मालूम नहीं कि मैं कब दाखिल हुई थी।"

"आप अभी-अभी तो आई थी।"

"नहीं! मुझे आए तो एक सदी गुजर गई है। जब मैं आई तो तुम सोच में खोए हुए थे। जैसे ही मैंने एक कदम भीतर रखा उसी क्षण उसे खींच लिया और वहां खड़े होकर तुम्हारा निरीक्षण लेने लगी। फिर समय दिन, मास, वर्ष गुजरने लगे। लेकिन तुमने अपनी सोच न तोड़ी और जब एक सदी से अधिक समय गुजर गया तो मैं दुबारा बैडरूम मे आई। और तब तुम चौंके। देखा मैंने कहा है न दुबारा बैडरूम मे सिमरन ने कहकर हल्की-सी हंसी पैदा की।

"आपने ठीक ही तो कहा है। यह बैडरूम ही तो है।"

"यह खाली कमरा। यह नगी दीवारें। यह कच्चा फर्श—क्या इसे बैडरूम कहते हैं" सिमरन ने प्रश्न किया।

"अभी-अभी तो यहां सब कुछ था।"

"वह तुम्हारी कल्पना मे था।"

"हां अब तो यह ही कह सकता हूं।"

"तो क्या कुछ था अभी-अभी यहां।"

"इस जगह डबल बैड। सागवान का जिस पर वालनट का पालिश। इस बैड पर ही नहीं। इस कमरे मे जितना फरनीचर

होगा। उसका रंग अखरोट का होगा। वह पहला बैडरूम सागवान अपना रंग रखेगा। कपल ने पहले बैडरूम की ओर संकेत किया लेकिन इस बैडरूम के फरनीचर का रंग अखरोट की दीवारें आपकी आंखों की तरह ब्राउन—इस हल्के ब्राउन में अखरोट का गहरा रंग चमक रहा होगा। इसी तरह आपकी वार्ड रोब होगी। जिसमें केवल साड़ियां होंगी।"

"सूट, मैकसी, बैल बाटम इत्यादि" सिमरन ने प्रश्न किया।

"वह बैडरूम नम्बर एक में।"

"और इस बैडरूम को नम्बर दो कहते हो। और यहां केवल साड़ियां होंगी।"

"हां।"

"और वह बैडरूम नम्बर तीन होगा।"

"हां।"

"और वहां किस प्रकार के लिबास होंगे।"

"चोली, घाघरा, यूरूपियन स्टायल के फ्राक ओडियन, इगल, गाउन" कपल ने कहा 'गरारे कमीज़।'

"खूब! और NAGLIGEE।"

"वह आप हर कमरे में पहिन सकती है।"

"तुम जानते हो कि मैं NAGLIGEE के नीचे कुछ नहीं पहिनती।"

"मैं नहीं जानता था" कपल ने झेंपकर कहा।

"खैर! तुम इसे कल्पना में जान सकते हो।"

सिमरन ने मकारपूर्ण मुस्कराहट से कहा।

"विवाद का विषय न बदलो।"

"तो जिस रात तुम साड़ियां पहनना चाहोगी यह बैडरूम होगा। यहां वह वार्डरोब होगी। जिसमें साड़ी ब्लाउज, पेटीकोट, ब्रेसरी और सैंडल का स्टाक होगा।

"तुम्हारा मतलब है साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट और सैंडल एक

ही रंग के होंगे" सिमरन ने प्रश्न किया।

"हां! और चाहें तो केसरी भी।"

"ओ हां! इसे मैं भूल गई थी। कहकर सिमरन ने उसकी आंखों में झांका। लेकिन आज कपल वह पहले दिन वाला कपल न था। आज वह परिणाम में निडर था।

"यहां ड्रैसिंग टेबिल होगा। और चारों दीवारों पर चार आदम कद आईने होंगे।"

"ताकि मैं निज को और अपने शरीर को चारों कोणों से देख सकूं।"

"जी" कपल के होंठ खुश्क हो गए।

"इस पर मेकअप का हर किस्म का सामान होगा और कमरे में रोशनी DIRECT भी होगी और IN DIRECT भी।"

"मेकअप करते समय तो डायरेक्ट (सीधी) रोशनी की आवश्यकता होगी।"

"जी हां।"

"युवराज साहिब! इस दरवाजे से प्रविष्ट होंगे।"

'आह हां" सिमरन ने मुंह बनाया।

"इनके लिए यह बाथरूम होगा।"

"और वह बाथरूम जिसकी तुम उस दिन चर्चा कर रहे थे।"

"तीनों बैडरूम के लिए एक-एक अलग बाथरूम है। जिसे युवराज साहिब इस्तेमाल करेंगे और तीनों बैडरूम के लिए एक कामन बाथरूम होगा जो केवल आपके लिए होगा जिसका नक्शा मैंने उस दिन बनाया था।"

"बिल्कुल।"

"तब ठीक है। इस INDIRBCT (तिरछी) रोशनी में जो इस समय की रोशनी से कम होगी।"

"जी हां।"

"मैं अपने बाथरूम से आऊंगी। और वह इस बाथरूम से—

और कमरे के ठीक बीच में—यानी यहां—इस जगह—जिस जगह हम खड़े हैं मिल जाएंगे—हो सकता है कि पहले वह मेरे गले में बांहें डाल दे। यह भी हो सकता है कि पहले मैं इनके गले में बांहें डाल दूं। इस तरह कहकर सिमरन ने अपनी बांहें कपल के गले में डाल दीं।

कपल बुतकी सदृश निश्चल खड़ा था।

"और इस तरह बांहें डालकर यदि झूल जाऊं तो मैं गिर तो न पड़ूंगी।"

"अजमा कर देख लो" कपल ने उखड़े सांस से कहा।

सिमरन झूल गई। उसके शरीर को छू तो दिया और उसक सारा बोझ कपल की गर्दन पर था। लेकिन कपल उसे बड़ी सरलत से संभाले हुए था। उसका शरीर कपल के शरीर से मिल चुका था इनमें कोई दूरी न थी। केवल एक परिचय बचा था जिसे सिमर: करा सकती थी।

"कपल!"

"हूं।"

"तुम जानते हो कि इस समय क्या अनुभव कर रही हूं।"

"क्या?"

"जैसे मैं एक विमान चालक हूँ। मेरे विमान को आग लग : है और मैं छतरी के द्वारा नीचे उतर रही हूं।"

"ओह!"

"काश यह उतरना कभी समाप्त न हो। कभी नहीं—कम कम उस समय तक जब तक जवानी शेष है।"

"और फिर?"

"फिर कौन जाने बुढ़ापा तो मौत की आरजू और प्रतीक्षा लेकिन जवानी एक जिन्दगी है।" कहकर सिमरन अपने बा और उसकी गर्दन के सहारे खड़ी हो गई। और उसने अपने हुए होंठ उसके होंठों पर रख दिए।

वह क्षण भरपूर था। दोनों ओर से जवाब भी भरपूर था।

दोनों की आंखें बन्द थीं। "जानते हो मैं क्या सोच रही हूं।" सिमरन ने उसके कान में कहा।

"क्या ?" कपल का स्वर शायद उसने अधिक उखड़ चुका था।

"काश।" मैंने NEGLIEE पहन रखी होती।"

"ओह।"

"क्या ओह।" सिमरन ने अपना सिर उसके सीने से रगड़ते हुए कहा। और साथ ही उसका एक हाथ उसकी कमीज के बटन खोलने लगा।

□

फिर वह एक दूसरे से परिचित होने लगे।

जब तूफान गुजर गया और इन्हें होश आया। तो वह फर्श पर एक दूसरे के साथ-साथ लेटे हुए थे।

"कपल। सिमरन है।"

"हां, कहकर कपल ने इस अंधकार में पेंट तलाश करनी चाही। जब मिल गई तो उसकी जेब से सिगरेट केस निकाला, एक सिगरेट उसने सिमरन के होंठों को लगाया और दूसरा अपने होंठों को लगाया और लाईटर से सुलगाया।

"लेडी युवराज। आओ कपड़े पहन लें।"

"लेडी।" सिमरन खिलखिला कर हंस पड़ी।

'सचमुच मैं इस समय एक लेडी ही नजर आ रही हूं।"

"लेडी। हर हालत में लेडी रहती है।"

"क्यों नहीं। विशेष कर इस समय। इस वातावरण में—इस नंगे फर्श पर है बल्कि कच्चे फर्श पर। सफेद धब्बे लिबास पर मिट्टी-सिमेंट के निशान तो मेरे लेडी होने की साक्षी देते हैं।

"हूं।"

"जानते हो कि मैं जीवन में पहली बार इस तरह जमीन पर लेटी हूं।"

"पसन्द आया।"

पसन्द "सिमरन ने कर लिया।" मैं सातवें आकाश पर उड़ रही थी। डनलप के पलंग और युवराज—दोनों एक से हैं। कभी-कभी तो मैं सोचती हूं कि डनलप का पलंग अधिक नर्म और गद्देदार है या युवराज साहिब।

"ओह।"

देखा तुम्हारी लेडी जिन्दगी की सबसे बड़ी और कीमती वस्तु खो रही थी। उसे पता ही न था कि डनलप पर सो-सो कर वह डनलप बन गई है यह शरीर जो टैनिस खेल-खेल कर कितना सख्त और सुखाल है भला यह डनलप के पलंग पर लेटने के लिए बना है।

"नहीं।"

"बिल्कुल ठीक कहा। यह शरीर तो इस कच्चे फर्श मिट्टी, सिमेंट के लिए बना है। फर्श समतल भी न था कहकर सिमरन हंसी। उसकी हंसी इस अंधेरे में संगीत समान लगा रही थी। जानते हो कच्चे फर्श पर शायद कंकर और रोड़े भी थे। और कुछ ने तो मेरी पीठ पर घुस कर घाव भी कर डाले है।

"मुझे खेद है।"

ओ नहीं। मैंने कहा ना मैं सातवें आकाश पर थी।"

"युवराज साहिब इन घावों को देखकर तथा सोचेंगे।"

"उनकी निगाह पीठ तक नहीं जाती।"

"ओह।" कहकर कपल ने गहरा सांस लिया।

'यह गहरा सांस हमदर्दी का है।"

"नहीं।"

"फिर ठीक है। तुम जानते हो मुझे हमदर्दी से घृणा है।

"लेकिन क्यों।"

"इसलिए कि युवराज मेरी पसन्द है।"

तुम्हारी पसन्द।"

"हां। और तुम क्या समझते थे।"

"यही कि तुम्हारे माता-पिता की विवशता।"

"ओ नो। बिल्कुल नहीं।"

"लेकिन लेडी सिमरन।"

"एक बार फिर कहो।"

"लेडी सिमरन" कपल ने कहा।

"बहुत पसन्द आया" जैसे किसी पहाड़ी झरने की आवाज हो। सचमुच मैं यह शाम कभी न भूलूंगी। यह वेटिंग रूम मुझे सदा याद दिलाएगा कि जब यह वेटिंग रूम था लेकिन वेडरूम के तौर पर इस्तेमाल हुआ था।

"मेरा विचार है अब चला जाय।"

"क्या थक गए हो।" सिमरन की आवाज आई।

"शायद मैंने तुम्हारे सीने पर अधिक बोझ डाल दिया है" कहकर उसने सीने से अपना सिर उठाना चाहा। लेकिन कपल ने हाथ बढ़ाकर फिर रख दिया।

"बोझ नहीं। मेरा मतलब था कि आपको देर हो रही होगी।"

"यह उर्दू का शेर याद है।"

"नहीं। लेकिन सुनना चाहूँगा।"

"पूरा शेर याद नहीं।"

"गालिब खस्ता के बगैर कौन से काम बन्द हैं।"

"लेकिन आपके बिना तो क्लब पार्टियां और उद्घाटन न वीरान मालूम क्या कुछ सुनसान और वर्णन हो जाता है। और क्या क्या काम बन्द हो जाते हैं।"

"जानते हो लोग मुझे किस प्यार के नाम से पुकारते हैं।"

"नहीं।"

लोगों ने मेरा नाम रखा है 'फितना' पसन्द आया?

"लोग पागल हैं।"

"ओह और तुम।"

"तुम फितना नहीं।"

"फिर।"

"तुम एक लेडी हो।"

"ओह" कहकर सिमरन हंस पड़ी। "वह हंसी तो इसका चेहरा और सीना कपल के सीने से टकराने लगे।"

"चलो मैंने तुम्हें हंसा तो दिया।"

"जरुर।" जरुर। सिमरन ने हंसी पर काबू पाते हुए कहा। सच-मुच मैं एक अरसे बाद हंसी हूं। वरना मेरे होठों पर एक ऐसी मुस्कराहट रहती है जो मैं इस समय पैदा करती हूं जब किसी को नीचा दिखाना हो। हानि पहुंचानी हो या किसी का बुरा करना हो।

"मैं ऐसा नहीं समझता। आपके अन्दर एक औरत भी है जिसे यह दुनियां नहीं जानती।"

"और तुम जान गए हो" सिमरन खोखली हंसी से बोली।

"कुछ-कुछ।"

"क्या बताओगे।"

"नहीं। जब तक आप स्वयं न बताएं।"

"लेकिन कहा तो यूं था जैसे दिल का हाल जानते हो।"

"जानता तो हूं।"

फिर बताते क्यों नहीं।"

"खैर। पहले यह बताईए कि आप हंसी क्यों थीं जब मैंने आपको लेडी कहा था। यद्यपि मैं सदा आपको लेडी कहता हूं।"

"हंसती न तो और क्या करती। स्वयं ही सोचो इस दशा में यदि घर जाओ तो जो लोग देखेंगे वह सवाल करेंगे क्या बात है लेडी सिमरन! आप तो पहलवान की भांति अखाड़े से आ रही हैं। और इसी तरह पीठ और शरीर पर मिट्टी लगी है। क्या लेडी का यह हुलिया होता है।" सिमरन ने कहा।

"नहीं।"

"तो मैं ठीक हंसी थी न।"

"हां।"

है या चिढ़ ।" सिमरन ने कहा और धीमे से कश खींचा ।

"वह क्यों ?"

"वह तालाव इसीलिए वनवाते हैं ताकि मैं ठंडी रहूं ।"

"क्या मतलव" कपल चौंक कर वैठ गया । और सिगरेट केस में से सिगरेट निकालने लगा ।

"मतलव जो तुम समझते हो । आखिर एक औरत औरत के साथ क्या कर सकती है । मैंने सुना है कि कुछ औरतें LESBTON होती हैं । इन्हें शांति तो प्राप्त हो जाती है । लेकिन मेरा जीवन तो इनसे भी गया गुजरा है । राज साहिव का विचार है कि तालाव में तैरने से इन्सानके उदगार ठंडे रहते हैं ।"

"नान सैन्स" कपल चिल्लाया ।

"यह वात अपने मालिक के वारे में कह रहे हो ।" सिमरन ने कटाक्ष किया ।

"सोरी । लेकिन, लेकिन"—लेडी युवराज न ।

"घवराओ नहीं । यह वात उन तक नहीं पहुंचाऊंगी । मैंने तो मजाक किया था । हां तो यह वात है कि हर कोठी में मेरे लिए तालाव वनवाया जाता है । और इस कोठी में भी तुम वनवा रहे हो । लेकिन आज पहली वार मेरे अन्दर यह इच्छा पैदा हुई है कि मैं तालाव में नहाऊं या नहीं ।"

"क्यों ।"

"इसलिए कि पहली वार मेरे उद्गार शांत हुए हैं ।"

"ओह ।"

"धन्यवाद" सिमरन ने कहा ।

"धन्यवाद की आवश्यकता नहीं । जो स्याति आप को प्राप्त हुई है वह मुझे भी हुई है । अमरीका में तो अक्सर ऐसा होता है वल्कि ऐसा ही होता है । शाम को पुरुष-स्त्री मिले । एक दूसरे को पसन्द किया इकट्ठे विहस्की पी । खाना खाया—और शाम गुजारी और पैसे का प्रश्न ही नहीं होता । वल्कि खाना और व्हिस्की का मिल

की आधा-आधा देते हैं। यहां स्त्री कहती है कि मैं भी वही खुशी प्राप्त कर रही हूं जो तुम कर रहे हो। लेकिन यहां इस देश में न मालूम औरत कितने ही बड़े घर की क्यों न हो। वहां उसे उधार देना चाहता है। यानी खरीदना चाहता है" चन्दन ने कहा।

"तुम्हारा निरीक्षण मार्मिकतः ठीक है। और तुमसे आशा करती हूं मेरे साथ ऐसा कोई व्यवहार न करोगे।"

"ओहो। लेडी युवराज। ऐसा कभी न सोचिए। मैं आपसे [illegible] नहीं किया सकता। आप एक लेडी हैं मैं आपको कभी आभास न होने दूंगा कि आप अपने शरीर को बेच रही हैं। यह तो एक पारस्परिक समझौता और मनोरंजन है।" चन्दन ने कहा।

"बिल्कुल ठीक कहा है तुमने।"

"हूं" कहकर चन्दन ने सिगरेट सुलगाया और इन कुछ क्षणों, और नीरवता ने उसे समझने और सोचने का अवसर दिया।

"लेडी युवराज।

"हूं"

"एक व्यक्तिगत प्रश्न पूछूं?

"अभी जिस अवस्था से हम गुजरे हैं क्या इससे अधिक प्राइवेट है" सिमरन ने हंस कर पूछा।

"नहीं।"

"तो पूछो।"

"जहां तक मैं समझता हूं। यह विवाह रिश्ता नहीं है।"

"बिल्कुल नहीं।"

"दबाव।"

"नहीं।"

'ब्लैक मेल।"

"बिल्कुल नहीं।'

"फिर?"

"मेरी पसन्द।"

"आपकी पसन्द। आप जैसी विदूषी कैसे अपने होश खो सकती थीं।"

"खूब कहा तुमने। सचमुच यह विवाह होश खोकर ही किया गया था" सिमरन ने कहा।

"क्या युवराज साहिब ने जादू कर डाला था?"

"हां।"

"क्या?"

"सचमुच।"

"मैं सुनना चाहता हूं।"

"सुनो। लोग गर्मियों में पहाड़ों पर जाते हैं।"

"शिमला, मंसूरी, नैनीताल इत्यादि—"कपल ने टोका।

"बिल्कुल ठीक। और वहां कुछ होटल वाले या रेस्टोरेंट वाले अपने कारोबार को बढ़ा देने की खातिर और टूरिस्ट अपना व्यक्तित्व जताने के लिए वहाँ सौन्दर्य की प्रतियोगिता करते हैं। और सौन्द प्रतियोगिता को विभिन्न नाम देते हैं। उदाहरण स्वरूप एक रेस्टोरें ने मिस शिमला का चुनाव रखा तो होटल ने मिस होटल का चुना रख दिया जब मिस का चुनाव हो गया तो दो तीन सप्ताह बाद प्रिन्सी मंसूरी और प्रिन्सीस—होटल का चुनाव हुआ—। मिस और प्रिन्सी के बाद नया चुनाव ढूंढा जाता है। क्वीन यानी मलिका-महारा नैनीताल क्वीन या होटल—क्वीन।"

"हूं और भ्रमण कर्ता अपनी जवान और सुन्दर लड़कियों प्रदर्शनी या प्रतियोगिता में भाग दिलाते हैं" कपल ने बात काटी

"हां।" और उस वर्ष सौन्दर्य प्रतियोगिता हो रही थी। चुनाव का नाम था समर क्वीन—यानी ग्रीष्म ऋतु की मलिका या महारानी। मैं अपने माता पिता और भाई के साथ वह तम देख रही थी। स्टेज पर लड़कियां अपने आप बारी से आती थीं झलक दिखा कर चली जाती थीं।

रेस्टोरेंट में लोग शराब और वातावरण के नशे में धुत थे।

कसे जा रहे थे। और मन चले तो गंदे फिकरे भी उछाल रहे थे। लेकिन वहां सब चलता था। आखिर सौन्दर्य प्रतियोगिता का मतलब क्या है ? मध्यम वर्ग की वह लड़कियां जो सुन्दर थीं अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन करतीं। ताकि इनको कोई फौजी अफसर आई० ए० एस० या ऐसा ही कोई अफसर ब्याह ले।

हम इस तमाशे से मनोरंजन प्राप्त कर रहे थे। नंम्बर १५ की लड़की बहुत FAVORABLE थी। और तमाम लोग शोर मचा रहे थे कि उसे ही समर क्वीन न चुना जाए।

न मालूम कब और कहां से एक दुबला पतला मर्द जिसकी आयु चालीस के लगभग थी। नख-शिख बहुत ही तीखे थे और आंखें बहुत ही बुद्धिशील उसने सोहार का गर्म सूट पहिन रखा था जिसमें वह अच्छी तरह जच रहा था। इसके नक्श से अनुमान लगाया जा सकता था कि जवानी में वह लड़कियों पर बिजली गिराता होगा" कहकर सिमरन हंस पड़ी।

"आप हंस क्यों दी ?" कपल ने प्रश्न किया।

शायद मैंने मुहावरे का गलत प्रयोग किया है। क्या ऐसा नहीं कि लड़कियां बिजली गिराती हैं। मैं कह गई हू कि मर्द बिजली गिराता होगा।"

बिजली पुलिंग है या स्त्रीलिंग अभी इसका निर्णय नहीं हुआ। मेरा विचार है जब मर्द गिराता होगा तो न गिरती होगी" कपल ने हंस कर कहा।

"खैर उसकी दिलेरी का जवाब न था। वैसे जब तक उसने बातें की उसकी जुबान से एक भी गलत शब्द न निकला। यद्यपि उसने बहुत पी रखी थी।"

आते ही वह हमसे सम्बन्धित हुआ। "क्षमा कीजिए मैं बाधित हो रहा हू" उसने हमारे निकट खड़े होकर कहा।

व्हिस्की से वह नहा चुका था लेकिन होश कायम था।

"कहिए" मेरे डैडी ने कहा।

"मैं आपको देख रहा था। इस वातावरण में जितनी महिलायें या लड़कियां हैं। आप उनमें सबसे अधिक सुन्दर हैं। आप इस सौन्दर्य प्रतियोगिता में भाग क्यों नहीं लेतीं।" उसने बड़े सम्मानित ढंग से कहा। उसकी अंग्रेजी का उचारण बहुत ही निखरा हुआ था। जैसे वह वर्षों तक विदेशों में रहा हो।

"जी नहीं शुक्रिया" मेरे डैडी ने उत्तर दिया।

"नहीं। मिस आपको अवश्य भाग लेना चाहिए" वह मुझसे सम्बोधित हुआ।

"जी नहीं धन्यवाद" मैंने मुस्करा कर कहा।

"यदि आप भाग नहीं लेगीं तो मैं समझता हूं कि यह सौन्दर्य प्रतियोगिता नहीं। इकतंफा प्रतियोगिता है। सबसे सुन्दर लड़की यहां बैठी हो और वहां कुरूप लड़कियों का चुनाव हो रहा है।"

"अब आप अनुमान लगा सकते हैं। इस वाक्य ने क्या प्रभाव दिखाया होगा। कुछ वातावरण उसका प्रभाव, कुछ इसके व्यक्तित्व और कुछ इसके कहने का ढंग। और उस पर यह शब्द" सर्वोत्तम सुन्दरी यहां बैठी है। और वहां कुरूप लड़कियों में सौन्दर्य प्रतियोगिता हो रही है।"

"हम नहीं जानते थे कि वह कौन था। लेकिन जरूरी बात थी कि वह आवारा किस्म या अंडर सैक्रेटरी किस्म का कलर्क न था।",

मैंने डैडी को देखा। वह कोई फैसला न कर रहे थे।"

"मिस" भगवान ने आपको जो सुन्दरता दी है उसको देने वाले का अपमान न कराईए इन कुरूप लड़कियों को बताइए कि आप सुन्दर हैं। उसने झूमते हुए कहा।

सचमुच यह वाक्य कितना उत्तेजक था। जैसे किसी सिपाही को युद्धस्थल में उत्तेजित किया गया है।

मैंने फिर डैडी की ओर देखा।

"उन्होंने आंखें नीची कर रखी थीं। मैंने ममी को देखा। उनका चेहरा तो दमक रहा था जैसे वह स्वयं जवान हो गई हैं। और मेरी

आयु में पहुंच गई हैं ।"

"ममी यह क्या कह रहे हैं ?" मैंने कहा ।

"मैं ठीक अर्ज कर रहा हूं ।" उस पुरुष ने ममी की जगह उत्तर दिया । "भगवान के लिए सौन्दर्य का अपमान होने से बचा लो। वरना यह लोग सौन्दर्य का अपमान करके कुरूपता को आकाश पर चढ़ा देंगे ।"

"डैडी । मैं प्रतियोगिता मे भाग लूंगी ।"

डैडी के उत्तर से पहले उस मर्द ने जोर-जोर से तालियां पीटनी शुरू कर दी । और इतने जोर से पीटीं की तमाम लोगों का ध्यान हम पर विशेष रूप से मुझ पर केन्द्रित हो गया ।"

"लेडीज एण्ड जेंन्टलमैन । मैं आपको मिस''''''कहकर उसने मेरे कान में कहा" नाम क्या है आपका ?

"सिमरन" मैंने जल्दी से कहा ।

"थैंक यू ।" उसने झूमते हुए कहा, "लेडीज एण्ड जेंटलमैन ! मैं सिमरन से प्रार्थना कर रहा हूं कि वह इस सौन्दर्य प्रतियोगिता में भाग लें । और मुझे गर्व है कि इन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली है ।"

"तालियों का इतना शोर गूंजा जैसे मैं प्रतियोगिता मे भाग लेने से पहले ही चुनी जा चुकी हूं ।"

"मैं धड़कते दिल और कांपती टांगों से स्टेज की ओर बढ़ी । उफ ! वह क्षण कितने कठिन थे । समस्त शराबी आंखें मुझ पर केन्द्रित थी । लेकिन वह पुरुष मेरे साथ था ।

मुझे स्टेज पर छोड़ कर वह चल दिया। शायद अपनी कुर्सी पर । मेरा नम्बर चौबीस था ।

जैसे ही मुझे नम्बर मिला । शायद उसकी जोरदार आवाज ने रैस्टोरैंट को हिला डाला ।

"नम्बर चौबीस—मिस शिमला है ।"

"तालियां ।"

"तालियां।"

अथाह शोर।

और फिर क्या हुआ जैसे एक स्वप्न सा हो। मैं सौन्दर्य प्रतियोगिता में प्रथम आई। और महारानी चुनी गई। ग्रीष्म ऋतु की महारानी—समर क्वीन।

युवराज साहिब ने महारानी को ताज पहिनाना था। जब मुझे ताज पहनाया गया तो उन्होंने मेरे कान में कहा।

"चाहो तो मैं तुम्हें वास्तविक महारानी बना सकता हूं।"

"मैंने झेंप कर देखा।"

"और आप मलिका बन गई" कपल ने कहानी संक्षिप्त कर दी।

"हां यदि कहानी संक्षिप्त करना चाहते हो तो मैं लेडी युवराज बन गई।"

कपल जोश में खड़ा हो गया।

"खड़े क्यों हो गए ?"

"क्या सारी रात यहां व्यतीत करने का इरादा है ?"

"नहीं।"

"फिर ?"

"कहानी तो सुन लो।"

"अभी शेष है।"

"हाँ ! कलाईमेक्स तो अब आता है।"

कपल फिर बैठ गया।

"मलिका बनाने के लिए राज साहिब ने कहा कि वह धन खर्च करने पर मेरा हाथ न रोकेंगे। इनके सर्वाधिकार मेरे होंगे। नौकर, चाकर, कोठियों का रहन, दौलत, जवाहरात—लेकिन।"

"लेकिन···।"

"लेकिन मुझे आपरेशन कराना होगा।"

"आपरेशन" कपल चौंक पड़ा।

"हां। ताकि मैं बच्चे की मां न बनूं। और वह बच्चा धन

और संपति का दावेदार न हो" सिमरन ने धीरे से कहा ।

"ओह" कपल ने गहरा सांस लिया ।

"और आपने स्वीकार कर लिया ?"

"हां।"

"ओह भगवान । क्या संसार में धनवान इतने कठोर भी होते हैं । मैं नही जानता था ।" कपल ने कहा ।

"लेकिन यह सब कुछ मेरी स्वीकृति से हुआ ।"

"गलत, बकवास, तो यह है दूसरी औरत जो आपके अन्दर छुपी है । वह औरत जो बोझ बना दी गई है । जो ममता के लिए तड़प रही है, जो संतान का मुह नही देख सकती, जिसको कोख को सुला दिया गया है । जो बजर न थी बजर बना दी गई है ।"

"खैर छोडो इन बातो को । आखिर इसमे किसी का दोष नही । मैंने यही चाहा था और मुझे यही मिला ।"

"बेटे जानते हैं कि आप मां नहीं बन सकती हैं ।"

"राज साहिब ने शायद बता दिया है उन्होंने कभी इस विषय पर बात नही की । लेकिन ऐसा दिखाई पड़ता है कि इनका मेरे लिए सम्मान इसलिए स्थिर है क्योंकि वह जानते हैं कि इनकी संपत्ति मे तीसरा भागीदार नही । यू भी वह मुझसे अलग और दूर रहते हैं" सिमरन ने कहा ।

"हूं।"

"खैर । आज की शाम जो जिन्दगी मुझे मिली थी मैं उसे जीवित रखना चाहती हूं । मैंने जो खो दिया है । उसके बारे में आज की शाम नही सोचना चाहती ।"

"ठीक है ।"

"तुम जल्दी मे हो ।"

"नही । कहिए ।"

"थक तो नही गए हो ।"

"बिल्कुल नहीं ।"

"तो मेरे पास आ जाओ।"

"क्या आप चाहती हैं।"

"मैं आज की शाम विफल नहीं चाहती हूं।"

"फिर मुझे कल इस चौकीदार को नौकरी से अलग करना पड़ेगा" कमल ने कहा।

"क्या वह चुगली खाता है?"

"मैं नहीं जानता। लेकिन इससे पहले कि उसे चुगली खाने का अवसर मिले मैं उसे नौकरी से अलग कर दूंगा। ताकि वह जितना जानता है उतना भी किसी को न बताए।"

"मुझे खेद है?"

"किस बात पर।"

"एक गरीब की नौकरी मेरे कारण गई।"

"यदि इसके लिए खेद है तो इसके लिए खुश हो जाइए जिसे इसकी जगह मिलेगी।"

"ओह। मैंने तस्वीर का यह रूख सोचा ही न था।"

"हूं" कहकर कमल उसके निकट कच्चे फर्श पर लेट गया।

बारह

साधारण सी बात थी परन्तु अब साधारण न रही थी। यह चिंगारी अब शोलों में परिवर्तन हो गई थी।

सुरुचि तो अभी तक तय न कर पाई थी कि गुंडों की सहायता ली जाए या नहीं। लेकिन सिमरन ने अपने आदमियों की स्वामी भक्ति का विश्वास दिलाने की खातिर इन्हें गांव से बुला लिया। दो तीन को रिवाल्वर से सशस्त्र किया। दो को बन्दूकें दीं और दो को राई-फलें देकर टीचरज यूनियन के जलसे में भेज दिया।

गांव के लम्बे तड़गे जाट जिनके शरीर फौलाद से बने थे। रुपए की चाह। हथियार पास और बीबी सिमरन का आदेश—बस और क्या चाहिए था।

उन्होंने जाते ही हवा में फायर किए दो चार टीचरज के हाथ दिए और जलसा भंग ही न हुआ बल्कि मैदान में केवल जूते और PLAY CARD रह गए।

सिमरन अपनी ऐसी सुगमी विजय पर बहुत खुश थी। इतनी सफलता तो उसे आज तक न मिली थी। उसके आदमियों ने अपनी बहादुरी के वो जौहर दिखाए थे कि सारे शहर में धाक बैठ गई थी।

लेकिन यह विजय बिल्कुल सामायिक सिद्ध हुई। टीचरज को

सम्हालना सरल था लेकिन जब वह कपड़े फाड़कर एक समाचार पत्र के दफ्तर में पहुंच गए तो बात बिगड़ गई। इस समाचार पत्र के ज्वाईंट एडीटर ने सारे अखबारों के संवाद-दाताओं और फोटोग्राफरों को बुला लिया फोटो उतारे गए और बयान छाप दिए गए।

और अगले दिन के समाचार पत्रों में प्रथम पृष्ठ पर यह समाचार जरनी अक्षरों में छपा था।

"पूंजीपतियों का घोर अत्याचार। पिस्तौलों और बन्दूकों से यूनियन का जलसा अस्त व्यस्त कर दिया। कई टीचरज को तीव्र चोटें आई। और तीन अध्यापक हस्पताल में चिकित्सा प्राप्त कर रहे हैं।

सिमरन ने समाचार पत्र पढ़ा और मुस्करा दी। कम्युनिस्टों में एक विशेषता प्रशंसाजनक थी। वह बात को बहुत सुन्दर ढंग से बिगाड़ सकते थे। और जनता की सहानुभूति प्राप्त कर सकते थे।

तीन सूचनाएँ प्रकाशित हुई थीं। उनसे स्पष्ट था कि अब शोक और क्रोध की लहर आग का दरिया बन जाएगी। प्रत्येक व्यक्ति यह सूचनाएं पढ़ेगा, और पूंजीपतियों को अश्लील गालियां देगा। और इनको इतना बढ़ा-फैला देगा कि अध्यापकों की यूनियन की आग समस्त यूनियनों को अपनी आग की लपेट में ले लेगी।

यूनियन की वजह से मजदूर की आंखों में लाज जैसी कोई वस्तु का अस्तित्व न रहा था। प्रत्येक संगत या असंगत ढंग से विरोधी को क्षति पहुंचाई जाती थी।

और सिमरन अभी तक स्वप्न के संसार में थी। उस संसार में जहां मजदूर सिर न उठा सकता था। उसने जो कुछ किया था उस का उत्तर अब पत्थर से न आना था। बल्कि अब पत्थरों का रूप बदल गया था। अब प्रतिद्वन्दी को किस प्रकार क्षति पहुंचाई जाती थी इसका रूप बदल गया था।

कोठी लगभग पूरी हो चुकी थी। वह कई दिन से कपल को न मिली थी।

जब उसने समाचार पढ़े तो उसका मानसिक सतुलन बिगड़ गया। यद्यपि किसी ने उसका नाम न दिया था। क्योंकि अखबारों को सिमरन के पति के कारखानों फैक्टरियो और फर्मों का विज्ञापन मिलता था। लेकिन सिमरन तो जानती थी कि किस महिला की चर्चा होती है।

सबसे पहले सुरुचि का फोन आया।

"तुमने आज का समाचार पढ़ा है?" उसने पूछा।

"हां।"

"तुम्हारा नाम नहीं है। लेकिन हर तरीके से यही प्रगट किया गया है कि तुमने कराया है।

"*मैं जानती हूं।*"

"सिमरन। *अब तुम अगला कदम क्या उठा रही हो?*"

"अभी सोचा नही" *सिमरन* ने उत्तर दिया तो सुरुचि अब उस से अगले कदम के बारे पूछ रही थी। यद्यपि यह सब कुछ सुरुचि की वजह से हुआ था। और अब सुरुचि भी इसका तमाशा देखना चाहती थी। लेकिन सिमरन ऐसी हठीली नारी थी कि वह तमाशा न बन सकती थी। वह सिमरन थी। लेकिन इसके साथ साथ वह लेडी युवराज थी। उसने अभी तक पति को न बताया था लेकिन वह जानती थी कि यदि वह पति को बताएगी तो युवराज इसकी सहायता करेगा. इसकी प्रत्येक हरकत को संगत कहेगा। उसने आज तक सिमरन की किसी बात को गलत न कहा था।

"लेकिन सिमरन, परिस्थिति अब वश से बाहर दिखाई दे रही है। तुमने गुडे भेज कर गलती की।"

"लेकिन स्कीम तुम्हारी थी" सिमरन ने सच कह दिया।

सुरुचि को यह सच बुरा लगा। "लेकिन सिमरन मैंने यह सोचा भी न था कि वहा इतना बड़ा हगामा हो जायेगा।"

"तो तुमने क्या सोचा था" सिमरन ने क्रोध में होठ काटे।

"खैर। वह अपनी जगह है। लेकिन अब क्या करना चाहिए।"

"सुरुचि।"

"हूं।"

"तुम तो यूं कह रही हो जैसे यह फसाद मेरा खड़ा किया है। और अब इससे मुझे अकेले ही निवटना होगा।"

"नहीं। ऐसी वात नहीं" सुरुचि ने थके स्वर में कहा।

"क्या वात है सुरुचि तुम्हारे स्वर में जोश नहीं।"

"नहीं सिमरन मैं तुम्हारे साथ हूं।"

"मेरे साथ" यह कहकर सिमरन हंसी।

"सुरुचि आज की दुनियां में कौन किसी का साथ देता है फिर भी उसने जो कुछ किया है वह अपनी जगह है। यदि मैंने किया है तो इसका उत्तरदायित्व और नतीजा उठाने को तैयार हूं।"

"सिमरन! तुम भावावेश से काम ले रही हो।"

"लेकिन यह सत्य है। मुझे यूं अनुभव हो रहा है। जैसे आज तुम मेरी मित्र नहीं हो। लेकिन विश्वास करो सुरुचि मैं कदाचित् लज्जित नहीं हूं।"

"सिमरन डार्लिंग प्लीज। ऐसी कठोर वात न कहो।"

"मैंने कहीं थी?"

"फिर?"

"तुमने कहलवाई है।"

"सिमरन। तुम इस समय भावावेश और क्रोध में हो। मैं कुछ देर वाद फोन करूंगी" सुरुचि ने कहा "वेहतर" कहकर सिमरन ने क्रोध में फ़ोन वन्द कर दिया। यह सारा संसार अव मेरा प्रतिद्वन्दी है सिमरन ने मन ही मन कहा। अभी तूफान उठा रहा है। आग का दरिया सामने आया नहीं। और उसकी परम-प्रिय सखी उसका साथ छोड़ रही थी। लेकिन वह इस प्रकार जीवन की वाजी न हार सकती थी [illegible] चाहा था वह पाया था। जो किया था उसे सत्य स[illegible] गलत कैसे हो सकता था। लेकिन एक

"नहीं वह अकेली न थी।"

"कपल।" उसके मस्तिष्क ने उत्तर दिया कपल उसका था। कपल नम्र था। सहानुभूति रखता था। और मानव को समझने की शक्ति और दिमाग रखता था।

वह हार कर भी हार न सकती थी। उसके जीवन मे प्रेम की जो नई कोंपल फूटी थी वह कोंपल अभी कली बनेगी फिर फूल। वह उसके भयानक वातावरण को भुला कर अपने प्रेम के ससार में खो सकती थी। कपल उसके जीवन का ससार और गुप्त रहस्य था और इस गुप्त रहस्य कोई न जाता था। वह इस रहस्य को अपने जीवन से अलग नहीं कर सकती। उसे सुरुचि जैसी सखी की आवश्यकता न थी। स्त्री को प्रेम करने वाला पुरुष मिल जाए तो फिर उसे सहेलियो की आवश्यकता नही रहती। बल्कि सहेलियों की वजह से प्रेम का रहस्य खुलने का डर हो सकता है। और रहस्य बदनामी का कारण बन सकता है।

दिन व्यतीत हो गया। और वह शाम की बेचैनी से प्रतीक्षा कर रही थी। यद्यपि वह दिन मे भी जा सकती थी। और इस पर कोई रोक-टोक न थी। आखिर वह इसकी कोठी थी। वह मालिक थी। लेकिन कोठी न देखना चाहती थी। वह तो कपल को मिलना चाहती थी। और कपल से शाम को एकान्त में भेंट हो सकती थी।

दौलत और सखियां इस प्रकार साथ छोड़ देंगी। यह उसके स्वप्न मे भी न था। उसे तो आयुपर्यन्त दौलत की शक्ति पर भरोसा रहा था। उसकी सूझ अनुसार धन मे वह शक्ति थी जो ससार का हर काम करा सकती थी। लेकिन इस समय उसे मित्र की नहीं एक ऐसे मानव की आवश्यकता थी जो सोने का दिल न रखता हो बल्कि हाड़ मास का दिल और शरीर रखता हो।

सुरुचि के व्यवहार ने उसे निराश कर डाला था। और इतनी निराश वह आजतक न हुई थी। वह केवल आदेश देना जानती थी। वह केवल अपनी बात मनवाना जानती थी। लेकिन अब ले-

परिस्थिति उसके प्रतिकूल थी। और वह हताश हो गई थी।

शाम को चार बजे उसने अपनी कार उठाई दिन में सुरुचि ने उसे फिर दोबारा फोन किया लेकिन उसने बहाना कर दिया कि वह व्यस्त है। और फोन पर बात नहीं कर सकती।

मजदूर और राज पांच बजे काम बन्द कर देते थे। वह जब वहां पहुंचेगी तो मजदूर और राज काम समाप्त करके घर जा रहे होंगे। आज उसने व्हिस्की और सिगरेटों का प्रबन्ध कर लिया था। आज वह व्हिस्की के लिए प्यासी न रह सकती थी। और सिगरेट वह कपल को पिलाएगी। दो बार उसने उसके सिगरट फूंके थे।

जब वह कोठी पर पहुंची तो मजदूर और राज काम कर रहे थे। उसने चौंक कर घड़ी देखी घड़ी पांच बजकर पांच मिनट बजा रही थी।

राज मजदूर तो पांच मिनट पहले ही काम बन्द कर देते हैं। यह क्या था कि वह पांच बजकर पांच मिनट पर काम कर रह थे।

कार पार्क करके वह नीचे उतर आई। मजदूर और राज उसे ललचाई दृष्टि से देख रहे थे। लेकिन यह नई बात न थी। वह सीधी वहां पहुंची जहां कपल ने अपना निर्माण कार्यालय बना रखा था। मेज पर नीले रंग के नक्शे फैले हुए थे। लेकिन कपल कमरे में उपस्थित न था। एक मुंशी उपस्थित था।

"कपल साहिब कहां हैं ?"

"जी। वह तो शहर गए हैं।"

"शहर गए हैं।" सिमरन चौंकी। उसे अपनी गल्ती का आभास हुआ। उसने मरसडीज की अनुपस्थिति पर ध्यान न दिया था।

"जी हां" मुंशी ने पहली बार सिमरन को देखा था। लेकिन उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर सम्मानपूर्वक खड़ा हो गया।

"क्या लौटेंगे ?"

"जी हां। एक घंटे तक आ जाएंगे।"

"और यह काम कैसे हो रहा हैं।"

"ओवर टाईम। कोठी समय पर तैयार हो जाए।"

"कब तक काम करेंगे ?"

"दस बजे तक।"

"दस बजे तक" सिमरन पर जैसे बर्फ गिर गई थी। तो आज उसे कहीं भी शांति प्राप्त न होगी।"

लेकिन ऐसी क्या बात थी। वह कपल को लेकर कहीं भी जा सकती थी। किसी बढ़िया होटल में कमरा ले सकती थी। कोई उसे इन्कार न कर सकता था। लेकिन यह शाम। ऐसा दिखाई पड़ता था कि उसे अकेला ही न कर रही थी बल्कि इसके जीवन को वीरान कर रही थी। एक एक पल गिन कर उसने दिन काटा था। इस आशा पर कि शाम को अपनी उदासी और निराशा धो देगी। लेकिन परिस्थिति कुछ और ही नजर आ रही थी।

"आप विराजिए।"

"विराजूं..." सिमरन ने जैसे मन ही मन कहा।

"जी हां। मैं आपके पीने के लिए कोला लाता हूं।"

"नहीं। इसकी आवश्यकता नहीं। मैं सोच रही थी। कपल साहिब की प्रतीक्षा करना लाभदायक होगा या नहीं।"

"वह आएंगे जरूर।"

"अब सिमरन के आगे दो प्रश्न थे। वह प्रतीक्षा करे या चली जाए। यूं ही बेमतलब हाईवे पर कार चलाती रहे। या यहां बैठ-कर प्रतीक्षा करे।

"आप कोठी देखना पसन्द करेंगी" मुंशी ने उसकी मुश्किल सरल कर दी।

"कोठी।"

"जी हां। अब तो लगभग पूरी हो गई है। केवल कुछ दिन का काम है। सफेदी का ठेकेदार काम करा रहा है और बिजली का ठेकेदार भी।"

"तुम काम करो। मैं कोठी देखती हूँ" सिमरन ने कहा। आखिर

यह उसकी कोठी थी। और वह जांच पड़ताल करने की पूरी अधि-कारिनी थी। आखिर उसे क्या हो गया था जो अपने अधिकार भी विस्मृत कर रही थी। उसे कोठी देखने से कौन रोक सकता था।

वह पर्स घुमाती हुई कोठी देखने चली गई।

काम करने वाले उसे घूर रहे थे। लेकिन वह समझ गए थे कि कोठी की मालकिन ही होंगी।

एक घंटा व्यतीत हो गया और सिमरन बिल्कुल बोर न हुई। उसे पता ही न था कि मजदूरों को काम करते देखो या कोठी बनता देखो तो समय इस आसानी से कट जाता है।"

वह दुमंजिला कोठी की छत पर खड़ी थी। यहां वहां कोठियां बन चुकी थीं। कुछ बन रही थीं। यह सब कोठियां एक-एक हजार गज में बन रही थीं।

वह एक कोठी के निवासियों को बड़ी तन्मयता से देख रही थी और मुस्करा रही थी। काश इस समय उसके पास दूरबीन होती तो वह बहुत खुश होती।

उसे बिल्कुल पता न चला कि कपल कब आकर उसके पास खड़ा हो गया।

"क्या देख रही हैं लेडी युवराज ?"

"ओह" वह चौंक कर पलटी। तो उसका हाथ सीने पर चला गया "तुम। तुम ने मुझे डरा ही दिया ?"

"डरा दिया। और मेरा विचार है कि आपके जीवन में डर जैसी कोई वस्तु नहीं है। यह मेरे लिए बिल्कुल नई बात है।"

"आज मूड ही ऐसा था कि डर गई।"

"मूड कई किस्म के होते हैं। लेकिन मैं नहीं जानता था कि एक मूड डरने का भी होता है।"

"मेरा विचार था कि मुंशी ने झूठ बोला है। कि तुम लौट आओगे।"

"मुझे पता होता तो मैं कभी न जाता। मुझे खेद है कि आपको

प्रतीक्षा का कष्ट उठाना पड़ा।"

"कदापि नहीं। बल्कि यह बात मेरे लिए नई थी। यदि मजदूरों को काम करते हुए देखो तो समय किस आसानी और तेजी से कट जाता है।" खैर, एक बात जानकर खुशी हुई?

"कौन सी?"

"मैं सोचती थी कि आप यहां समय कैसे काटते होंगे।"

"आपने ठीक कहा है कि काम होता देख कर समय का पता नहीं चलता।"

"और मैं कुछ सोच कर आई थी।"

"क्या?"

"कि शाम तुम्हारे साथ गुजार सकूंगी। आज सुबह से ही इस शाम की प्रतीक्षा कर रही थी। लेकिन यहां आकर पता चला कि आज तो यहां काम होगा।"

"मैं अभी इनकी छुट्टी कर देता हूं।"

"नहीं। इस तरह तो संदेह हो जाएगा।"

"वह जानते हैं कि आप इस कोठी की मालकिन हैं। फिर मैंने इन्हें पेमेन्ट करना है। उन्होंने मुझे नहीं करना है। यदि मैं काम के बिना ही इनको पारिश्रमिक देने को तैयार हूं तो इन्हें क्या आपत्ति हो सकती है। और इस पर तुर्रा यह है कि वह मेरी दया पर निर्भर हैं। मैं उनकी दया पर निर्भर नहीं" कपल ने कहा।

'लेकिन मैं तुमको नुकसान नहीं पहुंचा सकती। मेरी ओर से तुमको लाभ होना चाहिए, न कि हानि।"

"मैं अपने लाभ हानि को अच्छी प्रकार समझता हू यह आपके सोचने की चीज नहीं है। मैं अभी इनकी छुट्टी करता हू।"

"लेकिन आप कोई बहाना सोचें। इन्हें शक हो सकता है।"

"वह बिल्कुल शक नहीं करेंगे। आप यह बात मुझ पर छोड़ दें" कहकर वह चलने लगा।

"लेकिन सुनिए तो।"

"जी नहीं। मैं आज की शाम नष्ट नहीं कर सकता।"

"क्या यह भी कांट्रेक्ट में है।" सिमरन ने हंस कर कहा। सिमरन के अन्तस्तल में जो प्रातः से उदासी छाई हुई थी वह समाप्त हो गई थी। कपल उसका जीवन बन गया था। इस उग्रत से उसने आज तक किसी को न चाहा था। लेकिन वह इतनी निर्बल कभी न हुई थी। वह अपनी कमजोरी को छुपाना चाहती थी। लेकिन अब देर हो गई थी। अब कपल कभी न मानेगा।

"कांटरेक्ट मैंने राय बहादुर युवराज से किया है।"

"लेकिन कपल मैं कुछ देर रुक सकती हूं।"

"रात तो उतर आई है। अब और कहां तक प्रतीक्षा करेंगी आप" बस दसमिनट में कोठी खाली हो जाएगी। आपको केवल, दस मिनट और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। आप पहले ही बहुत प्रतीक्षा कर चुकी हैं। कहकर वह चला गया।

सिमरन मुस्करा दी। आज भी उसका आदेश आदेश ही था। और यह बात गौरवपूर्ण थी। सुबह सुरुचि ने तो यह सिद्ध करने की चेष्टा की थी कि वह गलत है। शुरु से आदि तक गलत।

शाम के इस झुटपटे में उसने मजदूरों को अपनी-अपनी साईकलें उठाते देखा। न मालूम कपल ने क्या कहा था। यह सिमरन की विजय थी। और अपनी इस विजय पर वह मुस्करा दी।

जब अन्तिम मजदूर चला गया और केवल चौकीदार रह गया। तो कपल ने अन्तिम राऊंड लगा कर पुष्टि कर ली। वह फिर ऊपर छत पर चला गया।

सिमरन मूंडेर के साथ खड़ी थी। वह निकट जाकर बोला।

"युअर लेडी शिप। मैदान साफ है। केवल चौकीदार बाकी है। अच्छी तरह पुष्टि कर ली है।"

"कपल।"

"जी।"

"मालूम क्यों आज मेरी दाईं आंख फड़क रही है। जैसे कुछ होने

वाला है।" सिमरन ने कहा।

"यह केवल भ्रम है।"

"शायद।"

"शायद नहीं। निश्चय ही।"

"काश।"

"अच्छा वह कौन था जिसने आपको उदास बना डाला। मैं उसे कत्ल कर सकता हूँ।"

"था नहीं थी। एक सहेली। और कत्ल करने से मेरी उदासी दूर नहीं हो सकती। केवल तुम्हारा सामीप्य उसे दूर कर सकता है। इसीलिए मैं यहाँ चली आई।"

"छत पर बैठना पसन्द करेंगी आप।"

"नहीं। आज मैं तीसरे बैड रूम में बैठना चाहूंगी।

"तो मैं चौकीदार से कहता हूँ कि वहाँ कुर्सियाँ लगा दें।"

"इनकी आवश्यकता नहीं।"

"लेकिन। आज आपने टैनिस खेलने की पोशाक नहीं पहन रखी। आपकी यह कीमती साड़ी खराब हो जाएगी।

"मैं ऐसी सैकड़ों साड़ियाँ न्यौछावर कर सकती हूँ।"

मैं जानता हूं। आइए चलें। मैंने मोमबत्ती का प्रबन्ध कर लिया है।" कमल ने कहा।

"और चौकीदार भी बदल डाला है।"

"वह मैंने उस दिन ही कह दिया था और अगले दिन बदल डाला था।"

"वह दोनों चलने लगे। जब वह जीने उतरने लगे तो सिमरन ने उसका बाजू अपने बाजू में ले लिया।"

जानते हो। आज मैं विह्स्की साथ लाई हू। उस दिन व्हिस्की के लिए मुझे तरसना पड़ा था।

'.भविष्य में एक बोतल मैं सदा अपनी कार में रखूगा। कार की चाबी दीजिए मैं बोतल निकाल लाऊ।"

"डैश बोर्ड में पडी है।" कहकर सिमरन ने चावी बढ़ा दी।
मैं सबसे पहले उसे ही देखता हूँ।
"मैं जानती हूं आखिर तुम एक शिल्पकार हो और जानते हो कि व्हिस्की कार और कोठी में कहां रखी जा सकती है।"
"आपने वह जगह देखी है, जहां मैंने आपके लिए बार बनाया है।"
"हां और बहुत सुन्दर बनाया है।"
"धन्यवाद।"
"वह नीचे पहुंच गए थे। आप कहां बैठेंगी।"
"तीसरे बैड रूम में।"
"सोडे की जगह पानी पी लेंगी आप।"
"बिल्कुल।"
"कमरों में अंधकार था। और इनसे वह भीनी-भीनी महक उठ रही थी जो नए मकान से उठती है।"
"यह बैडरूम केवल एक कमरा था। खाली, वीरान और सजावट से शून्य। जब यहां आकर रहने का प्रबन्ध होगा तो फरनीचर से क्या से क्या बन जाएगा। फर्श पर वह कालीन होगा जिसमें पाँव एक-एक इंच धंस जाएंगें। पलंग नरम और मुलायम। आईना था आईना। आज वह इस बैडरूम को इस्तेमाल करेंगी। इसके उपरान्त तीनों बैडरूमों से कपल की याद और कहानी सम्बन्धित होगी और इसे यह सम्बन्ध पसन्द था। इसीलिए वह प्रत्येक बैडरूम प्रयोग कर रही थी।
कपल आया तो सामान उसके हाथ में था बल्कि इसके शरीर से चिपक कर चेहरे तक चला गया था। हाथमें जलती मोमवत्ती थी।
"सब कुछ स्वयं ही उठा जाए। मुझे बुला लिया होता। सिमरन ने कहा। उसने यह न कहा कि चौकीदार की सेवा ले ली होती।
"मैं आपको कष्ट न देना चाहता था। वह चौकीदार को भी यहाँ लाना न चाहता था।"
"लेकिन अब तो दरवाजे लग गए हैं। हम दरवाजा बन्द कर

सकते हैं ।"

"मैंने उचित न समझा। फिर दरवाजे लगे हैं। लेकिन खिड़कियों के शीशे नहीं।"

"सचमुच तुम कितने दूरदर्शी हो ?"

"मैं तो अब भी कहता हूँ कि कुर्सियां और मेज भी ले आऊं।"

"नहीं नीचे फर्श पर बैठेंगे। मैं कुर्सियों और सोफों की दुनियां से तो भाग कर आई हूं ?"

"कपल और सिमरन ने मिलकर सामान फर्श पर करीने से रख दिए थे जब रख चुके तो कपल बोला।"

'मैं मोमबत्ती को सामने रख देता हूं।"

"बेहतर।"

उसने मोमबत्ती रख दी। "अब केवल पानी का जग लाना है।" कहकर वह चला गया।

जब लौटा तो उसने देखा कि सिमरन के शरीर पर केवल पेटीकोट और ब्लाऊज था। साड़ी उसने फर्श पर बिछा दी थी। और स्वयं इस पर बैठी थी।

"यह क्या किया आपने। साड़ी तो खराब हो जाएगी।"

ड्राईक्लीनर साफकर देगा। वैसे फैंक भी दूं तो परवाह नहीं। गिलासों में व्हिस्की पड़ी थी। कपल बैठ गया। उसने गिलासों में पानी डाला।

"सिमरन ने बेताबी का प्रदर्शन करने की खातिर गिलास उठाया चियरज किया और कपल के गिलास से अपना गिलास टकराए बिना होठों को लगा लिया जब अलग किया तो आधा खाली था।

इस व्हिस्की के लिए मैं सुबह से प्यासी थी। अब जाकर नसीब हुई है "सिमरन ने कहा।

सिगरेट भी पड़े थे। वह भी लाए हो।

"हां।" कहकर कपल ने पतलून की जेब से दो पैकेट सिगरेट और माचिस निकाले। फिर पैकट खोलने लगा।

' कोई कोई दिन होता है कि काटे नहीं कटता कपल ने सिगरेट का पैकट बढ़ा दिया। ऐसी क्या बात है ?"

"हटाओ ! मैं इसकी चर्चा नहीं करना चाहती ।"

"क्या मैं इस योग्य नहीं ।"

"लेकिन मैं अकारण तुम्हें परेशान नहीं करना चाहती ।"

"यदि मैं परेशान होना चाहूं ।"

"कपल प्लीज ! मैं एक औरत हूं। एक अमीर व्यक्ति की पत्नि हूं। और प्रत्येक व्यक्ति के हजारों शत्रु होते हैं। मेरे और मेरे पति के भी हजारों शत्रु हैं। और यह शत्रु, जब इन्हें अवसर मिलता है वार कर देते हैं। इस किस्म के वार सहना और इनसे बचना हमारा जीवन है। यह तो दैनिकचर्या है। मैं तुम्हें ऐसी बात में क्या घसीटूं जो दैनिकचर्या हो ।"

"मैं आपकी बात झुठलाना नहीं चाहता। लेकिन जो थोड़ा बहुत दिमाग और थोड़ी बहुत सूझ-बूझ रखता हूं उसका तकादा कुछ और है ।"

"क्या ?" कहकर सिमरन ने गिलास होंठों को लगाया।

"आपने तीन बातें अजीब सी कही हैं ।"

"तीन बातें ! सिमरन के स्वर में उत्सुकता थी।

"जी हां ।"

"भला कौन सी बात ।"

"पहली यह कि किसी ने आज आपको उदास कर डाला। दूसरी यह कि आज आपको सुबह से प्यास थी ।"

"और तीसरी ।"

"आज का दिन इतना बोरिंग था कि काटे नहीं कटता था ।"

"तीनों बातें ठीक हैं ।"

"फिर मैं आपकी सहायता क्यों नहीं कर सकता ।"

"मैं तुम्हारे पास आई हूं ना ।"

"जी ।"

"इसीलिए आई हूं कि तीनों बातों का जवाब मिल जाए। मेरी उदासी, बोरीयत और प्यास का सब सामान यहीं है और मैं यहीं चली आई। इसीलिए कि तुम्हें मैंने सबसे करीब जाना। उससे भी जिसको मैं पन्द्रह बीस वर्ष से जानती हूँ।"

"यह मेरा सौभाग्य है।"

"तो फिर तुम शाम वीरान न करो। मैं जानती हूँ मुझे किस चीज़ की जरूरत है। और वह प्राप्त करने तुम्हारे पास चली आई हूँ। खेद केवल इस बात का है कि मैंने तुम्हारे कारोबार में बाधा डालकर तुम्हें नुकसान पहुँचाया" सिमरन खाली गिलास में ह्विस्की उड़ेलने लगी।

"मेरे नुकसान की चर्चा बेगानेपन का प्रमाण है। और मुझे पसन्द नहीं। लेडी युवराज हम मित्र हैं।"

"मैं जानती हूँ। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।" कहकर उसने गिलास होंठों को लगा लिया।

"लेडी युवराज ने ह्विस्की इस तरह बेतहाशा कभी न पी थी। उसे क्या बात खा रही थी वह बताने को तैयार न थी। और कपन हठ करके जान न सकता था। बल्कि हठ करनेसे वह भड़क सकती थी।"

"लेडी युवराज क्या हम मित्र हैं?"

"क्यों नहीं! मित्रता का हाथ मैंने बढ़ाया था।"

"मुझे याद है।"

"फिर क्यों सवाल करते हो?"

"इसलिए कि मैं आपकी परेशानी या उदासी का कारण नहीं जान सकता।"

"कपन डियर! तुम बहुत स्वीट हो लेकिन विश्वास करो ऐसी कोई विशेष बात नहीं। जीवन में कई बार छुटे बड़े मोड़ निराश कर देते हैं जिनसे हम बड़ी और छोटी दोनों प्रकार की आशाएं रखते हैं।"

"और आशा दिल टूटने का भय धारण कर लेती है।"

"ऐसा भी होता है !" सिमरन ने कहा और गहरा सांस लिया ।

"मेरा विचार था कि भावनाओं जैसी कोई वस्तु आपके जीवन में कोई महत्व नहीं रखती । आपकी नाड़ियों में रक्त की जगह आदेश वह रहा है ।"

"तुम ऐसा क्यों सोचते हो ।"

"आपने अभी गहरा सांस लिया था ।"

"ओह !" सिमरन ने आंखें दो चार न कीं । वल्कि धीरे से मुस्करा दी । जैसे उसकी वात पसन्द न थी फिर उसने गिलास उठाकर होंठों को लगाया । जव गिलास रख दिया तो धीरे से वोली, "मैं तुमसे इस वात की आशा न रखती थी ।"

"यदि ऐसी वात है तो मैं अपने शब्द वापस लेता हूं । और क्षमा मांगता हूं ।"

"यह दूसरी गलती कर रहे हो । मुंह से निकली वात वापिस नहीं हो सकती । और क्षमा मित्र नहीं मांगा करते और न ही मित्रता में शिकवा होता है" सिमरन ने कहा ।

कपल निरूत्तर हो गया । वह नहीं जानता था कि सिमरन भावुक ही नहीं वल्कि वहुत तीव्र वुद्धि है । सुन्दरता और वुद्धि दो विभिन्न वातें हैं लेकिन सिमरन का अस्तित्व इस वात का समर्थन कर रहा था ।

"चुप क्यों गए ?"

"चुप नहीं हुआ हूं ! निरुत्तर हो गया हूं, डरता हूं अव और गलती न कर वैठूं" कपल ने कहा ।

"तुम कोई गलती नहीं कर सकते । यदि मेरी नाड़ियों में रक्त की जगह हुक्म वह रहा होता तो तुम मेरे जीवन में क्यों आते । क्या तुम मेरा हुक्म हो" सिमरन ने वल खाकर पूछा ।

"नहीं !" कपल ने मुजरिम की तरह स्वीकार किया ।

"फिर क्यों ऐसी वात की ! ओह भगवान ! एक दिन में कितनी वातें आशा के विपरीत हो जाती हैं । मैं आज किसी और मूड में

थी।

"और मैं आशानुसार पूरा नहीं उतरा।"

अब सिमरन ने उत्तर न दिया।

"लेडी युवराज ! हो सकता है कि मैं एक मानव के नाते गलत बात कह गया हूं। लेकिन मेरा दिल बिल्कुल स्वच्छ और पवित्र है।"

"मैं जानती हूं ! तुम अकारण ही दिल छोटा न करो। शायद आज का दिन ही ऐसा है। जो हर बात बुरी लग रही है।"

"मैं वार्तालाप का विषय बदल सकता हूं।"

"जरूर।"

"कोठी में आप कोई परिवर्तन चाहती हैं।"

"नहीं ! मुझे तुम्हारी योग्यता पर पूरा भरोसा है और यह कोठी और इसके बँडरूम तुम्हारी स्मृति का जीवित प्रमाण रहेंगे।"

"क्या मैं याद आऊंगा ! आपने इस तरह कहा है जैसे आप कहीं दूर जा रही हैं। स्थिनि मेरे जीवन से दूर जा रही है।

"आखिर ! एक दिन तो जाना ही होगा। यह खेल कब तक जारी रह सकता है।"

"तो यह एक खेल है" अब कपल की बारी थी। सच जानना चाहते हो ?

"हां !"

"तो यह एक खेल है।"

"ओह !"

"कपल उदास होने की आवश्यकता नहीं। मैं आज बहुत उदास हूं। इसके विपरीत तुम्हें उदास नहीं देख सकती। लेकिन मेरा किस्सा बद है। इसको विस्मृत नहीं कर सकती।

सिमरन गिलास में तीसरा पैग डाल रही थी। कपल का अभी पहला पैग गिलास में पड़ा था।

"मेरा विचार है हम बातें न करें। केवल ह्विस्की पिएं!" कहकर कपल ने अपना गिलास उठाकर खाली कर दिया फिर अपना गिलास बनाने लगा।

"यह परामर्श बुरा नहीं।"

"उन्होंने चुप रह कर दो पैग खाली किए।"

"कपल!"

"यस लेडी युवराज।"

"मुझे अपने बाजुओं में समेट लो। आज मुझे शरण की आवश्यकता है। आज एक पत्ता भी खड़कता है तो मेरा दिल कांप उठता है।"

"और वह दोनों एक दूसरे के खोए हुए भागों को तलाश करने लगे। मोमबत्ती की लौ कांप रही थी।"

उनके शरीर पर कोई वस्त्र न था।

"आज जल्दी में नहीं हो तो हम इस बोतल को खत्म कर सकते हैं" सिमरन ने सलाह दी।

"मुझे स्वीकार है।"

"मैं जानती थी।"

और इसी समय एक रोशनी ने इनकी आंखें चुंधियां दीं।

"पहले तो समझ में न आया कि यह रोशनी किस वस्तु की थी। बाहर बादल न छाए थे। वर्षा के लक्षण न थे। फिर यह बिजली कैसे चमकी। यह आंखों को चुंधिया देने वाली रोशनी कहां से पैदा हुई थी।"

फिर एक आवाज ने इन्हें चौंका दिया। और साथ ही दूसरी बार रोशनी हुई।

"जल्दी। जल्दी उतारो।"

ओह तो कमरे में एक नहीं दो मर्द थे। एक के पास कैमरा था और वह फलैश लाईट से फोटो उतार रहा था।

इस दशा में फोटो।

"कपल" सिमरन चिल्लाई। यह व्यक्ति तो फोटो उतार रहा है। इससे कैमरा छीन लो।"

कपल की समझ मे सब कुछ आ गया था। वह चीते की भांति उछला और यह परवाह किए बिना कि वह नंगा है। कैमरा मैन पर झपटा। लेकिन इससे पूर्व कि वह उसे पकड़ सकता फलैश की तीसरी रोशनी ने उसकी आंखें चुंधिया दी।

"भाग लो बहुत हैं" आवाज आई। और वह जहां से आए थे। अन्धेरे में गायब हो गए।

कपल इनके पीछे हो भागा। लेकिन वह कोठी से निकल कर अन्धेरे में कहां गुम हो गए थे। वह न जानता था। फिर वह नंगा था इसलिए और पीछा न कर सकता था। इसलिए वह लौट आया।

"कौन हो सकता है" सिमरन ने साड़ी पहिनते हुए कहा।

"कह नही सकता। चौकीदार हरामजादा कहां मर गया।"

"खैर। अब क्या हो सकता है। वह जीत गए।"

"क्या आप इन्हें जानती हैं।"

"कपल तुम विवाहित नही हो। इसलिए तुम्हारी पत्नि ने यह काम नही किया।"

"तो क्या रायबहादुर का काम है?"

"नहीं। इन्हे मेरी सैक्स लाईफ से कोई सरोकार नहीं।"

"फिर?"

"यूनियन के आदमी। अब तुम कपड़े पहिन लो। वह लौटकर तो नही आएगे लेकिन हम अवसर नहीं दे सकते।"

कपल लिबास पहिनने लगा। वह बातें भी कर रहा था "आप कैसे कह सकती हैं कि यह यूनियन के आदमी हैं?"

"यह मेरा अनुमान है। मुझे ब्लैकमेल करने का और कोई तरीका न था इसलिए यह आसान और सुगम तरीका था।"

"वह क्योंकर ?"

"अब इन तस्वीरों के साथ वह मुझे इन लोगों में ब्लैकमेल कर सकते हैं जो मेरे विरोधी हैं।" लेकिन लेडी युवराज ?

"लेडी युवराज" सिमरन खिलखिला कर हंस पड़ी।

"इसमें हंसने की क्या बात है ?"

"तुम अब भी मुझे लेडी कह रहे हो ?"

"तो और क्या कहूं। आप आदि से अन्त तक लेडी हैं"

और यह फोटो भी इस दशा में लिए गए हैं।"

"इनसे क्या अन्तर पड़ता है।"

"अन्तर। केवल यही कि मेरी सारी साख, व्यक्तित्व और मान-मर्यादा मिट्टी में मिला दी गई है।"

"मैं नहीं मानता।"

"क्यों ?"

"इन्हें कैसे पता था कि आज आप यहां होगीं। और इस दशा में होगीं। मेरे और आपके सम्बन्ध कोई भी नहीं जानता। विश्वास कीजिए मैंने किसी को नहीं बताया।"

"मुझे विश्वास है।"

"फिर ऐसा क्यों सोचती हैं। क्या आपने किसी को बताय था।"

"नहीं।"

"और जो जानता था या जिसे शक था इस चौकीदार को मैंने नौकरी से अलग किया है।"

"और वह इनसे जा मिला।"

"नहीं। गोरखे ऐसे नहीं होते। गोरखे इस यूनियन के चक्क से बहुत दूर हैं। वह अभी बहुत स्वामीभक्त हैं। स्वामीभक्ती इनक ईष्ट है।"

"तुम फौजी गोरखों की बात कर रहे हो ?"

"हम यह बातें कार में कर सकते हैं।"

"क्या तुम मेरे साथ जा रहे हो?"

"मैं आपको ऐसी दशा मे अकेला कैसे छोड़ सकता हूं। खेद केवल इस बात का है कि वह हाथ से निकल गए। वरना मैं इनका खून कर देता।"

"और मेरी क्या पोजीशन होगी।"

"मैं साफ मुकर जाता कि आप यहां नही थीं।"

"धन्यवाद! कपल तुम सचमुच एक मित्र हो।"

"फिर क्या प्रोग्राम है?"

"मैं तो अभी तक कांप रही हूं। पहले एक डबल पैग मार लूं। ताकि नरवस सिस्टम ठीक हो जाए।"

"आप आराम से बोतल खत्म कर लो। मैंने अब कपडे पहन लिए हैं। अब यदि वह लौट आए तो मैं इन्हें कत्ल कर इस कोठी में दबा दूंगा" कपल ने जोश से कहा।

"नही कपल" सिमरन ने आधे से अधिक गिलास ह्विस्की से भरा।

"मेरे लिए भी डाल दीजिए।"

"बेहतर" कहकर सिमरन ने इसका गिलास भी आधा भर लिया। बोतल अभी एक तिहाई शेष थी।

"जब। आपने बताया नहीं तो इन्हे कैसे पता हुआ कि आप यहां होंगी।"

"यूनियन में एक नही सैकड़ों व्यक्ति होते हैं और वह मेरी निगरानी कर रहे होंगे। इनमे से कोई मेरा पीछा कर रहा होगा। वह जाकर फोटोग्राफर को बुला लाया। और जब तुम ने मजदूरों की छुट्टी की तो वह भांप गया होगा कि मैं यहा रहूंगी।"

"सारा दोष मेरा है।"

"बिल्कुल नहीं। ऐसा बिल्कुल मत सोचो। तुम बिल्कुल निर्दोष

हो। यह तो मेरा भाग्य था।"

"भाग्य—भाग्य—आप चिन्ता न करें। मैं हर कीमत पर यह फोटो और नैगेटिव खरीद लूंगा।"

"और वह किसी कीमत पर न बेचेंगे।"

"यह मुझ पर छोड़ दीजिए।"

"कल सुबह यह फोटो मेरे पति के हाथ में होंगे और मैं तस्वीर खींच सकती हूं। यह फोटो देख कर उस पर क्या गुजरेगी" कहकर सिमरन ने गिलास होंठों को लगाया और खाली करने लगी।

"लेडी युवराज मैं इन्हें तबाह कर सकता हूं।"

"नहीं कपल। तुम नाहक परेशान हो रहे हो। इन्हें जो मिला है। इसको वह किसी कीमत पर न खोएंगे। वह मुझे परास्त करना चाहते हैं। लेकिन वह कौन-सा उपन्यासकार है जिसने अपने उपन्यास में लिखा था कि मानव को नष्ट किया जा सकता है लेकिन उसे पराजित नहीं किया जा सकता। यह यूनियन और यह कम्युनिस्ट मुझे और मुझ जैसे लोगों को कभी पराजित नहीं कर सकता। मैं निज को बरबाद कर लूंगी—

"दत्त भारती" कपल ने उपन्यासकार का नाम बताया।

"लेकिन कपल कांप उठा। वह जानता था" ऐसी बात सिमरन पर पूरी उतरती थी। वह हठीली और विद्रोही प्रकृति की स्त्री थी। यह खाली गीदड़ भभकी न थी।

"आप ऐसे किसी भी संकल्प से बाज आए। मुझे विश्वास है है कि धन से यह काम हो सकता है। फोटोग्राफर यूनियन का आदमी नहीं हो सकता।"

"जरूर होगा।"

"यह आपका भ्रम है।"

"कपल डियर। मनुष्य को जानना चाहिए कि वह कब मार खा चुका है।"

"पराजय ! पराजय ! पराजय ! लेडी युवराज मैं आपसे सह-मत नहीं और न ही कायल हो सकता हूँ।"

"यह तुम्हारा स्नेह है। मित्रता का तकादा है। लेकिन मैं जो कह रही हूं वह भी ठीक है।" कहकर सिमरन ने गिलास खाली कर दिया। फिर भरने लगी।

कपल उसे टोकना चाहता था कि इतनी व्हिस्की ठीक नहीं। लेकिन वह जानता था कि सिमरन पर क्या गुजर रही थी। इसलिए वह स्वयं अपना गिलास खाली कर रहा था। व्हिस्की ने दिलेर बना डाला था। लेकिन यह दिलेरी किसी काम न आ सकती थी।

कमीने व्यक्ति से लड़ा नहीं जा सकता। और यूनियन का हर लीडर और वर्कर कमीना होता है। वह कमीने और ओछे हथियारों से अपनी मांगें मनवाते हैं।

"मैं आपके साथ जाऊंगा।"

"अब इसकी जरूरत नहीं। इन्हें जो चाहिए था मिल गया। फिर तुम अपनी कार कहां छोड़ोगे।"

"लेकिन।"

"नहीं कपल डालिंग। मैंने आज कहा था कि मेरी दाईं आंख फड़क रही है। और कुछ होने वाला है। इसलिए वह हो गया।"

कपल चुप होकर सोचने लगा।

कपल की चुप्पी सिमरन को अखर रही थी। आध घंटे वह इसी प्रकार की बहस करते रहे। और जब रवाना हुए तो सिमरन की कार आगे-आगे थी। और कपल अपनी कार में उसका पीछा कर रहा था।

तेरह

क़ोठी पूरी हो गई थी ।

लेकिन कपल ने किस वेदिली से इसे पूरा किया था यह केवल कपल ही जानता था ।

उसने अपना सामान तैयार कर लिया था । वह अमेरिका वापिस जा रहा था । उसे इस देश से घृणा हो गई थी ।

अन्तिम दिन वह एक बार कोठी देखने गया यह इसकी शिल्पकारी का एक प्रतीक था ।

उसने कार कोठी के बड़े दरवाजे के सामने पार्क की और नीचे उतरा ।

कोठी के मेन गेट पर एक तख्ती लटक रही थी ।

"वेचने के लिए ।"

युवराज को कोठी से घृणा हो गई थी । इसलिए उन्होंने इसे वेचने का निर्णय कर लिया था ।

चौकीदार ने दरवाजा खोल दिया "क्या आप कोठी खरीदना चाहते हैं ?" साथ ही उसने प्रश्न कर डाला ।

"हां । कपल को झूठ बोलना पड़ा । वरना वह कोठी न दिखाता ।"

"आइए मेरे साथ" कहकर वह आगे बढ़ गया।

"बड़ा हाल। और इसके बाद पहला बैडरूम।"

वह बैडरूम में खड़ा हो गया। और अतीत उसके मस्तिष्क में उजागर हो गया। इसी बैडरूम में पहली बार सिमरन ने निःसंकोचता से काम लिया था।

उस दिन उसने टैनिस खेलने की पोशाक पहन रखी थी। और वह टैनिस खेलकर आ रही थी। इस लिबास मे उसकी जांघें आधी नंगी थीं। सुडौल और गदराई जांघें। और कमीज का गरेबान चाक था। इसके भीतर से उसके उभार दृष्टिगोचर हो रहे थे।

"मैं तुम्हें बड़ी देर से देख रही थी। और तुम विचारधारा में इतने तल्लीन थे जैसे एक शताब्दि से सोच में डूबे हो" सिमरन के उस दिन के कहे शब्द उसके मस्तिष्क में गूंजने लगे। उस दिन सिमरन के प्रत्येक संकेत और कटाक्ष को वह समझ न सका था। इसलिए कि वह आत्महीनता का शिकार था।

सिमरन जिसकी हंसी एक संगीत थी। जिसकी आवाज मे एक गीत था। जिसकी बातें मधुर बोल थे।

और अब सिमरन इस संसार में न थी।

सिमरन कहां खो गई थी।

वह बैडरूम से निकलकर दूसरे बैडरूम में चला गया। जिसका नाम उसने नम्बर दो रखा था। उसने बताया था कि वार्ड रोब किस प्रकार के होंगे। इनका रंग क्या होगा। लकड़ी कौन-सी होगी। और इस वार्डरोब में क्या कुछ होगा।

"सूट। सलैक्स, बैल बाटम इत्यादि" सिमरन ने प्रश्न किया।

"जी नहीं। वह बैडरूम नम्बर एक मे होगा" कंवल ने उत्तर दिया था।

"और यहां?"

"यहां केवल साड़ियां होंगी।"

"चोली, घाघरा, यूरुपियन स्टाइल के फ्राक ओडियन, ईगल गाऊन। किस्म के लिवास बैडरूम तीन में होंगे।"

"खूब" सिमरन ने दाद दी थी। और Negligee।

"वह आप हर बैडरूम में पहिन सकती हैं।"

"तुम जानते हो कि मैं Negligee के नीचे कुछ नहीं पहनती।"

"मैं नहीं जानता था" कपल ने झेंपकर कहा।

"खैर, तुम इसे कल्पना में जान सकते हो" सिमरन ने चालाक मुस्कान के साथ कहा।

"और फिर यही बैडरूम था जहां पहली वार सिमरन ने स्वयं को अपर्ण किया था। और कपल ने उसे स्वीकार किया था।"

□

"युवराज साहिव इस दरवाजे से दाखिल होंगे" सिमरन ने मुंह विगाड़ कर कहा था।

फिर क्या हुआ था।

फिर तूफान गुजरा था। और जव गुजर गया था तो कपल ने कहा था।

"लेडी युवराज। आओ कपड़े पहिन लें।"

"लेडी" सिमरन खिलखिला कर हंस पड़ी थी।

"सचमुच मैं इस समय एक लेडी ही नजर आ रही हूं।"

"लेडी हर हालत में लेडी रहती है।"

"क्यों नहीं। विशेष रूप से इस वातावरण में, इस नंगे फर्श पर। वल्कि कच्चे फर्श पर, सफेद अच्छे लिवास पर मिट्टी और सिमेंट के धव्वे तो मेरी लेडी होने का प्रमाण दे रहे हैं।"

"हूं।"

"जानते हो मैं जीवन में पहली वार इस तरह जमीन पर लेटी हूं।"

और अव यह आवाज, यह कहकहे, यह हंसी, यह ठठा, यह

मजाक, यह तीव्र व्यंग समाप्त हो गए थे।

कपल को आभास हुआ कि सिमरन अभी जीवित थी। वह मरी न थी। उसे कोई नहीं मार सकता। वह मर नहीं सकती।

वह अभी-अभी कार में आएगी। वही टेनिस खेलने का लिबास होगा। वही सफेद सुडौल जांघें होंगी। वही आमंत्रण होगा।

लेकिन अब यह कैसे सम्भव था।

लेडी सिमरन के सुन्दर शरीर को अग्नि ने राख बना डाला था। और कौन विश्वास कर सकता था कि इतना जीवन रखने वाली सिमरन इस तरह खत्म हो सकती थी।

□

कपल इस बेडरूम से निकलकर तीसरे बेडरूम में चला गया। शायद सिमरन इसकी वहां प्रतीक्षा कर रही हो।

यह वह बेडरूम था। जहां सिमरन अन्तिम बार मिली थी। उस दिन वह बोतल साथ लाई थी। और बेहद परेशान थी।

"आज मेरी दाईं आंख फड़क रही है आज कुछ होने वाला है।"

"यह भ्रम है।"

लेकिन वह भ्रम सत्य बन गया। फोटोग्राफर इनकी तस्वीर उतार रहा था।

एक के बाद दूसरी।

और इनकी समझ में कुछ न आ रहा था।

"ब्लैकमेल" सिमरन ने क्रोध में होंठ काटे थे।

"मैं इन्हें खरीद सकता हूं" कपल ने कहा था।

"नहीं। वह बिक नहीं सकते।"

□

फिर।

"वह कौन-सा उपन्यासकार है जिसने लिखा है कि मनुष्य को मिटाया जा सकता है लेकिन उसे पराजित नहीं किया जा सकता"

सिमरन ने पूछा था।

"दत्त भारती" कपल ने उत्तर दिया था।

□

और इस विद्रोही और हठीली नारी ने उस रात निज को मिट डाला था। उसने अपने रिवालवर की गोली कनपटी पर मार दं थी। और संसार से चली गई।

कम्युनिस्ट और यूनियन उसे परास्त न कर सके।

□

और अब युवराज को इस कोठी से घृणा हो गई थी। और वः इस कोठी को बेच रहे थे। यह कोठी सिमरन के लिए बनाई गई थी और सिमरन अब इस संसार में न थी।

अब केवल एक भ्रम था। इन खाली कमरों में सिमरन न थी लेकिन सिमरन रह रही थी। उसने तीनों बैडरूम इस्तेमाल किए थे यदि कोठी उसके लिए बनाई गई थी तो उसने मरने से पहले कोठ के बैडरूम अपनी इच्छा से प्रयोग किए थे।

□

कपल एक शिल्पकार था। वह अमरीका से शिल्पकारी के अनोखे नमूने सीखकर आया था। यह कोठी उसने जी जान से बनाई थी। और अपनी योग्यता का सर्वोत्तम नमूना प्रस्तुत किया था।

लेकिन—।

अब वह वापिस अमरीका जा रहा था। इसका इस देश से दिल उचाट हो गया था। उसे इस देश से घृणा हो गई थी। जहां यूनियन और कम्युनिस्ट ओच्छे और कमीने हथियार प्रयोग करते थे।

"आज वह वापिस अमरीका जा रहा था।"

वह भारी और थके कदमों से कोठी से बाहर आ गया।

चौकीदार उसके करीब आ गया।

"साहिब। कोठी पसन्द आई।"

"हां।" उसने भारी स्वर में कहा।

"तो आप खरीद रहे हैं।"

"शायद"

कपल को इन प्रश्नों से उलझन हो रही थी वह अपनी कार की ओर बढ़ गया। यह कार एक दिन सिमरन खरीदना चाहती थी। हर कीमत पर। और वह इसे बेचना न चाहता था।

आज सिमरन इस संसार में न थी। फिर कार वह अपने मित्र गोपाल को उपहार स्वरूप देकर जा रहा था। क्योंकि सिमरन ने कार उपहार में लेने से इन्कार कर दिया था।

कपल ने कोठी पर अन्तिम दृष्टि डाली। उसने ठंडा सांस लिया और इसकी आखें सजल हो गई थीं।

वह एक शिल्पकार बनकर आया था। लेकिन इस देश में उसने केवल एक मकान बनाया—और साथ ही एक घर उजाड़ दिया।

एक मकान बनाया।

और।

एक घर उजाड़ा।

वह बोझल कदमों से कार की ओर बढ़ गया।